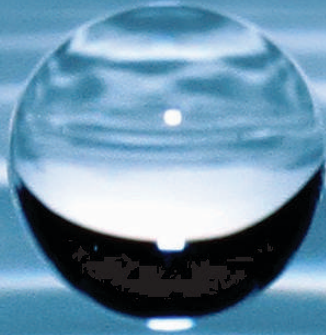


पांचवां अंक
2023-24

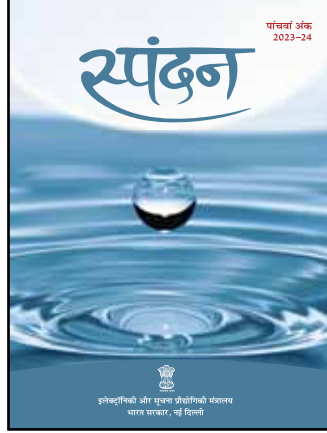
संपन्न



सत्यमेव जयते

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

स्पंदन



इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की पत्रिका

प्रधान संपादक

श्री भुवनेश कुमार, आई.ए.एस.

अपर सचिव

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

संपादक

श्री अनिल कुमार पीपल

वरिष्ठ निदेशक एवं ग्रुप प्रमुख (रा.भा.)

सह-संपादक

श्री जगदीश गोकलानी

उप सचिव (रा.भा.)

संपादन सहयोग

श्रीमती रचना नेमा

सहायक निदेशक (रा.भा.)

श्री पदम सिंह

निजी सचिव

श्रीमती ममता

वरिष्ठ अनुवादक

(पत्रिका में संकलित लेखों, कविताओं, कहानियों और अन्य रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, संपादक मण्डल का इनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

अश्विनी वैष्णव
Ashwini Vaishnav



रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और
सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
भारत सरकार
Minister of Railways,
Communications & Electronics and
Information Technology
Government of India



संदेश

यह हर्ष का विषय है कि इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय 'स्पंदन' पत्रिका के पांचवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इसके माध्यम से मंत्रालय के कर्मचारियों की सृजनात्मकता और प्रतिभा को उभरकर सामने आने का अवसर प्राप्त होगा। इस पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को अवश्य ही प्रोत्साहन मिलेगा।

'स्पंदन पत्रिका' के नवीन अंक के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

अश्विनी
1.5.23
(अश्विनी वैष्णव)

RAJEEV CHANDRASEKHAR
राजीव चंद्रशेखर



Minister of State
Electronics & Information Technology,
Skill Development and Entrepreneurship
Government of India

राज्य मंत्री
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी,
कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय
भारत सरकार

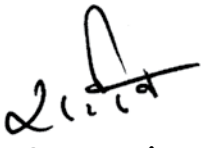


संदेश

हमारा यह विशाल देश अत्यंत विविधतापूर्ण है तथा विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और परम्पराओं का संगम है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक यहां सैकड़ों भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं और हिन्दी इन बोलियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। हिन्दी का कोई एक सीमित और पारिभाषित क्षेत्र नहीं है, इसका जनाधार व्यापक है तथा यह भारत में बड़ी संख्या में बोली और समझी जाती है। यह भारत और भारत की सामासिक संस्कृति की भाषा रही है।

संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया था। राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना पर आधारित है तथा उत्सावर्धक माहौल बनाकर सभी कर्मचारियों को मूल रूप से हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। हिन्दी एक समृद्धशाली भाषा है तथा इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना निहित है। हम सभी का यह दायित्व है कि सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें।

हिन्दी में पत्रिकाओं के प्रकाशन से जहां एक ओर राजभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार होता है, वहीं दूसरी ओर रचनाकारों की मौलिक प्रतिभा भी निखरकर सामने आती है। 'स्पंदन पत्रिका' के पांचवें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है तथा इस ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं व्यक्त करता हूं।


(राजीव चंद्रशेखर)



कार्यालय : इलेक्ट्रॉनिक्स निकेतन, 6, सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली-110003, दूरभाष : 011-24368757-58 फैक्स : 011-24360958
Office : Electronics Niketan , 6, C.G.O. Complex, New Delhi-110003, Tel. : 011-24368757-58, Fax : 011-24360958
E-mail : rc@gov.in, Website : www.meity.gov.in

 @rajeev.goi  @Rajeev_Gol  @rajeev_chandrasekhar  /RajeevChandrasekharMP  @rajeev_chandrasekhar  www.rajeev.in

अलकेश कुमार शर्मा, आई.ए.एस.
सचिव

Alkesh Kumar Sharma, I.A.S.
Secretary



इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Electronics &
Information Technology (MeitY)
Government of India




संदेश

भारतीय संविधान के अंतर्गत हिन्दी को देश की सामासिक संस्कृति की वाहक के रूप में स्वीकार किए जाने के कारण इसका स्वरूप व्यापक है। हिन्दी की प्रकृति प्रारंभ से ही सार्वदेशिक रही है। हिन्दी सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में भी एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है।

हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप अपने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा इसके लिए अनुकूल वातावरण तैयार करें। इस कार्य में हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अलावा, ये पत्रिकाएं कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए भी माध्यम प्रदान करती हैं।

'स्पंदन' पत्रिका के पांचवें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। यह राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निश्चित ही एक महत्वपूर्ण कदम है। 'स्पंदन' का यह अंक भी पहले के चार अंकों की भांति रोचक, ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण है। इस पत्रिका में तकनीकी लेखों, सामान्य लेखों, कविताओं, विचारों आदि के माध्यम से सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को मेरी ओर से बधाई और हार्दिक शुभकामनाएं।


(अलकेश कुमार शर्मा)



प्रधान संपादक की कलम से

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है। देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली, लिखी और समझी जाने वाली तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान की सूचक हिन्दी को संविधान निर्माताओं द्वारा राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली माध्यम है, जिसमें जनमानस की संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य है। हिन्दी जन-जन की भाषा बन चुकी है और अब यह केवल राजभाषा एवं संपर्क भाषा ही नहीं है, बल्कि यह विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।



मंत्रालय की हिन्दी पत्रिका 'स्पंदन' का यह अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हालांकि इस अंक के प्रकाशन में कुछ विलंब हुआ है, लेकिन भविष्य में हम इस पत्रिका का समय पर प्रकाशन करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इससे न केवल राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि कार्मिकों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा सभी के समक्ष रखने का सुअवसर भी प्राप्त होता है।

विविधतापूर्ण ज्ञानवर्धक विषयों को समाविष्ट व संपादित करते हुए इस अंक को अंतिम रूप दिया गया है। इस अंक में सामान्य लेखों और कविताओं के अलावा सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित तकनीकी लेखों को भी शामिल किया गया है। साइबर सुरक्षा जागरूकता से संबंधित टिप्स भी इस अंक में शामिल किए गए हैं, जिससे यह अंक उपयोगी बन पाया है। आशा है 'स्पंदन' का यह अंक आपको पसंद आएगा। 'स्पंदन' के आगामी अंकों को और अधिक प्रभावी, पठनीय, रुचिकर और बेहतर बनाने के लिए हम कृतसंकल्प हैं। आपके अमूल्य सुझावों और मनोभावों का हार्दिक स्वागत है।

भुवनेश

भुवनेश कुमार

अपर सचिव

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

संपादक की कलम से

हिन्दी भाषा भारतीय सभ्यता, विचारधारा और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। भारतवर्ष में अधिकांशत बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है, जो कि अनेक भारतीयों की मातृभाषा भी है। हिन्दी का एक मातृभाषा के स्वरूप में उपयोग, हमें अपने मौलिक विचारों एवं भावनाओं को प्राकृतिक रूप से प्रकट करने का अति-सरल अवसर देता है।



आइए हम प्रण लें, कि हम मिलजुल कर अपनी राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कर गर्व महसूस करें।

स्पंदन पत्रिका के अंक में उपलब्ध सामग्री समावेश इस कार्यालय के कर्मियों द्वारा उठाया हुआ, राजभाषा की उन्नति हेतु एक सराहनीय कदम है। आशा है, आप इस पत्रिका पठन से लाभान्वित होंगे।

Handwritten signature of Anil Kumar Sheela in black ink.

अनिल कुमार शीपल

वैज्ञानिक 'जी' एवं ग्रुप प्रमुख (रा.भा.)
इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

विषय सूची

1.	हिन्दी भाषा विद्वानों की दृष्टि में	अनु आहूजा	1
2.	राजभाषा के उपयोग हेतु विभिन्न तकनीक	अनिल कुमार पीपल	2
3.	हिन्दी व्यथा—कथा	पंकज कुमार सिंह	6
4.	धैर्य से विकास की ओर	श्वेता शर्मा	8
5.	अंतर्मन के द्वन्द/ऑफिस की खिड़की	अखिलेश सिलस्वाल	9
6.	खोज	अनिल कुमार पीपल	10
7.	क्यूआर कोड	मनीष कुमार	11
8.	वाट्सएप यूनिवर्सिटी	अरविन्द शर्मा	13
9.	कविता पढ़ना आसान नहीं है	धर्मेन्द्र मिश्रा	14
10.	क्वांटम कम्प्यूटिंग	सुमित शर्मा	15
11.	तकनीकी क्षणिकाएं	डॉ. प्रियंका जैन	19
12.	भारत में वर्तमान ई—गवर्नेंस गतिविधियाँ (एमईआईटीवाई परिप्रेक्ष्य)	डॉ. संतोष कुमार पाण्डेय	21
13.	मेरा सुनहरा गांव	उमेश कुमार	25
14.	कर्ज/हिन्दी महिमा	अभिषेक कुमार मिश्र	27
15.	वेब 3.0 भारत को बदल रहा है	जागृति तिवारी	28
16.	हाँ, वो एक नारी है	प्रियंका मोंडे	32
17.	वर्चुअल रियलिटी	सुश्री मनिषा पानसरे	33
18.	स्त्री एवं पुरुष एक दूसरे के अनुपूरक	सविता जैन	35
19.	सरकारी कार्यस्थल में मानसिक स्वास्थ्य	संदीप	36

20	गंगा स्नान	अश्वनी कुमार तिवारी	38
21	भारत @100: नागरिक चार्टर/राजपत्र/ विशेषाधिकार	एम. शशिकुमार	39
22	गुलाबी मनुहार	चंदन सेन	42
23	मस्तिष्क की जिजीविषा	डॉ. प्रियंका जैन	43
24.	धरती के साथ आसमान भी	शिल्पा ओसवाल	47
25.	पसीना बहाओ वजन घटाओ (हकीकत या कल्पना)	पीताम्बर दत्त	48
26.	औषधीय पौधे	विपुल रस्तोगी	50
27.	भारत की बुलंदी	प्रशांत रामटेक	54
28.	पदोन्नति मिज़ोरम में	नरेश	55
29.	मनुष्य को मशीन बनाता विकास	पं. प्रभाकर पांडेय	56
30.	मेरे शब्द मुझसे कहते हैं....	अश्वनी कुमार तिवारी	58
31.	राष्ट्रीय एकता में साहित्य का योगदान	चिरंजीवी पाण्डेय	60
32.	खिलौने	विमल कुमार शर्मा	62
33.	एसटीपीआई बना भारतीय स्टार्ट-अप का गंतव्य	संगीता हेमराजानी	65
34.	अनुवाद- सांद्रेम्बी और चैश्रा (मणिपुरी लोक कथा)	एन अमित कुमार सिंघा	68
35.	भला आदमी	राजेंद्र सिंह भंडारी	70
36.	विराम चिह्न की आत्मकहानी, सुनें उसी की जुबानी	प्रभाकर पांडेय	73
37.	सशक्त महिला	सोनल कमल	75

38.	और हम सोच रहे होते हैं.....	अरविन्द शर्मा	76
39.	“शिवा साधना” नाटक में चित्रित छत्रपति शिवाजी की जीवनी	डॉ. कविराजू	78
40.	यह नारी सब पे भारी है	शुभम आडवले	82
41.	चिकित्सा विज्ञान में शाखाओं की बढ़ती संख्या	अजय कुलकर्णी	83
42.	मेटावर्स : इंटरनेट का भविष्य	अंजलि जैन	84
43.	राह दिखाएँ खुद को	शिवनाथ कुमार	87

हिन्दी भाषा विद्वानों की दृष्टि में



अनु आहूजा

“राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।”

— महात्मा गांधी

“राष्ट्रभाषा के बिना आज़ादी बेकार है।”

— अवनींद्र कुमार विद्यालंकार

“राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी ही जोड़ सकती है।”

— बालकृष्ण शर्मा नवीन

“शिक्षा के प्रसार के लिए नागरी लिपि का सर्वत्र प्रचार आवश्यक है।”

— शिवप्रसाद सितारेहिंद

“देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।”

— रविशंकर शुक्ल

“हमारी नागरी, दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।”

— राहुल सांकृत्यायन

“उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिन्दी में वार्तालाप करूँगा।”

— शारदाचरण मित्र

“हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।”

— डॉ राजेंद्र प्रसाद

“जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।”

— डॉ राजेंद्र प्रसाद

“हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।”

— कमलापति त्रिपाठी

“हिन्दी भाषा को भारतीय जनता तथा संपूर्ण मानवता के लिए बहुत बड़ा उत्तरदायित्व सँभालना है।”

— सुनीति कुमार चाटुर्ज्या





अनिल कुमार पीपल

राजभाषा के उपयोग हेतु विभिन्न तकनीक

भाषाएं आम जनता के बीच संवाद का माध्यम बनती हैं और विकसित होने वाले रिश्तों को समयान्तर में मजबूत बनाती हैं, जिससे देश की राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है। इस दृष्टिकोण से संपर्क भाषा होने के नाते हिन्दी का हमारे देश में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह हमारी राष्ट्रीय भाषा होने के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को एकत्रित करने और लोगों के बीच संवाद को सुगम बनाने का कार्य करती रही है। हिन्दी भाषा का उपयोग व्यापार, शिक्षा, सरकारी कार्य, संचार और मनोरंजन के क्षेत्र में होता रहा है। यह अपने देश की भूमिका और संस्कृति को समझने और साझा करने का माध्यम भी रही है। हिन्दी व्यापक रूप से भारतीय सभ्यता की प्रतीक है। हिन्दी को अपनी देशी भाषा मानने और प्रयोग करने में गर्व महसूस करना चाहिए।

सूचना और संपर्क के युग में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति ने सूचना स्रोतों के ऐसे कई विकल्प उपलब्ध कराए हैं जिनके इस्तेमाल से अन्य भाषाओं की संरचना से अनजान होने पर भी विश्व में आपसी संवाद स्थापित किये जा सकते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की सहायता से विकसित किये जा रहे टूल्स का उपयोग

करके हम हिन्दी भाषा के प्रसार में सुधार कर सकते हैं। एआई टूल्स भाषा अनुवाद, शब्दकोश, वाक्य गठन, वाक्य संशोधन, वर्तनी सुधार और भाषा संप्रदायों का समझने जैसे कार्यों को सहज बना सकते हैं।

राजभाषा को बढ़ावा देने वाले टूल्स एवं सॉफ्टवेयर की संक्षिप्त एवं नवीनतम जानकारी यहां प्रस्तुत की जा रही है।

(क) लिप्यंतरण

हिन्दी भाषा के लिप्यंतरण टूल्स आपको एक लिपि या वर्णमाला से दूसरे में लिखे गए टेक्स्ट को बिना शब्दों के अर्थ को बदले हुए परिवर्तित करने की अनुमति देते हैं। यहां कुछ हिन्दी लिप्यंतरण संबंधी टूल्स के बारे में जानकारी दी गई है:

(i) भाषिनी: लिप्यंतरण टूल

लिप्यंतरण के माध्यम से हिन्दी में कार्य करने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें <https://anuvaad.bhashini.gov.in/>



लिप्यंतरण का उपयोग करते समय, शब्द को फोनेटिक रूप से लैटिन वर्णों में लिखें और जैसे ही आप टाइप करते हैं, आपको शब्दों के चुनाव की एक सूची दिखाई देगी जो फोनेटिक वर्तनी से मेल खाती है। आप सही शब्द का चुनाव कर सकते हैं। प्रक्रिया इस प्रकार है।

- पहले शब्द का चयन करने के लिए स्पेस या इंटर दबाएँ,
- एक शब्द पर क्लिक करें,
- शब्द के आगे दी गई संख्या पर क्लिक करें,

अप/डाउन ऐरो 'की' की सहायता से शब्दों की सूची नेविगेट करें। पेज अप/डाउन 'की' के साथ पृष्ठ को फ्लिप कर हाइलाइट किए गए शब्द का चयन करने के लिए स्पेस या एंटर 'की' दबाएँ।

(ii) गूगल: लिप्यंतरण टूल: (वेब और मोबाइल संस्करण) (<https://www.google.com/intl/hi/inputtools/try/>)

गूगल इनपुट टूल्स हिन्दी के लिए एक ऑनलाइन लिप्यंतरण टूल प्रदान करता है। इसे उपयोग करके आप अंग्रेजी में लिख सकते हैं और यह टेक्स्ट को हिन्दी लिपि में परिवर्तित कर सकते हैं।



(iii) क्विलपैड: लिप्यंतरण टूल: (वेब और मोबाइल संस्करण) (<https://www.quillpad.in/index.html>)

क्विलपैड एक ऑनलाइन हिन्दी लिप्यंतरण टूल है जो आपको अंग्रेजी में लिखने और इसे हिन्दी लिपि में परिवर्तित करने की सुविधा प्रदान करता है। इसका

इंटरफेस यूज़र फ्रेंडली है और कई भारतीय भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है।

(iv) माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज: लिप्यंतरण टूल (वेब और मोबाइल संस्करण) (<https://www.microsoft.com/en-in/bhashaindia/downloads.aspx>)

यह हिन्दी और अन्य कई भारतीय भाषाओं के लिए एक लिप्यंतरण टूल है। यूज़र इसका ऑनलाइन या डेस्कटॉप संस्करण डाउनलोड करके इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसमें आप अंग्रेजी में टाइप कर सकते हैं और यह टेक्स्ट को हिन्दी लिपि में स्वचालित रूप से परिवर्तित करता है।

(ख) भाषण से पाठ (स्पीच-टू-टेक्स्ट)

हिन्दी भाषा से जुड़े कुछ टूल्स/वेबसाइट के उदाहरण दिए गए हैं जो स्पीच-टू-टेक्स्ट टूल और सॉफ्टवेयर की जानकारी प्रदान करते हैं:

(i) भाषिनी: स्पीच-टू-टेक्स्ट

स्पीच-टू-टेक्स्ट के लिए दी गई लिंक पर विज़िट करें। (<https://anuvaad.bhashini.gov.in/>)

यदि यूज़र के पास माइक्रोफ़ोन है तो हिन्दी में पाठ लिखने के लिए स्पीच-टू-टेक्स्ट सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा सकता है। कई आधुनिक उपकरणों और ऑपरेटिंग सिस्टम में बिल्ट-इन स्पीच रिकग्निशन क्षमताएं हैं जो उपयोगकर्ताओं को हिन्दी में टेक्स्ट डिक्टेट करने की अनुमति देती हैं।

(ii) गूगल: स्पीच-टू-टेक्स्ट (<https://cloud.google.com/speech-to-text>)

गूगल एक बेहद प्रभावशाली स्पीच-टू-टेक्स्ट एपीआई प्रदान करता है जो हिन्दी सहित कई भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है। आप इस एपीआई को अपने

एप्लिकेशन या सेवाओं में सम्मिलित करके हिन्दी में बोले गए शब्दों को लिखित पाठ में परिवर्तित कर सकते हैं। जीमेल में उपलब्ध गूगल ड्राइव एवं गूगल ट्रांसलेशन में भी स्पीच-टू-टेक्स्ट की सुविधा इस्तेमाल करने के लिए उपलब्ध है।

(iii) माइक्रोसॉफ्ट एज़्योर: स्पीच-टू-टेक्स्ट
(<https://azure.microsoft.com/en-in/products/cognitive-services/speech-to-text>)

माइक्रोसॉफ्ट एज़्योर स्पीच-टू-टेक्स्ट टूल है जो हिन्दी में भी कार्य करने में सक्षम है। इसकी सहायता से आप हिन्दी भाषा में बोली गई ऑडियो को पाठ रूप में बदल सकते हैं, जो अनुवाद, ट्रांसक्रिप्शन, वॉयस कमांड्स और अन्य एप्लिकेशन के लिए उपयोगी हो सकता है।

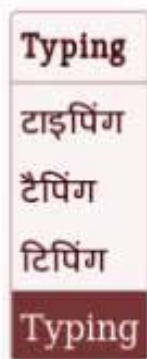
(ग) हिन्दी: टाइपिंग टूल

ये टूल आपको हिन्दी भाषा में टाइप करने में सहायता प्रदान करते हैं।

(i) फोनेटिक कीबोर्ड टाइपिंग (अंग्रेजी शब्द से हिन्दी शब्द)

हिन्दी इंडिक इनपुट टूल कैसे इनस्टॉल करें

लिंक (<https://www.microsoft.com/en-in/bhashaindia/downloads.aspx>) पर जाएं अथवा क्लिक करें और हिन्दी **Hindi** इंडिक टूल डाउनलोड करें। हिन्दी इंडिक इनपुट भारतीय भाषाओं जैसे बांग्ला, तमिल, हिन्दी, मराठी आदि के साथ कार्य करने में सक्षम है। फ़ाइल का उपयुक्त संस्करण डाउनलोड करें और इंस्टॉल करें।



यदि उपयोगकर्ता टाइपिंग के बारे में जागरूक नहीं है या नहीं जानता है, तो उपयोगकर्ता फोनेटिक टाइपिंग के साथ आसानी से टाइपिंग कर सकता है। दिए गए टेक्स्ट फील्ड में किसी भी शब्द को टाइप करने और स्पेस की या एंटर की को दबाने पर शब्द स्वचालित रूप से छवि में दिखाए गए अनुसार फोनेटिक रूप से समान हिन्दी शब्द में परिवर्तित हो जाता है।

(ii) वर्चुअल कीबोर्ड के साथ इंस्क्रिप्ट: टाइपिंग टूल

यदि यूज़र टाइपिंग के बारे में जानकार हैं तो इनस्क्रिप्ट टाइपिंग के साथ टाइप कर सकते हैं। यूज़र की मदद के लिए, इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड फ्लाय लेआउट को सक्षम किया जा सकता है और शिफ्ट और बिना शिफ्ट कुंजी के कीबोर्ड को आसानी से चेक किया जा सकता है। हिन्दी में टाइप करने का यह सबसे आसान तरीका है, क्योंकि आप अक्षर वैसे ही टाइप कर सकते हैं जैसे वे कीबोर्ड पर दिखाई देते हैं। जैसा कि इमेज में हिन्दी कीबोर्ड दिखाया गया है।



विंडोज 10 और उससे ऊपर के वर्जन में फोनेटिक टाइपिंग और इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड कैसे इंस्टॉल करें।

स्टेप 1: सेटिंग में 'टाइम एंड लैंग्वेज' पर जाएं।

चरण 2: फिर, नेविगेशन मेनू से 'भाषा' चुनें।

चरण 3: अब, '+ आइकन' पर क्लिक करें।

चरण 4: खोज बार में भाषा का नाम 'हिन्दी' टाइप करें और पसंदीदा इंडिक भाषा जोड़ें (खोज बॉक्स में चयन करके और इसे चुनकर)।

चरण 5: 'अगला' बटन पर क्लिक करें।

चरण 6: डिवाइस पर 'इंस्टॉल' पर टैप करें, जो फिर भाषा पृष्ठ पर वापस आ जाएगा।

चरण 7: अब, भाषा पृष्ठ पर जाएँ।

चरण 8: भाषा का चयन करें और फिर भाषा विकल्प पृष्ठ पर जाने के लिए विकल्प बटन पर क्लिक करें।

चरण 9: कीबोर्ड जोड़ने के लिए '+ आइकन' पर क्लिक करें और फिर कीबोर्ड का प्रकार चुनें।

चरण 10: फिर, टास्कबार पर इनपुट इंडिकेटर पर क्लिक करके उपयोगकर्ता की आवश्यकता के अनुसार इस्क्रिप्ट कीबोर्ड/फोनेटिक को सक्षम करें (या 'विंडोज की + स्पेस' दबाएं) और इंडिक इस्क्रिप्ट कीबोर्ड/फोनेटिक कीबोर्ड का चयन करें।

(iii) गूगल फ़ोनेटिक और इनस्क्रिप्ट: टाइपिंग टूल (<https://www.google.com/intl/hi/inputtools/try/>)

यह एक फ्री सॉफ्टवेयर है जिसे यूज़र अपने पीसी पर डाउनलोड और इंस्टॉल कर सकते हैं। यह यूज़र को रोमन लिपि (जिसे हिंग्लिश भी कहा जाता है) का उपयोग करके हिन्दी में टाइप करने की अनुमति देता है, जो उन लोगों के लिए बहुत आसान है जो देवनागरी लिपि से परिचित नहीं हैं। उपयोगकर्ता गूगल इनपुट उपकरण वेबसाइट से गूगल इनपुट टूल से डाउनलोड कर सकते हैं।

(iv) प्रमुख: टाइपिंग टूल: (<https://www.pramukhime.com/type/hindi>)

प्रमुख टाइपिंग टूल एक महत्वपूर्ण साधन है जो लोगों को आसानी से और दक्षता से टाइपिंग करने में मदद करता है। यह टूल सटीकता, गति और प्रभावशाली कार्यक्षमता के साथ लिखने की क्षमता को बढ़ाता है। प्रमुख टाइपिंग टूल उपयोगकर्ताओं को अलग-अलग भाषाओं में टाइप करने का विकल्प भी प्रदान करता है,

जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल, गुजराती, और अन्य भाषाएं शामिल हैं।

(घ) भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर

भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर एक तकनीकी उपकरण है जो विभिन्न भाषाओं के बीच शब्दों, वाक्यों और पाठों के अनुवाद का कार्य करता है। यह सॉफ्टवेयर मानव भाषा के अनुवाद में सहायता करता है और भाषा संचार को सरल बनाता है। भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर में अल्गोरिदम और मशीन लर्निंग का उपयोग किया जाता है जो वाक्यों और भाषा के नियमों को समझने और प्रशिक्षित करने की क्षमता विकसित करते हैं।

यहां हिन्दी भाषा में कार्य करने वाले कुछ भाषा अनुवाद टूल और सॉफ्टवेयर के उदाहरण दिये गये हैं

(i) भाषिनी: अनुवाद

उपयोगकर्ता अनुवाद टूल का उपयोग करने के लिए इस लिंक को देख सकते हैं <https://anuvaad.bhashini.gov.in/>

(ii) गूगल : अनुवाद (<https://translate.google.co.in/>)

एक प्रसिद्ध भाषा अनुवाद टूल है जो हिन्दी भाषा में कार्य करने में सक्षम है। आप इसे वेबसाइट या मोबाइल ऐप के माध्यम से उपयोग करके टेक्स्ट, वेबपेज, दस्तावेज़ और अन्य सामग्री का अनुवाद कर सकते हैं।

(iii) माइक्रोसॉफ्ट: अनुवादक (<https://www.bing.com/translator>)

एक लोकप्रिय भाषा अनुवाद टूल है जो हिन्दी भाषा को सपोर्ट करता है। इसे आप वेबसाइट या मोबाइल ऐप के माध्यम से उपयोग करके टेक्स्ट, दस्तावेज़, वीडियो और वॉयस संदेशों का अनुवाद कर सकते हैं।





पंकज कुमार सिंह

हिन्दी व्यथा-कथा

संविधान की राजभाषा हिन्दी
जन जन की आम- भाषा हिन्दी
विभिन्न बोली और भाषाओं को
आपस में जोड़ पाती हिन्दी
फिर भी हिन्दी परेशान क्यों ?
मिलता नहीं उचित सम्मान क्यों ?

ना तो कम हुए हिन्दी भाषी
ना सुनने वाले कभी हुए अवसादी
स्रोतों की कमी नहीं अब
कवि लेखक भी भरमार हुए
पर जब सब कुछ है इतना प्रबल
फिर कैसे हुई हिन्दी दुर्बल?
फिर कैसे हुई हिन्दी दुर्बल?

व्यथा शुरू होती है घर से
जहाँ हिन्दी तोड़ी जाती है जड़ से
बुजुर्ग हिन्दी सुनने को तरसे
बड़ों को अंग्रेजी उतरे ना सर से
बच्चों को हिन्दी गाने भी ना भाए
देवनागरी लिखना ना आये
अंग्रेजी बना है अब स्टेटस सिंबल
और ऐसे हुई हिन्दी दुर्बल ।

घर से निकले पहुंचे जब दफ्तर
हिन्दी को मिला काँटों का बिस्तर
साहब के लिए हिन्दी शान के खिलाफ
अंग्रेजी का ओढ़ा है लिहाफ
हिन्दी ने साहब को खूब मनाया

साहब ने हिन्दी दिवस मनाया
मगर अगले दिन टूटा उसका गुमान
साहब ने तोड़ा हिन्दी के सपनों का बबल
और ऐसे हुई हिन्दी दुर्बल ।

दुखी हिन्दी निकली दफ्तर से
मिलने गई अपने रक्षक से
बोली देखो ज़माने ने क्या हाल किया
अपने घर में ही हिन्दी को बेहाल किया
रक्षक उठे और गरजे हिन्दी यू डोंट वरी
हिन्दी और दुखी हो बोली आई एम सॉरी

वो समझ गयी यही गद्दार हैं
रक्षक के नाम पर ये हिन्दी के ठेकेदार हैं
दिन रात हिन्दी की माला जपते हैं
हिन्दी से ही इनके बिज़नेस चलते हैं
दुनियां के सामने हिन्दी के गुण गाते हैं
और पीछे हिन्दी का मजाक बनाते हैं

हिन्दी ने अब ये ठाना था
साथ युवाओं का उसे पाना था
पहुंची वो युवाओं के पास
बोली तुमसे जुड़ी है काफी आस
अब तकनीकी से जोड़ो मुझे
अंग्रेजी के मिथक से मोड़ो मुझे
युवा भी बड़े असहाय दिखे
बोले अंग्रेजी का ना कोई पर्याय दिखे
फिर भी बोले हम लड़ते हैं
बस बेरोज़गारी से डरते हैं

बिन युवा हिन्दी हुई और दुर्बल
और ऐसे हुई हिन्दी दुर्बल ।

अब तो बस एक सहारा था
चलो दिल्ली का पुराना नारा था
संसद में चर्चा करवाना है
हिन्दी को न्याय दिलाना है
वक्त को वो भी कहाँ मंजूर था
अध्यक्ष हिन्दी का हिन्दी से दूर था
अंग्रेजी में उसने पाठ सुनाया

अधिकारियों ने उसका मसौदा बनाया
प्रस्तुत मसौदा बड़ा ही न्यारा था
मगर अनुवादक को गूगल ट्रांसलेट का सहारा था

उसने ऐसा हिन्दी अनुवाद किया
अपने साथ हिन्दी को भी बर्बाद किया
हिन्दी को अपना स्थान मिल ना सका
दबे रहे आंसू आँखों में बाहर कभी बह ना सका
हिन्दी बोलने वाले जब तक ना करेंगे सबल
तब तक होती रहेगी हिन्दी दुर्बल ।



मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता ।

—आचार्य विनोबा भावे



जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता ।

—डॉ. राजेंद्र प्रसाद

धैर्य से विकास की ओर

श्वेता शर्मा

“धैर्य और दृढ़ता का जादुई प्रभाव होता है। इससे कठिनाइयाँ मिट जाती हैं और बाधाएं दूर हो जाती हैं।”

हम विकास के एक विश्वव्यापी पैटर्न का हिस्सा हैं जो चक्रों में खुद को नवीनीकृत करता है।

- रात से दिन,
- वसंत से गर्मियों तक,
- युवावस्था से अधेड़ उम्र—सभी अपने भीतर कुछ नया जन्म देते हैं।

हम इस समय वही व्यक्ति नहीं हैं जो हम कल थे। यदि हम परिवर्तन और नवीनीकरण की इस प्रक्रिया पर भरोसा कर सकते हैं, तो हम पाएंगे कि हमारी मनोदशा और दृष्टिकोण दिन-प्रतिदिन काफी सुसंगत रहता है।

बगीचे में काम करना हमें सिखा सकता है कि ऐसे चक्रों से कैसे परिचित होना है। गर्मियों की फसल के लिए जिन बीजों को वसंत में बोने की आवश्यकता होती है, उन्हें तब तक नहीं लगाया जा सकता जब तक कि जमीन तैयार न हो जाए। आने वाली गर्मियों में हम जो फसल काटने वाले हैं, उसके बारे में सोचने के बजाय अब मिट्टी तैयार करने का समय है।

हम और हमारे द्वारा शुरू की जाने वाली परियोजनाएं, जैसे हमारे द्वारा लगाए गए बीज, सभी के अलग-अलग मौसम होते हैं। कुछ जल्दी उग आते हैं। दूसरों को अंकुरित होने में अधिक समय लगता है, फल लगने में भी अधिक समय लगता है। दुनिया की सारी अधीरता इस प्रक्रिया को नहीं बदल सकती। इसलिए हमें हमेशा धैर्य के साथ अपना कर्म करते रहना चाहिए। जैसा कि एक प्राचीन कहावत है, **“धैर्य ही शक्ति है, समय और धैर्य के साथ शहतूत का पत्ता रेशम बन जाता है।”**



कभी भी दूसरे की सफलता से ईर्ष्या मत करें,
सिर्फ ईमानदारी से मेहनत करें।

अंतर्मन के ढुंढ

अखिलेश सिलस्वाल

आसमान में उड़ता एक सुंदर पक्षी,
निर्भीक स्वतंत्रता से उड़ता हुआ,
शांति संदेश का संचार,
आध्यात्मिकता का प्रचार सा करता हुआ ।

जीवन की परिकल्पना भी ऐसी ही होनी चाहिए हमेशा,
निर्भीक स्वतंत्र निस्वार्थ सी केवल लक्ष्य की साधना में लगी हुई,
पक्षी का ये उड़ता स्वरूप कितना प्रेरणादाई है जीवन में,
खुले आसमान में उड़ता बिना किसी रूकावट के निरंतर—निरंतर हमेशा ।

जीवन की कल्पनाएं इससे बिल्कुल अलग सी है,
हम घिरे हैं बंधनों से, स्वार्थ से, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष भावों से,
भला कैसे उड़ पाएंगे हम यूँ स्वतंत्र निष्पाप भाव से,
खुले आसमान में उड़ते एक सुंदर से पक्षी की तरह ।।

ऑफिस की खिड़की

ऑफिस की खिड़की की जाली में स्पष्ट दिखे प्रश्नचिन्ह जो मन में थे अंकित,
इस सयानों—भरी दुनिया में दिल के किसी कोने में दुबककर वो रह गए,
ना जाने कब इन धूल—धूसरित फाईलों में हो गए वो अपरिचित ।

है सब यहां फिर भी कुछ तो कमी है,
है कुछ ऐसा जिसकी कसक दिल में अभी भी कहीं है,
भूल बैठा तबस्सुम अपनी इस कामकाज की तरन्नुम में ।

चिरपरिचित माया—बल से खुद से होकर अपरिचित,
जाना मैंने यह कि अपने में ही खुश रहना एक प्रबुद्ध कला है,
कभी—कभी खुद से भी मुख्तसर मुलाकात करने में भी भला है ।।



अनिल कुमार पीपल

खोज

हमें जो दिखाई देता है, वही हम देखते हैं। हमें जो सुनाई देता है, वही हम सुनते हैं।

इस देखने और सुनने के अतिरिक्त बहुत कुछ है, जानने और समझने के लिए।

जीवित है सब कुछ और परिवर्तनीय है। संतुलित और वैज्ञानिक है, सबकुछ, चारों तरफ।

बहुत कुछ खोजा है, इंसानों ने यहां, अब तक। एक इकाई बनकर बहुत खोज करनी अभी बाकी है।

सब कुछ अंजाना यहीं पर है, देखें कब-कब क्या-क्या पाते हैं।

क्या खोज पाते हैं सत्य के कुछ और पहलू, इस अथाह फैले ब्रह्मांड में, इस सृष्टि मंडल में।

रहस्यों और अचरजों से भरी ये धरती है। रहस्यों और अचरजों से भरा ये आकाश है।

जो खोजा और पाया कुछ भी नहीं। अन-खोजा, अन-पाये की कोई सीमा नहीं।

जो अन-खोजा है, अन-पाया है, वह मौजूद है, साक्षात् है, हर पल हर जगह।

आज जो खोजा है, था वो मौजूद, सदियों पहले, लेकिन ढका था अज्ञानता की चादर से।

इसी तरह, जो भविष्य में खोजा जाएगा, इस वक्त वह मौजूद है, लेकिन ओझल है नज़रों से अभी।

बस आसपास के कुछ पर्दे हटाने हैं, और कुछ पर्दे झाड़ने हैं।

लेकिन लग जाएंगे बरसों, और लग जाएंगी सदियां, इन परतों को हटाने में और झाड़ने में।



क्यूआर कोड

मनीष कुमार

परिचय

एक त्वरित प्रतिक्रिया कोड (क्यूआर कोड) एक प्रकार का मैट्रिक्स बारकोड (या द्वि-आयामी बारकोड) है जिसमें एक सफ़ेद पृष्ठभूमि पर चौकोर काले मॉड्यूल होते हैं। क्यूआर कोड स्मार्टफोन द्वारा पढ़ने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, क्योंकि वे लंबवत और क्षैतिज दोनों तरह से जानकारी ले जा सकते हैं। वे लिंक, टेक्स्ट या अन्य डेटा सहित मात्रा में जानकारी तक पहुंच प्रदान कर सकते हैं।

इतिहास

1994 में, डेंसो वेव, एक सहायक निर्माण कंपनी, को अधिक मात्रा में वर्णों को संसाधित करने और वाहनों और भागों को ट्रैक करने में सहायता करने के लिए बारकोड के लिए एक बेहतर, तेज, मजबूत तकनीक की आवश्यकता थी। मासा हिरो हारा ने दो लोगों की एक टीम के साथ, जिसे अब हम जानते हैं और क्यूआर कोड के रूप में पहचानते हैं, विकसित करने का कार्य किया।

हारा और उनकी टीम के लिए कुछ सबसे चुनौतीपूर्ण समस्याएं 2डी कोड को जल्द से जल्द पढ़ने का तरीका ढूंढ रही थीं, जबकि स्थिति पहचान पैटर्न के आकार को जोड़ने के बाद झूठी पहचान को रोकना था। इसे अद्वितीय होने की आवश्यकता थी, जिसका अर्थ था कि विकास दल ने मुद्रित सामग्री पर पैटर्न को कम करने के बाद सफ़ेद से काले क्षेत्रों के अनुपात का सर्वेक्षण करने में एक वर्ष का बेहतर हिस्सा बिताया। परिणाम? उन्होंने आदर्श अनुपात को 1:1:3:1:1 के रूप में पहचाना।

इस संख्या की पहचान करके, वे स्थिति का पता लगाने के पैटर्न में काले और सफ़ेद क्षेत्रों को निर्धारित करने में सक्षम थे, जिससे स्कैनिंग कोण की परवाह किए बिना कोड का पता लगाया जा सके। संक्षेप में, इस अद्वितीय अनुपात का सीधा सा मतलब है कि आप इसे ऊपर, नीचे, बाएँ या दाएँ से स्कैन कर सकते हैं। प्रारंभ में इसका उपयोग वाहनों को ट्रैक करने और विनिर्माण के दौरान भागों को ट्रैक करने के लिए किया जाता था।

अब इसका उपयोग स्मार्ट फोन पर आसानी से लिंक करने और जानकारी स्थानांतरित करने के लिए भी किया जाता है।

क्यूआर कोड में जानकारी आम तौर पर किसी प्रकार की कार्रवाई योग्य टेक्स्ट होती है जो फोन को किसी प्रकार की कार्रवाई करने के लिए निर्देशित करती है।

क्यूआर कोड का कार्य

इसके लिए एक क्यूआर स्कैनर एप्लिकेशन की आवश्यकता होती है जिसे क्यूआर कोड में जानकारी को डीकोड करने के लिए स्मार्ट फोन या कंप्यूटर में इंस्टॉल किया जाना है।

- क्यूआर कोड काले वर्णों और सफ़ेद वर्णों से बने होते हैं।
- इनमें से प्रत्येक वर्ण को मापांक कहा जाता है।
- प्रत्येक क्यूआर कोड में, कुछ मापांक होते हैं जिन्हें कवर या संपादित नहीं किया जाना चाहिए, अन्यथा कोड स्कैन नहीं होगा।

एन्क्रिप्शन

- एन्क्रिप्शन क्यूआर कोड, जो बहुत सामान्य नहीं हैं, उनके कुछ कार्यान्वयन हैं।
- क्यूआर ऐप, DES एल्गोरिथम का उपयोग करके क्यूआर कोड के एन्क्रिप्शन और डिक्लिप्शन का प्रबंधन करता है।

Error Correction (त्रुटि सुधार)

- इसमें त्रुटि को ठीक करने का कार्य है कि सफेद काला है।
- मूल डेटा में रीड – सोलोमन कोड जोड़कर क्यूआर कोड त्रुटि सुधार सुविधा लागू की जाती है।
- त्रुटि सुधार क्षमता ठीक किए जाने वाले डेटा की मात्रा पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यदि एन्कोड किए जाने वाले QR कोड के 100 कोडवर्ड हैं, जिनमें से 50 को ठीक करने की आवश्यकता है, रीड सोलोमन कोड के 100 कोडवर्ड की आवश्यकता है, क्योंकि रीड सोलोमन कोड को सही करने के लिए कोडवर्ड की दोगुनी मात्रा की आवश्यकता होती है।

डिक्लिप्शन

- लाल रंग में हाइलाइट किए गए तीन बड़े वर्ग स्थिति चिह्नक हैं।
- ये स्कैनर को बताते हैं कि कोड के किनारे कहां हैं।
- छोटा हल्का गुलाबी एक संरेखण मार्कर है जो क्यूआर कोड के उन्मुखीकरण को निर्धारित करता है
- बारी-बारी से काले और सफेद मॉड्यूल की नीली पट्टियों को टाइमिंग पैटर्न कहा जाता है।

वे पंक्तियों और स्तंभों की स्थिति को परिभाषित करते हैं।

- पीले खंड प्रारूप का निर्धारण करते हैं। यह स्कैनर को बताता है कि यह एक वेबसाइट है, टेक्स्ट संदेश, चीनी प्रतीक, संख्याएं, या इनमें से कोई संयोजन है।
- नीले रंग में हाइलाइट किए गए मॉड्यूल संस्करण संख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्यूआर कोड का संस्करण

सूचना को क्यूआर कोड रीडर से लैस मोबाइल फोन द्वारा पढ़ा जाता है, जो सूचना को डिकोड करने के लिए फोन के कैमरे के साथ मिलकर काम करता है।

क्यूआर कोड का उपयोग

- **यूआरएल:** यूआरएल के टेक्स्ट को एन्कोड करने के लिए क्यूआर कोड का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिसे वेब ब्राउजर का इस्तेमाल करके खोला जाएगा।
- **मोबाइल नंबर:** क्यूआर कोड में मोबाइल नंबर भी हो सकता है। जब कोड पढ़ा जाता है, तो भरे गए नंबर के साथ फोन का डायलर खुल जाएगा और क्यूआर कोड भी अनुमति मांगकर कॉल को स्वचालित रूप से कर सकता है।
- **एसएमएस :** एक क्यूआर कोड में एक मोबाइल टेलीफोन नंबर हो सकता है जो एक टेक्स्ट संदेश प्राप्त करने के लिए तैयार है। क्यूआर कोड रीडर फोन को मैसेजिंग क्लाइंट खोलने के लिए प्रेरित करेगा, और एक नया संदेश खोलेगा जिसे उपयोगकर्ता लिख और भेज सकता है।
- क्यूआर कोड 4,296 अल्फान्यूमेरिक या 7,089 न्यूमेरिक कैरेक्टर तक स्टोर कर सकता है।



वाट्सएप यूनिवर्सिटी



अरविन्द शर्मा

मित्रों ! क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?
या आपको कोई मानसिक या शारीरिक कष्ट है,
क्या फालतू पैसों का इस्तेमाल नहीं सूझ रहा,
या माया कहाँ से आये, नहीं बूझ रहा
बच्चे पढ़ते नहीं, ये गम दिन भर खाता है
या न जाने क्या पढ़ते रहते हैं
ये भ्रम दिमाग से नहीं जाता है,

आपकी ऐसी-वैसी हर समस्या का निदान आ गया है,
बिना रगड़े चिराग से जिन्न बाहर आ गया है ।
तो साहेबान, कद्रदान, मेहरबान
मुफ़्त-मुफ़्त-मुफ़्त

वाट्सएप ग्लोबल यूनिवर्सिटी में पदार्पण मुफ़्त
आप चाहे पाँचवीं फ़ेल हो या बारहवीं पास
पीएचडी हों या अँगूठा छाप,
वाट्सएप ग्लोबल यूनिवर्सिटी में दाखिला मुफ़्त-मुफ़्त !

ज्ञानियों की खान.... वाट्सएप महान
बड़ा ही चमत्कारी कैम्पस है दोस्तों,
यहाँ कोई विद्यार्थी नहीं, सभी प्राध्यापक हैं,
कोई अज्ञानी नहीं, सभी कुशल प्रचारक हैं ।
बेकार में लोग कलम घिस-घिसकर पढ़ते हैं,
रातें काली और बाल सफ़ेद करते हैं ।

अखबार, टी.वी., रेडियो-इन सबके विशेषज्ञ,
अजी छोड़िये ! सभी झक्क मारते हैं ।
चाहे कितने भी तर्क, विश्लेषण, वाद विवाद कर लें,
वाट्सएप स्वयंभू-धुरंधरों के आगे पानी भरते हैं !
सरकारें क्या सोच रही हैं, क्या सोचने वाली हैं,

ये जादूगार, दिमागों में घुस कर जान जाते हैं,
ये धुन के पक्के हैं- अपने मतलब से मतलब रखें,
इस जीवन दर्शन को कहाँ मान पाते हैं ।

होता होगा साहब, डाक्टरों के लिये
मुमकिन-नामुमकिन,
यहां तो असंभव में संभव मिलता है,
ढोकले की रेसेपी से लेकर, कैसर तक का इलाज,
मुफ़्त मिलता है ।

वाट्सएप की दुनिया "वसुधैव कुटुम्बकम्" की अनुयायी है
काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार मुक्त संसार यहीं है,
संबंधों, मर्यादाओं, त्याग, प्रेम व परोपकार के भाव अपार हैं,
माया मिथ्या है, मृत्यु सत्य है, बस यूँ समझिए,
कि राम राज्य जीते जी साकार है ।

वाट्सएप पर सभी गुरु हैं, कोई चेला नहीं,
मैसेज सबको फॉरवर्ड हुआ, पर कोई बोला नहीं,
फॉरवर्ड संदेशों के सब उस्ताद हैं,
कितने नकली, कितने मतलब के,
ये सब बाद की बात है ।

जानता हूँ वाट्सएप का संसार,
वास्तविकता से कतई हटकर है,
क्योंकि आपकी, मेरी व हर आम आदमी की दुनिया में,
जीने का संघर्ष है, और लड़ना डटकर है,
हथियारों से लैस शहर में बहादुरी बेमानी और डरना अच्छा है,
किन्तु वाट्सएप की दुनिया सच्ची हो जाए,
हाय, दिल को खुश रखने को गालिब, ये ख्याल अच्छा है ।



कविता पढ़ना आसान नहीं है

धर्मेन्द्र मिश्रा

रुको!
मेरे जूतों में चलने से पहले
इन पैरों पर पड़े छालों का सोचो
ये छंद, ये शब्द जहां ले जाएं
बेशर्त वहां कभी मत जाना
पढ़ना ही है
तो उनको पढ़ लो जो प्रेम पर लिखते हैं
मेरी आत्मानुभूति – मेरी कविता

राख में कहीं छिपी चिंगारी भर है, चिंगारी दूँढते-दूँढते,
कहीं ये टंडी राख तुम्हारे चेहरे पर घर ना बना लें
तभी पहले ही संभल जाओ, रुको, अब बस करो।
पर... रुकना भी कब आसान हुआ है

कविता पढ़ना और प्रेम करना कभी आसान नहीं होता
आसान होता है "फ्री फॉल"
हां, ज़मीन के अंदर गिरते जाना आसान है
आसान ही है जीना जैसे सब जीते हैं
या जैसा सब चाहते हैं कि आप जीएं

शादी करना आसान है, बच्चे जनना और भी सरल
लेकिन इन रिश्तों की परवरिश करना? बेहद कठिन
आसान है स्टेटस मेंटेन करना भी,
और समाज में रहना तो आसान है ही।

और हां बातें बनाना भी,
बातें बनाने वालों की व्यथा को बयान करना
आसान नहीं है पर,
अनगिनत बार याद आ चुकी कुंठित करने वाली
बात को भुला पाना तो बिलकुल आसान नहीं,
समाज को स्वयं पर हावी नहीं होने
देना तो सबसे टेढ़ी खीर है

"फ्री विल" की भी बात ही अलग है।
मरना आसान होगा, मरने के विचारों को रोकना
कदापि नहीं,
आंसू रोक लेना, हां और
उसके ऊपर मुस्कुरा देना तो दिग्गजों का काम है,
है ना?
कविता पढ़ना आसान नहीं है।



"सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" – जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

क्वांटम कम्प्यूटिंग

सुमित शर्मा

कंप्यूटर आधुनिक युग की वह खोज है जिसने तकनीक को एक अलग स्तर पर पहुंचा दिया है। साधारण कार्यों से लेकर मौसम, उल्का पिंड, ग्रहों की जटिल गणनाओं को हल करने के लिए शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाता है। साधारण कंप्यूटर से सुपर कंप्यूटर तक के विकास की इस प्रक्रिया में वैज्ञानिकों के द्वारा अब पूरी तरह नयी कंप्यूटर प्रणाली के विकास पर कार्य किया जा रहा है, जिसे क्वांटम कंप्यूटर के नाम से जानते हैं।

क्वांटम कंप्यूटर को भविष्य का कंप्यूटर माना जा रहा है। साधारण रूप से सोचा जाये तो तकनीक में होता तेज विकास आप सभी ने ज्यादातर अनुभव किया होगा। आज के समय में 1TB की Pen drive और चिप आसानी से बाजार में उपलब्ध है और कुछ साल पहले तक 1TB की Pen drive और चिप के विषय में सोचते भी नहीं होंगे। उस समय 1TB से मालूम होता था कि बहुत अधिक मेमोरी है, जिसका आकार भी आज के मुकाबले बहुत बड़ा होता था।

क्वांटम कम्प्यूटिंग एक वृहद संकल्पना या प्रौद्योगिकी है, जिस पर क्वांटम कम्प्यूटर आधारित होते हैं।

क्वांटम कम्प्यूटर, क्यूबिट्स (Qubits) अर्थात् क्वांटम बिट्स पर आधारित होते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो क्वांटम कम्प्यूटर क्यूबिट्स के माध्यम से गणना, डाटा संग्रहण एवं उसका विश्लेषण आदि करते हैं। क्यूबिट्स में पारम्परिक डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर

की भाँति दो ही बाइनरी डिजिट (0 और 1) होते हैं किन्तु क्यूबिट्स एक ही समय में 0 या 1 अथवा 0 और 1 के संयुक्त रूप में उपस्थित हो सकता है।

क्वांटम प्रौद्योगिकी क्वांटम यांत्रिकी के सिद्धांतों पर आधारित है जिसे 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में परमाणुओं और प्राथमिक कणों के पैमाने पर प्रकृति का वर्णन करने के लिए विकसित किया गया था। इस क्रांतिकारी तकनीक के पहले चरण ने भौतिक दुनिया की हमारी समझ की नींव प्रदान की है, जिसमें प्रकाश और पदार्थ की बातचीत शामिल हैं, और लेजर और अर्ध चालक ट्रांजिस्टर जैसे सर्वव्यापी आविष्कारों को जन्म दिया है। क्वांटम यांत्रिकी के गुणों को कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में डालने के लक्ष्य के साथ वर्तमान में एक दूसरी क्रांति चल रही है।

D-wave दुनिया का पहला व्यावसायिक रूप से उपलब्ध क्वांटम कंप्यूटर है। जिसका विकास D-wave सिस्टम कनाडा के द्वारा किया गया है।

पारंपरिक और क्वांटम कम्प्यूटिंग के बीच अंतर:—

पारंपरिक कंप्यूटर शास्त्रीय भौतिकी का अनुसरण करते हुए 'बिट्स' या 1s और 0s में जानकारी को प्रोसेस करते हैं, जिसके तहत हमारे कंप्यूटर एक बार में '1' '0' को प्रोसेस कर सकते हैं। क्वांटम कंप्यूटर 'क्विबिट्स' (या क्वांटम बिट्स) में गणना करते हैं। वे क्वांटम यांत्रिकी के गुणों का शोषण करते हैं, वह विज्ञान जो यह नियंत्रित

करता है कि परमाणु पैमाने पर पदार्थ कैसे व्यवहार करता है।

- चीजों की इस योजना में, प्रोसेसर एक साथ 1 और 0 हो सकते हैं, एक अवस्था जिसे क्वांटम सुपरपोजिशन कहा जाता है।
- क्वांटम सुपरपोजिशन के कारण, एक क्वांटम कंप्यूटर समानांतर में काम करने वाले कई शास्त्रीय कंप्यूटरों की नकल कर सकता है।

क्या है मजोराना जीरो एनर्जी मोड (MZMs):

मजोराना जीरो एनर्जी मोड (Majorana zero energy modes-MZMs) एक विशिष्ट पैटर्न (specific pattern) में एक साथ बंधे हुए इलेक्ट्रॉनों के समूह (group of electrons) हैं जो एक विशिष्ट कण मजोराना फर्मियन (Majorana fermion) की तरह व्यवहार करते हैं। इस सेमी-मिथिकल पार्टिकल (semi-mythical particle) की परिकल्पना भौतिक विज्ञानी ईटोरे मजोराना (Ettore Majorana) द्वारा 1930 के दशक में पहली बार की गई थी।

('MZMs' के फार्मेशन (formation) हेतु इलेक्ट्रॉनों के एक समूह को बहुत विशिष्ट मात्रा में ऊर्जा दी जाती है और फिर उन्हें एक साथ ट्रेप (trap) कर दिया जाता है ताकि वे पलायन (escape) न कर सकें। इसके लिए मैटेरियल को 2-आयामी (2-dimensional) होना चाहिए और जितना संभव हो उतना पतला होना चाहिए। 1 डी एमजेडएम (1D MZMs) बनाने के लिए पूरी तरह से एक नए प्रकार के 2 डी मैटेरियल की आवश्यकता होती है, यथा- टोपोलॉजिकल सुपरकंडक्टर (topological superconductor)।

वैज्ञानिकों को अब यकीन है कि वे इस 2 डी मैटेरियल में '1D MZM बना सकते हैं, अतः अब उनका अगला कदम टोपोलॉजिकल क्यूबिट (Topological qubit) बनाना है।

भारत में क्वांटम कंप्यूटिंग अनुकरण :

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के द्वारा देश का पहला Quantum Computer Simulator (QSim) toolkit को बनाया गया। इस सिमुलेटर के द्वारा क्वांटम कंप्यूटर से जुड़े हुए हार्डवेयर को बनाते समय उसे सिमुलेटर के द्वारा पहले से जांचा जा सकेगा। सिमुलेटर को देश में ही बनाया गया है। इसके बनाने से क्वांटम कंप्यूटर के क्षेत्र में कार्य कर रहे वैज्ञानिकों को शोधकार्य में मदद मिलेगी। इस प्रोजेक्ट पर IISc Bangalore, IIT Roorkee, C-DAC ने एक साथ मिलकर कार्य किया।

फरवरी 1, 2020 को वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमन के द्वारा प्रस्तुत 2020-21 के केन्द्रीय बजट में राष्ट्रीय कणिका प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग मिशन (National Mission on Quantum Technologies and Applications) के लिए आगामी पाँच वर्षों में 8,000 करोड़ रु. का आवंटन प्रस्तावित हुआ है।

2018 में, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने क्वांटम सक्षम विज्ञान और प्रौद्योगिकी (क्वेस्ट) नामक एक कार्यक्रम का अनावरण किया और रुपये का निवेश करने के लिए और अनुसंधान में तेजी लाने के लिए अगले तीन वर्षों में 80 करोड़ रुपये प्रतिबद्ध हैं।

मिशन दूसरी क्वांटम क्रांति के बीच क्वांटम कंप्यूटिंग से जुड़ी प्रौद्योगिकियों को विकसित करना चाहता है और भारत को अमेरिका और चीन के बाद इस क्षेत्र में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश बनाना चाहता है।

क्वांटम कम्प्यूटिंग के लाभ :-

- क्वांटम कम्प्यूटिंग में घटित होने वाली दो प्रमुख घटनाएँ 'सुपरपोजिशन और एनटैंगलमेंट' क्यूबिट्स के लिए एक महान अवसर के द्वार खोलती हैं। इन घटनाओं के द्वारा चंद पलों

में बड़ी से बड़ी एवं जटिल से जटिल गणितीय समस्याओं को हल किया जा सकता है।

- क्वांटम कम्प्यूटिंग में क्वांटम फिजिक्स के सिद्धांतों का भी पालन होता है जिससे छोटे-छोटे ट्रांजिस्टरों (अणु के आकार) का निर्माण होगा जो न सिर्फ ऊर्जा की बचत को बढ़ायेंगे बल्कि क्वांटम कम्प्यूटर के आकार को भी छोटा करेंगे।
- क्वांटम कम्प्यूटर को परम्परागत डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर की जगह प्रयोग नहीं किया जायेगा बल्कि जो जटिल व विशाल गणनाएँ इनसे नहीं हो पाती हैं, उनके लिए क्वांटम कम्प्यूटर का प्रयोग होगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि क्वांटम कम्प्यूटिंग, परम्परागत कम्प्यूटरों को एक नए क्षेत्र की ओर विस्तारित करेगी।
- वर्तमान में विश्व में जितने भी सुपर कम्प्यूटर हैं, वो सभी अन्य सामान्य पर्सनल कम्प्यूटर की तुलना में लाखों गुना तेज गणना एवं डाटा की प्रोसेसिंग करते हैं। सामान्य कम्प्यूटर में एक प्रोसेसर होता है जबकि सुपर कम्प्यूटर में अनगिनत प्रोसेसर होते हैं जो गणना व डाटा विश्लेषण की गति को बढ़ा देते हैं। लेकिन विडम्बना है कि सामान्य कम्प्यूटर और सुपर कम्प्यूटर दोनों एक ही तकनीक पर कार्य करते हैं अर्थात् परम्परागत बाइनरी डिजिट पर आधारित तकनीक पर ये कार्य करते हैं। दूसरी तरफ क्वांटम कम्प्यूटर, क्वांटम कम्प्यूटिंग पर आधारित है जो क्वांटम फिजिक्स के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करती है। अतः यदि क्वांटम कम्प्यूटिंग का उपयोग करके सशक्त सुपर क्वांटम कम्प्यूटर बनाये गये तो 'सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एवं आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस (एआई) का भविष्य बदल जायेगा।

- क्वांटम कम्प्यूटर में सूचनाओं या डाटा का सुरक्षित तरीके से 'एन्क्रिप्शन' (Encryption) होता है। इसमें हैकिंग जैसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। कुछ वैज्ञानिक क्वांटम कम्प्यूटर को पूर्ण रूप से सुरक्षित कम्प्यूटर मान रहे हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि भविष्य में संवेदनशील सूचनाओं को सुरक्षित रखने या उन्हें पढ़ने में क्वांटम कम्प्यूटिंग बहुत मददगार होगी तथा वैज्ञानिकों के लिए क्वांटम कम्प्यूटरों के विविध उपयोग संभव हैं।
- क्वांटम कम्प्यूटिंग के उपयोग से नयी-नयी खगोलीय जानकारी जुटाई जा सकती है। उपग्रहों एवं अन्य स्पेस मिशन से प्राप्त डाटा को क्वांटम कम्प्यूटर बेहतर तरीके से विश्लेषित करके ब्रह्माण्ड के रहस्यों से पर्दा उठा सकते हैं। इससे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, ब्रह्मांड का फैलाव, खगोलीय पिण्डों में मौजूद संसाधन इत्यादि के बारे में पता चल सकेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि अंतरिक्ष अन्वेषण में क्वांटम कम्प्यूटिंग का उपयोग कर अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की जा सकती हैं।
- क्वांटम कम्प्यूटिंग से युक्त कम्प्यूटरों को किसी भी मौसम में आसानी से उपयोग किया जा सकता है। अर्थात् क्वांटम कम्प्यूटर मौसमी पहलुओं से अप्रभावित रहते हैं।
- क्वांटम कम्प्यूटर का अनुप्रयोग चिकित्सा क्षेत्र में भी है। इसके अलावा, इनका उपयोग सप्लाइ चेन मैनेजमेंट, लॉजिस्टिक, वित्तीय सेवाओं, संसाधनों की मॉनीटरिंग इत्यादि में बखूबी रूप से हो सकता है।

क्वांटम कम्प्यूटिंग की चुनौतियाँ :-

- क्यूबिट को संभालना वैज्ञानिकों के लिए बड़ी चुनौती है, क्योंकि उनका जीवन काल अल्पकालिक होता है।
- सूचनाओं के हिराजत के लिए जिन एनक्रिप्शन टूल्स का इस्तेमाल होता है, उनमें 'आरएसए' भी शामिल है, जो सबसे मजबूत कवच माना जाता है, लेकिन क्वांटम कम्प्यूटर इसे भी भेद सकता है।
- क्वांटम टेक्नोलॉजी किसी भी देश की सुरक्षा को खतरे में डाल सकती है। इससे दूसरे देशों की गोपनीय सूचनाओं में संध लगने का खतरा भी बढ़ सकता है।
- क्वांटम कम्प्यूटिंग के विकास हेतु भारत में आधारभूत ढाँचा एवं वैज्ञानिकों का अभाव है, जो इस क्षेत्र में एक बड़ी बाधा के रूप में है।



तकनीकी क्षणिकाएं



डॉ. प्रियंका जैन

मशीन लर्निंग

एक शिशु,
जिज्ञासु और ज्ञान पिपासु,
विलक्षण प्रशिक्षण,
अदृश्य परतों में निष्पादित परिकलन,
अवशोषित संवर्धित
स्वतः शिक्षण,
दत्तक या पूर्वज,
पशोपेश उधेड़ बुन,
कंप्यूटर जीन,
एक लर्निंग मशीन ।।

ब्लॉक चैन

दुनिया, कल से भी छोटी,
आँकड़े, बिखरे और अनियंत्रित
आकाशगंगा के मानिंद,
अभिकेंद्रित सूर्य और
अपकेंद्रित उपग्रहों की परिधि में,
इर-रिवर्सिबल,
एक भी टूटा तारा
इंद्रधनुष सा ब्लॉक चैन
सदैव अद्यतन
मेरा और तुम्हारा ।।

कृत्रिम बुद्धि

कृत्रिम बुद्धि,
कल (यन्त्र) की अक्ल,
- मशीन और आत्मन,
मनोविज्ञान और भाषाई संज्ञान,
'स्मार्ट' नकल,
- मशीन और आत्मन,
भावनात्मक प्रज्ञता, तकनीकी सुगम्यता,
भावी शक्ल
- मशीन और आत्मन,
अन्ततः, मशीन और आत्मन,
अंतर केवल,
- मशीन का मन ।।

एंट्रॉपी

अहिंसा का सिद्धांत,
बचा सकता है "एंट्रॉपी की समस्या"
एक धर्म दर्शन के दृष्टिकोण से ।
क्योंकि "न्यूनतम ऊर्जा खपत"
सबसे कम आक्रामक तरीका है
जीवित प्राणियों के लिए
दुनिया में कार्रवाई का
और जो आवश्यक है,
आत्मा की मुक्ति हेतु ।
ऐसे अहिंसा
कम करता है एंट्रोपिक फूट प्रिंट
एक वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में ।।

“अनेकांतवाद”

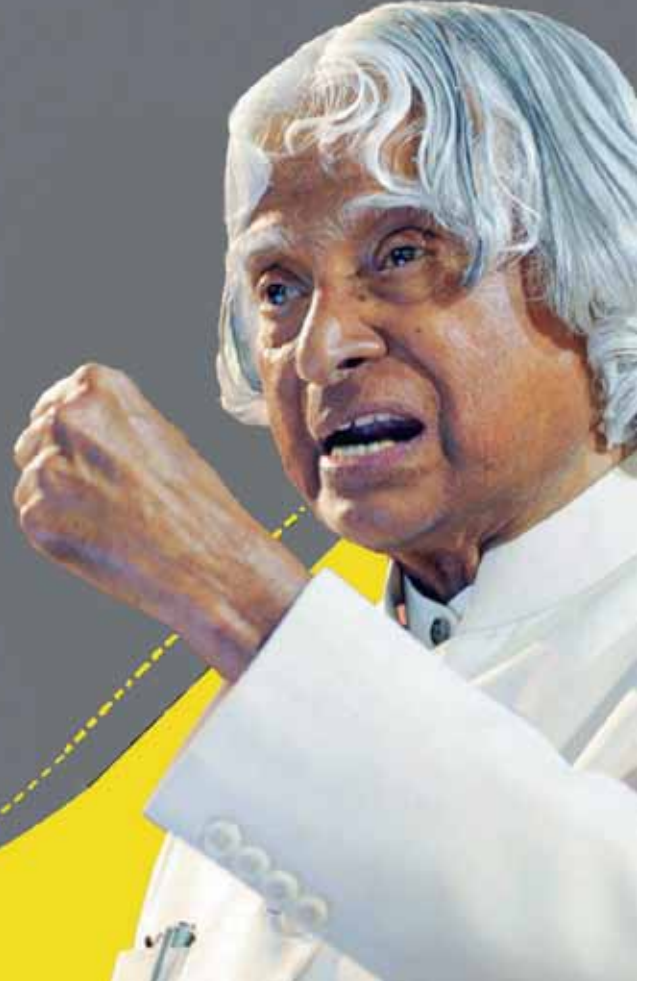
गणितीय वैज्ञानकीय माप—
घटना के सत्य होने की संभावना के
संभाव्यता सिद्धांत, क्षमता, अस्पष्ट तर्क,
और विश्वसनीयता के साथ
अनिश्चितता की।
ठीक उसी तरह जैसे कि
संसार की प्रत्येक वस्तु के
विरुद्ध प्रतीत होनेवाले
अनंत कर्मों के भिन्न भिन्न आशय।
भारतीय दर्शन के नयदृष्टि और प्रमाण दृष्टि
अनेकांतवाद में सर्वांगीण दृष्टि।।

क्वांटम शक्ति

एन्टेनगल्ड 'entangled'
अर्थात् क्यूबिट्स को उलझा सकना,
एक विशेष संबंध के साथ
आधार होता है
एक क्वांटम कंप्यूटर को
अधिक शक्तिशाली बनाने हेतु,
सामान्य कंप्यूटर की तुलना में।
त्वरित भी वही है जब
सुपरपोजिशन में संग्रहण,
एक समय में दो पोजिशन में हो पाने की क्षमता
सुलझा सकती है क्वांटम समीकरणों को
माइक्रोसैकेण्ड में।।

**"एक छात्र का सबसे
महत्वपूर्ण गुण यह है
कि वह हमेशा अपने
अध्यापक से सवाल पूछे।"**

-एपीजे अब्दुल कलाम



भारत में वर्तमान ई-गवर्नेंस गतिविधियाँ (एमईआईटीवाई परिप्रेक्ष्य)



डॉ. संतोष कुमार पाण्डेय

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार ने डिजिटल पहुंच, डिजिटल समावेश, डिजिटल सशक्तिकरण सुनिश्चित करके भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की दृष्टि से 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम शुरू किया। संक्षेप में, हमारा मिशन यह सुनिश्चित करना है कि डिजिटल प्रौद्योगिकियां प्रत्येक नागरिक के जीवन में सुधार करें; भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था का विस्तार हो, देश में निवेश और रोजगार के अवसर बढ़ें और वैश्विक डिजिटल तकनीकी क्षमताओं का निर्माण हो। डिजिटल इंडिया ने अब सरकार और नागरिकों के बीच की दूरी को अत्यधिक कम कर दिया है। इसके अलावा, डिजिटल इंडिया ने पारदर्शी और भ्रष्टाचार मुक्त तरीके से सीधे लाभार्थी को पर्याप्त सेवाएं प्रदान करने में भी मदद की है। नागरिकों के जीवन को बदलने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने के लिए भारत दुनिया के पूर्व-प्रतिष्ठित देशों में से एक बन गया है। डिजिटल इंडिया एक व्यापक कार्यक्रम है, जिसमें विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की कई परियोजनाएं शामिल हैं। सार्वजनिक सेवा वितरण से संबंधित कुछ प्रमुख परियोजनाएं इस प्रकार हैं: राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ), कॉमन सर्विस सेंटर्स (CSC), न्यू-एज गवर्नेंस के लिए यूनिफाइड मोबाइल एप्लीकेशन (UMANG), ई-डिस्ट्रिक्ट मिशन मोड प्रोजेक्ट (MMP), डिजिलॉकर, यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI), CO-WIN, MyGov, मेरी पहचान, MyScheme, इत्यादि।

नेशनल ई-गवर्नेंस सर्विस डिलीवरी गेटवे

(ई-संगम), एनईजीपी के तहत एक एमएमपी, मानक-आधारित मेसेजिंग स्विच के रूप में कार्य करके और विभिन्न विभागों में डेटा के आदान-प्रदान को आसान बनाकर इस कार्य को सरल बनाया। ई-संगम, राज्य सेवा वितरण द्वार (एसएसडीजी), सामान्य सेवा केंद्र (सीएससी), राज्य डेटा केंद्र (एसडीसी) आदि जैसे विभिन्न स्तम्भों के माध्यम से राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (एनईजीपी) कार्यक्रम में सार्वजनिक सेवाओं, नागरिक केंद्रित सेवाओं का बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण हो चुका है। निश्चित रूप से ये परियोजनाएं अत्यधिक सफल रहीं। लेकिन, इन परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन के बाद जब इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा इनके प्रभाव का अध्ययन किया गया तो इस अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह था कि इन अनुप्रयोगों और सेवाओं में से अधिकांश पृथक-पृथक रूप से कार्य कर रहे थे। जैसे कि कृषि मंत्रालय या शिक्षा मंत्रालय का ही उदाहरण लें, एक विशेष नागरिक केंद्रित आवेदन के लिए एक सेवा तैयार की गई थी। किसी अन्य सेवा के लिए, फिर से उसी डेटा को नागरिक या उपयोगकर्ता द्वारा भरना पड़ता था और इसी तरह तीसरे, चौथे और पांचवें के लिए भी भरना पड़ता था।

इसका परिणाम यह हुआ कि एक मंत्रालय के लिए पृथक-पृथक ही बहुत सारी प्रणालियाँ काम कर रही थीं। किसी न किसी तरह, नागरिकों को बार-बार संबंधित डेटा (मूल डेटा) प्रदान करने में असुविधा हो रही थी। कृषि, रसद, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कई

विभागों में ऐसा देखने को मिला। उसी समय, सन् 2016 में, एक संयुक्त राष्ट्र सर्वेक्षण हुआ। सर्वेक्षण में "Whole of Government" दृष्टिकोण पर जोर दिया गया। इसमें कहा गया कि "नागरिक केंद्रित परियोजनाओं के ई-गवर्नेंस को हम किसी एक सेवा के नजरिए से या किसी एक मंत्रालय के नजरिए से न देखें, बल्कि Whole of Government के नजरिए से देखें। जिससे कि यह नागरिकों के साथ-साथ विभागों को भी "जीवनशैली में आसानी", "सेवाओं के पहुंच में आसानी" प्रदान करेगा। इन दो तथ्यों को पहचान कर, मंत्रालय ने "Whole of Government" दृष्टिकोण को आचरण में स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की।

नियत प्रक्रिया को पूरा करने के बाद, जैसा कि मानकों के विकास के लिए है, हमने एक उद्यम स्थापत्य तंत्र का प्रारूप तैयार किया और अधिसूचित किया, जिसे "भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र" India Enterprise Architecture Framework (IndEA) कहा जाता है। इस उद्यम स्थापत्य तंत्र को 2017 में इसके कार्यान्वयन मार्गदर्शक के साथ अधिसूचित किया गया था। यह सम्पूर्ण "भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र" कई सन्दर्भ प्रतिरूप और वास्तुकला से मिलकर "Whole of Government" दृष्टिकोण पर आधारित है। इसका कार्यान्वयन स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और राज्यों (उदाहरण के लिए मेघालय) में भी शुरू किया गया था। यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 2021 में मेघालय के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी के साथ मिलकर माननीय इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री जी द्वारा "मेघालय एंटरप्राइज आर्किटेक्चर" का ब्लूप्रिंट प्रारम्भ किया गया था, जिसे संयुक्त राष्ट्र से पुरस्कृत भी किया गया। IndEA की पहली परियोजना के रूप में मेघालय एंटरप्राइज आर्किटेक्चर को पुरस्कार मिलना और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिलना, इस बात को दर्शाता है कि "भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र" (India Enterprise Architecture Framework) IndEA भारत सरकार की एक अच्छी पहल है।

तदनुसार, हमने शिक्षा में भी उद्यम स्थापत्य तंत्र लागू किया। स्कूली शिक्षा के लिए, इसे हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा National Digital Education Architecture (N-DEAR) नाम से लॉन्च किया गया था। यह वर्तमान में उच्च शिक्षा के लिए प्रक्रिया में है। कृषि, लघु उद्योग, स्वास्थ्य और अन्य मंत्रालयों के लिए भी इसी तरह की गतिविधियां चलाई जा रही हैं। कुछ राज्य भी IndEA के कार्यान्वयन के लिए आगे आए हैं, जिसमें पंजाब और आंध्र प्रदेश मुख्य हैं। तकनीकी परिवर्तन (विशेष रूप से ई-गवर्नेंस में) यह है कि अब हम पृथक-पृथक प्रणाली से सम्बद्ध प्रणाली की ओर बढ़ रहे हैं। वर्तमान में यह ही ई-गवर्नेंस की प्रवृत्ति है। "भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र" (India Enterprise Architecture Framework) IndEA के कार्यान्वयन के दौरान प्राप्त जानकारी और फीडबैक से हमें एनएसएसओ (राष्ट्रीय एकल पंजीकरण खिड़की) की नींव रखने में मदद मिली।

यहीं से एपीआई सेतु की परिकल्पना की गई जो की विभिन्न सूचनाओं और सेवाओं तक पहुँचने के लिए एक एकल मंच के तौर पर विकसित किया गया। यह अन्य एप्लिकेशन के साथ त्वरित और पारदर्शी एकीकरण करने में सक्षम है। इसका मुख्य उद्देश्य मानकीकृत तरीके से डेटा और सेवाओं की उपलब्धता के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देना है। एपीआई सेतु एक ही मंच के माध्यम से कई स्रोतों से सूचना तक पहुंच प्रदान करता है। सरकारी या गैर-सरकारी तंत्र केवाईसी, विश्वविद्यालय प्रवेश और रोजगार जैसे विभिन्न उपयोग मामलों के लिए एपीआई सेतु का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, सरकारी या गैर-सरकारी तंत्र अपने ग्राहक की पहचान को डिजिटल रूप से सत्यापित कर सकते हैं और नकली पहचान वाले ग्राहक को अपनी सूची से हटा सकते हैं। विक्रेता को सुरक्षित करने के लिए उनके साथ कोई भी लेन-देन करने से पहले व्यवसाय को सत्यापित कर सकते हैं। विभिन्न सरकारी या गैर-सरकारी उद्यम

अपने संगठन में शामिल करने से पहले अपने कर्मचारियों, प्रोबेशनरों तथा इंटरन को सत्यापित कर सकते हैं।

जिस समय हमने National Digital Education Architecture (N-DEAR) का खाका तैयार किया, उस समय किसी एक विशेष विभाग के लिए सैकड़ों प्रणालियाँ काम करती थीं, जैसे कि स्कूली शिक्षा के लिए नागरिकों को कई प्रणालियों से होकर जाना पड़ता था। इसके लिए, एक नागरिक को कई उपयोगकर्ता-आईडी और पासवर्ड बनाने पड़ते थे। साथ ही साथ प्रत्येक गतिविधि के लिए अलग-अलग लॉग-इन करना पड़ता था। और यह विभागों के लिए भी एक बड़ी चुनौती थी कि उनको एक ही सेवा के लिए अलग-अलग डाटाबेस तैयार करना पड़ता था और उनका प्रमाणीकरण करना पड़ता था। अतः यह एक सार्वभौम आवश्यकता बन गई कि कोई ऐसा विकल्प साधा जाए जिससे कि केंद्रीय मंत्रालय, राज्य मंत्रालय, और अन्य विभाग के साथ मिलकर एक ही साइन-इन पर कार्य कर सकें और इस कार्य के लिए राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ) की अवधारणा सामने आई।

राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ) की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए बैकग्राउंड में कई एजेंसियां काम कर रही हैं। जैसे कि सी-डैक मुंबई द्वारा बनाया गया ई प्रमाण, एनआईसी द्वारा बनाया गया जन परिचय, और एनईजीडी द्वारा बनाया गया डिजिलॉकर, ये तीनों ही राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन के स्वरूप हैं। यह अत्यंत ही हर्ष का विषय ही है कि अनुमति मिलने के बाद माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा डिजिटल इण्डिया वीक के शुभ अवसर पर 4 जुलाई 2022 को राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ) का प्रमोचन किया गया। इसके बाद, बहुत ही कम समय में लगभग 4000 से भी ज्यादा जन सेवायें राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ) से जुड़ीं। यह अपने आप में ही राष्ट्रीय एकल साइन-ऑन (एनएसएसओ) की बृहत् स्वीकार्यता और अपार सफलता को प्रदर्शित करता है।

“आधार डेटा वॉल्ट” एक और ई-गवर्नेंस पहल है जिसकी चर्चा यहां की जानी चाहिए। आधार डेटा वॉल्ट इसलिए भी बहुत आवश्यक है क्योंकि (भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण) यूआईडीएआई के दिशानिर्देशों के अनुसार यदि किसी विभाग, विशेष रूप से ऐसे अनुप्रयोगों के लिए जिनमें आधार संख्या की आवश्यकता होती है, तो उन्हें इसे एन्क्रिप्टेड डेटा वॉल्ट में ही रखा जाना चाहिए। पुनः यह विभागों और मंत्रालयों के लिए एक चुनौती बन कर उभरा कि किस प्रकार से वो अलग-अलग सेवाओं के लिए प्रमाणीकरण प्रदान करेंगे व अलग-अलग डेटाबेस तैयार करेंगे। पुनः एक बार फिर इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने जिम्मेदारी ली और आधार डेटा वॉल्ट के माध्यम से एक नई पहल की पेशकश की। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा समर्थित, (प्रगत संगणन विकास केन्द्र) सी-डैक अब सभी मंत्रालयों, राज्यों और अन्य उपभोक्ताओं को आधार डेटा वॉल्ट (एक सेवा के रूप में) प्रदान करता है।

मोबाइल ऐप स्टोर भी भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है और यह आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत स्वदेशी रूप से विकसित पहला प्लेटफॉर्म है। बहुत ही कम समय में मोबाइल ऐप स्टोर पर लगभग 1200 से भी ज्यादा एप्लिकेशन अपलोड किए गए हैं, जिनमें लगभग 4500 पंजीकृत डेवलपर्स हैं। इसके साथ ही साथ मोबाइल ऐप से अच्छी संख्या में (लगभग 9 करोड़) डाउनलोड भी हुए हैं। ई हस्ताक्षर, ई गवर्नेंस की एक और पहल है। ई-हस्ताक्षर नागरिकों को भारतीय आईटी अधिनियम 2000 और उसके विभिन्न नियमों और विनियमों के तहत कानूनी रूप से स्वीकार्य रूप में सुरक्षित रूप से अपने दस्तावेजों पर तत्काल हस्ताक्षर करने के लिए ऑनलाइन मंच प्रदान करता है। सी-डैक सुरक्षित और त्वरित प्रमाणीकरण सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित नेटवर्क लिंक के माध्यम से यूआईडीएआई की केंद्रीय पहचान डेटा रिपॉजिटरी (सीआईडीआर) से जुड़ा हुआ है। सी-डैक की एएसए या एयूए-केयूए सेवाएं

आधार अधिनियम और यूआईडीएआई दिशानिर्देशों के प्रावधान के तहत सरकारी विभागों के साथ-साथ निजी संगठनों के लिए भी उपलब्ध हैं।

ई-प्रमाण डेस्कटॉप के साथ-साथ मोबाइल के माध्यम से सेवाओं तक पहुँचने के लिए सुरक्षित तरीके से विभिन्न सरकारी सेवाओं के उपयोगकर्ताओं को प्रमाणित करने के लिए एक समान मानक आधारित राष्ट्रीय ई-प्रमाणीकरण ढांचा है। ई-प्रमाण कई विकल्पों के साथ उपलब्ध है, जैसे कि पासवर्ड, ओटीपी, बायोमेट्रिक या डिजिटल प्रमाणपत्र। अब सरकार द्वारा जारी किसी भी आईडी कार्ड को, चाहे वह आधार, डीएल, वोटर आईडी कार्ड, पैन कार्ड आदि हो, भारत सरकार की सेवाओं का उपयोग करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। जहां तक शिक्षा जगत का सवाल है, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली (जेएनयू) अपनी आईटी प्रणाली को ई-प्रमाण के साथ एकीकृत करने की प्रक्रिया में है। भारत सरकार की सेवाओं की बात करें तो भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) को आधार डेटा वॉल्ट के साथ एकीकृत किया गया है। अन्य मंत्रालय और उद्योग भी कई और ई-गवर्नेंस पहलों के साथ एकीकरण का मार्ग देख रहे हैं।

अब हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि “भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र” (India Enterprise Architecture Framework) IndEA कई ई-गवर्नेंस उपक्रमों की रीढ़ है। “भारत उद्यम स्थापत्य तंत्र” का मुख्य आदर्श वाक्य सामान्य बिल्डिंग ब्लॉक्स का अधिकतम उपयोग है। सामान्य बिल्डिंग ब्लॉक्स में पहले से ही विभिन्न समाधान उपलब्ध हैं जैसे कि डिजिलॉकर, उमंग, एनएसएसओ, ई-प्रमाण और मोबाइल ऐप स्टोर आदि। सभी विभागों और राज्यों को यह सलाह दी जाती है कि यदि समाधान पहले से मौजूद हैं, तो किसी भी सेवा के लिए अपना समाधान तैयार न करें। इसके बजाय सॉफ्टवेयर पुनः प्रयोज्यता की अवधारणा को साकार करके पहले से उपलब्ध कॉमन बिल्डिंग ब्लॉक्स से अपना समाधान चुनें और उसे उपयोग में लाएं। विभिन्न विभागों और राज्यों को यह भी सलाह दी जाती है की एपीआई सेतु की मदद से विभिन्न सूचनाओं और सेवाओं तक पहुँचने के लिए पहले से ही उपलब्ध तंत्र का प्रयोग करें। अतः केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों के साथ साथ राज्य सरकारों और विभिन्न विभागों की यह साझा जिम्मेदारी बनती है की अब तक उपलब्ध सभी ई-गवर्नेंस सेवाओं और योजनाओं का लाभ नागरिकों तक पहुंचाने के लिए तथा नागरिकों के “जीवन की सुगमता” के लिए मिलकर कार्य करें।



मेरा सुनहरा गाँव



उमेश कुमार

यूँ तो वह मेरा ननिहाल है, पर है मेरे दूसरे घर जैसा ही। 2-3 दिन की छुट्टियाँ हाथ लगते ही गाँव घूमकर आने का मन करने लगता है। आईये, मैं आपको अपने गाँव ले चलता हूँ।

बुलन्दशहर से 10 किमी आगे जाकर, मेरा गाँव 'हुरथला' पड़ता है। दादरी और सिकंदराबाद की फैक्टरियाँ पार होते ही खेत खलिहान शुरू हो जाते हैं। दूर-दूर तक फैली हरियाली किसी को भी मोहित करने के लिए काफी है। हल्की धूप के बीच काम करते लोग, घास चरते पशु, किलोल करते पक्षी, हम्म... शहर की आपा-धापी से बिलकुल अलग। गाँव पहुंचने पर नाना जी गले से लगा लेते हैं। उनकी घनी सफेद मूछें और झुरियाँदार चेहरा बताता है कि अपनी उम्र के कितने सावन वो देख चुके हैं। मोती बार-बार ऊपर को आता है, जैसे कि पूछ रहा हो कि पिछले महीने कहाँ गायब थे मियाँ? घर में बंधे हुए पशु अपनी मुंडी घुमाकर ऐसे देखते हैं कि भई! ये कौन आ गया! उसके बाद जितने में हम नीम के नीचे की खाट पर तशरीफ़ रखते हैं, उतने में घूँघट डाले हुए मामी जी पानी लेकर आती हैं। नल के मीठे जल का कोई जवाब ही नहीं है। एक अलग ही तृप्ति का एहसास होता है। बड़े भाई जब कॉलेज से वापस आ जाते हैं, फिर जो बातों का दौर चलता है, वो शाम का खाना लगने तक खत्म ही नहीं होता। चूंकि गाँव में बिजली नहीं है, शाम को अंधेरा होते ही सब सिमटने सा लगता है। मिट्टी के चूल्हे में लकड़ी और कंडे जलाकर खाना बनने लगता है। दूर-दूर तक कोई ख़ास रोशनी नहीं, बस हल्के जलते चूल्हों की रोशनी, उधम मचाते बच्चे, और बीच-बीच में

मोर की आवाज़। चूल्हे की लकड़ी की महक... हम्म... एक अलग ही एहसास दिल में बिठा चुकी है। वो चूल्हे की रोटी का स्वाद ही अलग है। खैर, खाना खाकर घर से हम घर की तरफ चलते हैं। नीम के नीचे खाट बिछाकर, तारों के नीचे, खुली हवा का आनंद लेते हुए लेट जाते हैं। थोड़ी-बहुत बातें होती हैं। दूर कहीं आपस में लोगों के बात करने की आवाज आती है। रह-रह कर कुत्ते भौंकने लगते हैं। झींगुरों की झनझन तो निरन्तर चलती रहती है। वाह! गाँव की रात कितनी सुरीली होती है। खैर, सुबह मोर की आवाजों से पौ फटते ही नींद खुल जाती है। कितनी ताज़ी और ठंडी हवा चल रही है, दिलखुश एकदम! नीम की छोटी टहनी तोड़कर, उसका कड़वा दातुन करते हैं। पशुओं को सुबह-सुबह चारा डालकर निवृत्त कर दिया जाता है। उसके बाद खेत पर जाने की तैयारी। मामा जी बैल को खोलकर गाड़ी में जोड़ते हैं। जरूरी औज़ार लेकर खेत की तरफ अपनी बैलगाड़ी चल पड़ती है। सुबह की ओस, हल्की ललिमा वाला सूरज, फसलों की महक और ठंडी-ठंडी बयार! क्या जादू है! कोई जवाब नहीं! बीमार आदमी की भी तबियत खुश कर दे। ऐसा मौसम होता है गाँव का सुबह-सुबह! किसी ने गेंहू बो रखे हैं, तो किसी ने बाजरा, किसी ने अरहर, तो किसी ने गन्ना। हवा के झोंकों से फसलें झूमने लगती हैं। मोती हमारी बैलगाड़ी के पीछे मटक-मटक कर चल रहा है। रास्ते भर में लोग खेतों में काम करते हुए मिलते हैं। आखिर में हमारी बैलगाड़ी रुकती है और हम खेत में पहुँच चुके हैं। आज गन्ने काटने हैं। फसल दस फुटी हो चुकी है। आहा! आज तो गन्ने से ही पेट भरेंगे! मामा जी सबसे

मीठा गन्ना काट कर हमें देते हैं। हम्म... गन्ने इतने मीठे हैं कि अगर एक साथ 4-5 खा लिए जाएँ तो पक्का शुगर हो जाएगी! दूर-दूर तक फैले हुए खेत और आम के बाग। एक ही पेड़ पर पचासों आम लगे हुए हैं, पर अभी कच्चे हैं! मामा जी से नज़र चुरा कर एक बड़ा सा आम तोड़ तो लिया पर वो भी खट्टा निकला! खैर, मामा जी लगे अपने काम में, और हम भाई लोग निकलते हैं सैर पर! टयूबवैल में खूब टंडा पानी चल रहा है, मन कर रहा है एक बार तो डुबकी लगा ही ली जाए पोखर में। मामी जी के बांधे हुए परांटे और मक्खन खोल कर खाते हैं। क्या स्वाद है! ऐसा स्वाद तो पिज्जा-बर्गर में भी नहीं है। गाँव की हर चीज़ में जादू छुपा है। खैर, हम घर वापस जाते हैं। गाँवों में एक खासियत है, आपको हर कोई आपके बड़े-बूढ़े के नाम से पहचानता है— अरे यह तो अपने चौहान साहब का नाती

है! और एक सबसे अच्छी बात— आप किसी के भी यहाँ जाकर बैठ सकते हो, खाना खा सकते हो। बहुत प्रेम है यहाँ लोगों में! और यहाँ दिल्ली में? अपना स्कूटर किसी के घर के साइड में सिर्फ 5 मिनट को लगा कर तो देखो! कैसा स्वागत करेगा वो सब जानते हैं! खैर, अब आती है जाने की बारी। कल कॉलेज भी तो जाना है, अब तो विदा लेनी ही पड़ेगी। बहुत मना करने पर भी मामी जी 100 रुपए विदा में पकड़ा देती है, कहती है कि चिज्जी खाना। मोती काफी दूर तक हमारी कार के पीछे भागता है, रोकने के लिए। पर क्या करें, जाना तो है। भारी मन से सबको विदा करके, हम वापस दिल्ली के लिए निकलते हैं। रास्ते में वही सब याद आ रहा होता है। मन करता है वापस गाड़ी घुमाऊँ और वहीं रुक जाऊँ। सच में, जब भी वहाँ होते हैं, वहीं के होकर रह जाते हैं।



कर्ज

तुझसे था जो मैंने पाया,
तुझको ही लौटा मैं दिया ।
कुछ इस तरह ऐ ज़िन्दगी,
तेरा कर्ज मैंने चुकता किया ।।

सुख में था तुझको साथी बनाया,
दुःख में भी तेरा साथ निभाया ।
चला था मैं तेरे साथ क्योंकि,
तूने ही तो था मुझको चलना सिखाया ।।

साथ चलता रहा आदि से अंत तक,
किसी मोड़ पर न रुखा किया ।
कुछ इस तरह ऐ ज़िन्दगी,
तेरा कर्ज मैंने चुकता किया ।।

राह के हर शूल को समझा था फूल,
उफ़ भी न किया पाकर गम की धूल ।
हर ख्वाहिश को तेरे रखा सर आँखों पर,
रहता था सजग कहीं जाऊँ न भूल ।।

हर गम को तेरी नेमत समझा,
साये से भी शिकवा न किया ।
कुछ इस तरह ऐ ज़िन्दगी,
तेरा कर्ज मैंने चुकता किया ।।

हिन्दी महिमा



अभिषेक कुमार मिश्र

सत्य सनातन चिर अपनापन,
मान हमारी है हिन्दी ।

आओ मिलकर हम दुहराएँ,
शान हमारी है हिन्दी ।

भाषाओं की माता है,
सम्मान हमारी है हिन्दी ।

तत्सम तद्भव देश—विदेशज,
ज्ञान हमारी है हिन्दी ।

जाति धर्म वर्ग क्षेत्र का,
फर्क मिटाती है हिन्दी ।

जन—जन को समदर्शी करती,
अभिमान हमारी है हिन्दी ।

सभ्यता संस्कृति और धर्म,
पहचान हमारी है हिन्दी ।

मन हर्षित आहलादित करती,
संज्ञान हमारी है हिन्दी ।

“हिन्दुस्तानी” हम अपनी निष्ठा,
हिन्दी को अर्पित करते हैं ।

श्रद्धा के दो पुष्प सुमन,
भाषा जननी को समर्पित करते हैं ।

हम भारत के लोगों में,
द्रुत ज्ञान बढ़ाती है हिन्दी ।

उत्तर को दक्षिण से मिलाती,
दूरी मिटाती है हिन्दी ।



वेब 3.0 भारत को बदल रहा है

जागृति तिवारी

जब से www तस्वीर में आया है यह विकसित हो रहा है। उपयोगकर्ता सुविधा के लिए तकनीकी दिग्गजों के साथ साझा किए जा रहे डेटा के बारे में कम परवाह करते हैं। जब तक धोखाधड़ी, वित्तीय नुकसान और डेटा लीक जैसे समस्याओं से सामना नहीं हुआ, उपयोगकर्ताओं ने अपने डेटा के प्रकाशित होने पर सवाल शुरू नहीं उठाया। वेब 3.0 वेब को पारदर्शी बनाएगा।

वेब 1.0 (1994-2004)

1990 में, टिम बर्नर्स ली ने एचटीटीपी और सर्वर के साथ संवाद स्थापित करने के लिए एक संचार प्रणाली बनाई। इस नेटवर्क को इंटरनेट के नाम से जाना जाता है। उपयोगकर्ता हाइपरलिंक पर क्लिक करने पर दूसरों द्वारा बनाई गई जानकारी को पढ़ सकता है। संयुक्त राज्य अमेरिका में वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित शोध पत्र भारत में पढ़ा जा सकता है। स्थिर एचटीएमएल पृष्ठों को प्रस्तुत करने के लिए सीजीआई जैसे इंटरफेस का उपयोग किया गया था। इस इंटरनेट को केवल रीड-ऑनली वेब के रूप में जाना जाता है।

वेब 2.0 (2004- वर्तमान)

वेब 1.0 ने सर्वर से संचार करने के लिए पीएचपी, पाइथन, रस्ट या गो लैंग जैसी सर्वर-साइड भाषाओं का उपयोग नहीं किया। इससे इंटरनेट पर लिखना असंभव हो गया। 2004 के आसपास फेसबुक और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म बाजार में उभरे, जिससे उपयोगकर्ता इंटरनेट पर तस्वीरें, दृष्टिकोण और अनुभव साझा कर सकते हैं।

उपयोगकर्ता का व्यक्तिगत डेटा अमेज़ॉन और गूगल जैसे तकनीकी दिग्गजों के स्वामित्व के आधीन संग्रहित किया गया था। इस केंद्रीकृत भंडारण प्रणाली का मतलब था कि मुट्ठी भर कंपनियों के पास सभी डेटा का अभिगम था। वे इस डेटा को विज्ञापनदाताओं को बेच सकते थे। साथ ही, वे उपयोगकर्ता के व्यवहार की भविष्यवाणी करके एआई और एमएल के माध्यम से उपयोगकर्ता-प्रासंगिक डेटा प्रदर्शित करेंगे। उपयोगकर्ता अधिक समय तक अपनी वेबसाइट पर बने रहेंगे, जिससे कंपनियां अधिक विज्ञापन राजस्व उत्पन्न कर सकेंगी।

वेब 3.0

वेब 3.0 ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग करता है। यह समझने के लिए कि यह कैसे काम करता है, हमें पहले खुद को ब्लॉकचेन से परिचित कराना होगा।

ब्लॉकचैन तकनीक क्या है?

ब्लॉकचैन टाइमस्टैम्प द्वारा छांटे गए डिजिटल



बहीखाता में जानकारी संग्रहित करता है। डिजिटल जानकारी को रिकॉर्ड और साझा किया जा सकता है लेकिन संपादित नहीं किया जा सकता है। बहीखाता अपरिवर्तनीय है, जानकारी बहीखाता के अंदर ब्लॉकों में संग्रहित की जाती है। प्रत्येक ब्लॉक में एक हैश होता है। एक हैश एक फिंगरप्रिंट की तरह अद्वितीय है। हैश में एक छोटे से बदलाव का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। यह प्रत्येक ब्लॉक को अद्वितीय बनाता है।

बहीखाता में प्रत्येक प्रविष्टि को बहीखाता का उपयोग करने वाले दलों द्वारा अनुमोदित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ब्लॉकचैन नेटवर्क से जुड़ा प्रत्येक नोड उस ब्लॉक को स्वीकृत करता है जिसे बहीखाता में जोड़ा जाता है। यह ब्लॉकचैन को विकेंद्रीकृत बनाता है। एक सर्वर पर संग्रहित करने के बजाय हर किसी के पास लेनदेन की एक प्रति होती है।

चूंकि प्रत्येक नोड में प्रत्येक ब्लॉक की एक प्रति होती है, एक ब्लॉक के साथ छेड़छाड़ करने के लिए, प्रत्येक सहकर्मी नेटवर्क पर ब्लॉक को बदलना पड़ता है। तभी लेन-देन की मौजूदा श्रृंखला में ब्लॉक स्वीकार किया जाएगा। ब्लॉकचैन तकनीक सर्वसम्मति और वितरित विश्वास पर बनी है।

ब्लॉकचैन कैसे काम करता है?

1. **लेन-देन रिकॉर्ड करना:** लेन-देन कुछ ऐसा



हो सकता है, जैसे कार खरीदना या ऑर्डर भेजना। लेन-देन से संबंधित जानकारी दर्ज की जाती है। उदाहरण के लिए, जैसे एक दूध उत्पादन इकाई ने दिन का पहला ऑर्डर भेज दिया है। वे खरीदार का नाम दर्ज करेंगे, कहाँ इसे भेजा जा रहा है, दूध का तापमान क्या है, दूध की मात्रा क्या है, इसे कैसे भेजा जा रहा है, आदि।

2. **ब्लॉक में लेन-देन का निर्माण:** ब्लॉक में दर्ज किए गए लेनदेन को ब्लॉकचैन नेटवर्क द्वारा सत्यापित किया जाना बाकी है। एक ब्लॉक कई लेनदेन को स्टोर करता है। एक नया ब्लॉक बनाने के लिए पिछले ब्लॉक को सत्यापित किया जाना चाहिए।

3. **ब्लॉक को एक श्रृंखला में जोड़ना:** जब दो पक्षों के बीच लेन-देन पर सहमति होती है तो लोगों का एक समूह लेनदेन को मंजूरी देता है। इन लोगों को खंड को स्वीकार करने के लिए गणितीय समस्या को हल करने की आवश्यकता है। समस्या को हल करने पर उन्हें एक नॉन्स मिलता है। यह एक मनमानी संख्या है, जिसका उपयोग केवल उस लेनदेन के लिए किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को खनन (mining) के रूप में जाना जाता है। प्रूफ ऑफ वर्क एल्गोरिथम का उपयोग खनन के लिए किया जाता है। खनिकों को उनके काम के लिए क्रिप्टोकॉइन्स से पुरस्कृत किया जाता है।

पीयर-टू-पीयर नेटवर्क ने वित्तीय लेनदेन के लिए बैंकों जैसे तीसरे पक्ष की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। अगर आप कैब बुक करना चाहते हैं तो आपको ऊबर के जरिए ड्राइवर से जुड़ने की जरूरत नहीं है। आप खुद ड्राइवर से जुड़ सकते हैं।

ब्लॉकचैन इंटरनेट में क्रांति कैसे ला रहा है?

ब्लॉकचैन डेटा संरचना का एक तरीका है। यह उस समस्या को हल करता है जो वेब2.0 नहीं कर सका। वेब2.0 ने हमें सोशल मीडिया, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन शिक्षा दी है। एक समस्या जो हल नहीं हुई वह है विश्वास की। हमारा डेटा अमेज़ॉन, माइक्रोसॉफ्ट एज़्योर, गुगल क्लाउड प्लेटफॉर्म और आईबीएम क्लाउड जैसे तृतीय-पक्ष सर्वरों पर केंद्रीकृत क्लाउड सिस्टम स्टोरेज में संग्रहित है। सर्वर में संग्रहित होने की वजह से हमारे डेटा पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता है।

वेब3.0 हमारे इंटरनेट का उपयोग करने के तरीके को नहीं बदलेगा। यह डेटा को संग्रहित करने के तरीके की संरचना को बदल देगा। पीयर टू पीयर डेटा के स्वामित्व की शक्ति वापस अपने हाथों में देता है। हम तय करते हैं कि हम किस डेटा को दूसरों को ट्रैक करना चाहते हैं और क्या निजी रखना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, जैसे कि आप चाहते हैं कि यात्रा करने वाली कंपनियाँ आपके यात्रा विवरण को ट्रैक करें, जैसे-आप कहाँ जाते हैं, परिवहन का पसंदीदा तरीका, और आप कहाँ ठहरते हैं, लेकिन हो सकता है कि आप अपने खरीदारी विवरण को निजी रखना चाहें।

वेब 3.0 से भारत कैसे लाभान्वित हो सकता है?

भारत कृषि प्रधान देश है। किसी भी तकनीक को तब तक सफल नहीं कहा जा सकता जब तक उससे किसानों को लाभ न हो। वेब3.0 खेती की बहुत सी समस्याओं का समाधान कर सकता है। एक किसान को जमीन चाहिए। वह जमीन हमेशा किसान की अपनी नहीं होती है। उन्हें कृषि गतिविधियों के लिए पैसे की जरूरत होती है। पैसे के लिए वे जमीन गिरवी रखते हैं। कई बार धोखाधड़ी से यह जमीन हड़प ली जाती है। एक बार जब कागज पर एक नया नाम आ जाता है तो हम केवल यह जानते हैं कि वर्तमान मालिक कौन है। हम नहीं जानते कि पिछला मालिक कौन था। वेब3.0 में डेटा बैकट्रैक किया जा सकता है, जिससे बहुत से भूमि धोखाधड़ी को रोका जा सकता है।

बाजार में पहुंचने से पहले कृषि उपज का कई हाथों से आदान-प्रदान होता है। मांस, डेयरी उत्पाद, दालें, सूखे मेवे और सुखाये हुए खाद्य पदार्थ जैसे खराब होने वाले सामानों को कोल्ड स्टोरेज में रखा जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसार, प्याज की 30% से 40% फसल कोल्ड स्टोरेज में नष्ट हो जाती



है, जिससे हर साल कीमतों में बढ़ोतरी होती है। वेब3.0 के जरिये विक्रेता खाद्य पदार्थ का तापमान और इसके डेटा से छेड़-छाड़ नहीं कर सकता।

टैगबॉक्स के सीईओ आदर्श कुमार ने एक बयान में कहा, “रसोई, खुदरा स्टोर या गोदामों के लिए, कंपनियां अभी भी स्थानीय कर्मचारियों पर निर्भर हैं।” वे नियमित रूप से चिलर, फ्रीजर या ठंडे कमरे के तापमान की निगरानी करते हैं और इसे ऑडिट उद्देश्यों के लिए एक रजिस्टर में रिकॉर्ड करते हैं। यह विधि मैनुअल त्रुटियों, डेटा रिकॉर्डिंग अंतराल, डेटा हानि, या इससे भी बदतर, डेटा छेड़छाड़ के लिए प्रवण है। किसी भी गुणवत्ता-संचालित संगठन को अपने पोर्टफोलियो में प्रत्येक कोल्ड चेन संपत्ति की स्वचालित, केंद्रीय नियंत्रण-टॉवर दृश्यता प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए। कृषि वस्तुओं के बाजार में आने के बाद उनकी उत्पत्ति का पता लगाना मुश्किल है। प्रत्येक वितरण बिंदु पर किस कीटनाशक का उपयोग किया गया था, कितनी मात्रा में, तापमान क्या था, और उपज की स्थिति, को रिकॉर्ड करने का कोई सुसंगत तरीका नहीं है। डेटा के साथ छेड़छाड़ बीमा दावों के लिए डेटा आसान हो जाता है, और इसे वर्तमान प्रणाली में वापस खोजने का कोई तरीका नहीं है।

वेब3.0 केवल डेटा संरचना ही नहीं है, यह

मशीन लर्निंग, आईओटी और क्वांटम कंप्यूटिंग के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एक संयोजन है। वेब3.0 बेहतर सेवाओं और सुरक्षा का वादा करता है और लोग बेहतर सेवाओं की ओर रुझान करेंगे। प्रौद्योगिकियां तेजी से बदलती हैं। यदि आप इसके अनुकूल नहीं होते हैं, तो आप अप्रचलित होने का जोखिम उठाते हैं।

निष्कर्ष

ट्विटर के संस्थापक जैक डोर्सी कहते हैं, “बड़े उद्यम वित्त निगम, वेब 3.0 आंदोलन के मालिक हैं, उपयोगकर्ता नहीं”। हाथ बदल जाएंगे लेकिन अभी भी कोई और डेटा का मालिक होगा। वेब3.0 को तेज कंप्यूटिंग शक्ति और उच्च तकनीक वाले सीपीयू की आवश्यकता होगी। बिटकॉइन, एथेरियम और क्रिप्टोकॉर्सेसी कार्बन फुटप्रिंट को पीछे छोड़ते हुए बहुत अधिक ऊर्जा की खपत करते हैं।

वेब3.0 एक दोधारी तलवार है। इंटरनेट में बहुत सारी नकली जानकारी और स्पष्ट डेटा होगी जिसे कोई भी डिलीट नहीं कर सकेगा। वेब3.0 को विनियमित करना एक चुनौती बन सकता है। एक नई तकनीक में बदलाव करने में समय लगता है और योजना आवश्यक है। वेब3.0 को अभी लंबा सफर तय करना है।





हाँ, वो एक नारी है

प्रियंका मोंडे

वो बहुत सहनशील है
वो घर को घर बनाती है
कई कर्तव्यों को साथ-साथ निभाती है
जो हमपर हरदम कितना प्यार लुटाती है
हाँ, वो मेरी माँ है

वो बहुत खूबसूरत है
वो बहुत नटखट और मासूम है
पूरे घर में खुशियाँ बिखेरती है
हाँ, वो मेरी बेटी है

वो कलाई में मेरे हर बरस राखी बांधती है
मुझे चिढ़ाती है, लड़ती है
पर दिल से मेरे अच्छे के लिए सदा दुआएँ करती है
हाँ, इतनी अच्छी मेरी बहन है

वो मेरे दिल के काफी पास है
जिससे हर सुख-दुःख साझा कर लेते हैं
जो हमेशा हाथ पकड़ कर चलने को तैयार रहती है
हाँ, वो मेरी जीवन संगिनी है

वो कई रंगों में
जीवन में खुशियाँ बिखेरती है
उनसे ही सावन की बारिश
होली, ईद, दिवाली है
वो है तभी जीवन पूर्ण है
हाँ, वो एक नारी है
हाँ, वो एक नारी है



वर्चुअल रियलिटी

सुश्री मनिषा पानसरे

एक ऐसी तकनीक है जिसमें एक कृत्रिम वातावरण बनाकर इसे बिल्कुल असली वातावरण की तरह हमारे सामने पेश किया जाता है। असल में यह एक आभासी दुनिया होती है जो बिल्कुल असली दुनिया की तरह प्रतीत होती है। यहां पारंपरिक स्क्रीन की तरफ देखने की बजाय, उपयोगकर्ता इसमें पूरी तरह से डूब जाता है और 3D दुनिया से इंटरैक्ट करता है। इसके इस्तेमाल के दौरान उपयोगकर्ता खुद को इस आभासी दुनिया में मौजूद होना महसूस करता है और इसमें होने वाले गतिविधियों के साथ इंटरैक्ट भी कर सकता है।

वर्चुअल रियलिटी का इतिहास

वर्चुअल रियलिटी की खोज सबसे पहले मार्टिन हैलिंग ने 1950 में की थी। उन्होंने बूथ के रूप में एक वीआर मशीन सोरमा बनाकर शुरुआत की, जिसने वीडियो, ऑडियो, गंध और यहां तक कि हवा जैसे वायुमंडलीय प्रभावों के साथ सभी इंद्रियों को उत्तेजित किया।

इसके बाद 1968 में इवान सदरलैंड और बॉब स्प्राउल के द्वारा 'सोर्ड ऑफ डैमोक्लस' नामक पहला हेड माउंटेड डिस्प्ले बनाया। इसके बाद के दशको में नासा और मिलिटरी के समेत और कई कंपनियों के द्वारा कई वीआर डिवाइस की रचना हुई।

1994 में वीपीएल रिसर्च नामक कंपनी ने पहली बार वीआर हेडसेट को मार्केट में बेचा। इस टेक्नोलॉजी को वीपीएल रिसर्च कंपनी ने वर्चुअल रियलिटी नाम दिया। 1990 के दौरान निनटेंडो और सेगा जैसी गेमिंग

कंपनियों ने वीआर को बढ़ावा दिया। उन्होंने बड़े वीआर मशीन और हेडसेट भी बनाये जिसे दुनिया भर में इस्तेमाल किया गया।

वर्चुअल रियलिटी के प्रकार

इमर्सिव वीआर

इसमें कंप्यूटर द्वारा 3 डी स्पेस का निर्माण किया जाता है। जिसके लिए स्टीरियो स्कोपिक गॉगल्स का उपयोग किया जाता है। हाथ की गतिविधियों से डेटा दस्ताने (विशेष प्रकार के दस्ताने) कंप्यूटर से उत्पन्न छवि को चश्मे के छोटे पर्दे पर दिखाते हैं। वर्चुअल रियलिटी का इस तरह का उपयोग अंतरिक्ष यात्रियों और विमान के पायलट को शिक्षा देने के लिए किया जाता है।

डेस्कटॉप वीआर

यह टेक्नोलॉजी प्रौद्योगिकी तकनीक के क्षेत्र में नई उपलब्धि है। जिसमें कंप्यूटर डेस्कटॉप का प्रयोग किया जाता है और बड़ी स्क्रीन पर उपयोगकर्ता द्वारा कार्य किया जाता है। यानी कंप्यूटर डेस्कटॉप की छोटी स्क्रीन को किसी बड़े मॉनीटर का उपयोग किये बिना भी बड़ी विजुलाइजेशन प्रयोगशाला में किया गया था।

ऑगमेंटेड रियलिटी

सिर्फ ऑगमेंटेड रियलिटी से ही संभव बन सकता है। वर्चुअल रियलिटी को अनुभव करने के काम आने वाले उपकरण वर्चुअल रियलिटी कम्प्यूटर-निर्मित आभासी

दुनिया है, जिसे कुछ खास वर्चुअल रियलिटी उपकरणों (वीआरई) की मदद से अनुभव करवाया जाता है। इन खास उपकरणों की मदद से हमारा मस्तिष्क आभासी दुनिया को वास्तविक मानकर अनुभव कर पाता है।

एचएमडी (हैड माउंटेड डिस्प्ले)

यह उपकरण एक मोटरबाइक के हेलमेट की भांति होता है, जिसमें दो छोटी स्क्रीन के साथ स्टीरियो स्पीकर लगे रहते हैं और बाहरी रोशनी को अंदर आने से रोकने का पूरा बंदोबस्त किया होता है। दोनों ही स्क्रीन एक 3डी इमेज बनाती है, जो प्रयोक्ता के मूवमेंट के हिसाब से अपना आकार रूप बदलने में सक्षम होती है। एचएमडी में बिल्ट-इन एक्सेलेरोमीटर या पोजिशन सेंसर लगे होते हैं, जो सिर की हलचल को पकड़ते हैं और आभासी वातावरण को इसी अनुसार अनुकूल होने में मदद करते हैं।

इमर्सिव कक्ष

एचएमडी के अलावा एक आभासी कमरा तैयार किया जाता है। इस कक्ष की दीवारें आंशिक-पारदर्शी होती हैं, जिनके पीछे से 3डी ग्राफिक्स प्रोजेक्ट होते रहते हैं। यहाँ पर प्रयोक्ता को हेलमेट नुमा एचएमडी पहनने की जरूरत नहीं पड़ती है, मगर एक 3डी चश्मा जरूर पहनना पड़ता है— फ्लाइंट सिमुलेशन में इस तकनीक का इस्तेमाल करते हैं।

डेटाग्लोब्स (इनपुट उपकरण)

ये इनपुट उपकरण कहलाते हैं। इनकी मदद से प्रयोक्ता को वास्तविक अनुभव कराने में आवश्यक डेटा तथा मदद मिलती है। डेटाग्लव उपकरण को हाथ में पहना दिया जाता है, जो कि सेंसर युक्त होता है। जैसे ही प्रयोक्ता किसी वस्तु पर अंगुली रखता है या फिर छूता है तो दिए गए दबाव के आधार पर इनपुट निर्मित होता है, जिसके अनुसार आभासी वातावरण अनुकूल होता है। इस डिवाइस में फाइबर ऑप्टिक केबल का उपयोग होता है।

भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में वर्चुअल रियलिटी का इस्तेमाल:

सैन्य क्षेत्र: सैन्य क्षेत्र में वर्चुअल रियलिटी एक अहम भूमिका निभा रही है। प्रशिक्षण के दौरान ये वाहनों की बनावट से लेकर सैन्य युद्ध के अभ्यास कराने में बेहद मददगार साबित हुआ है। देखा जाए तो जो सैनिक वर्चुअल रियलिटी प्रशिक्षण से गुज़रे हैं। वे सामान्य सैनिकों की तुलना में ज्यादा सक्षम पाए गए हैं।

चिकित्सा क्षेत्र—: वर्तमान में वर्चुअल रिएलिटी का उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में होना अति आवश्यक हो गया है, क्योंकि इसके माध्यम से डॉक्टर किसी भी रोगी का उपचार यानी ऑपरेशन रोगी को बिना जोखिम में डाले आसानी से कर सकता और वर्चुअल रियलिटी के द्वारा किए गए उपचार सफल भी हुए हैं।

शिक्षा प्रशिक्षण क्षेत्र : शिक्षा क्षेत्र में भी वर्चुअल रियलिटी का अहम योगदान होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। भविष्य में पूरे विश्व में वर्चुअल रियलिटी की तकनीक द्वारा ही बेहतरीन ढंग से शिक्षा प्रधान की जाएगी। हालांकि अभी इस तकनीक का प्रयोग केवल जापान में ही हो रहा है।

रियल एस्टेट संपत्ति : रियल एस्टेट संपत्ति में भी ये ऐसे ही फायदा दे सकता है जैसे सफर में हमने होटलों के बारे में बात की थी। वीआर घरों और व्यावसायिक स्थानों दोनों के लिए काम करेगा। किसी घर या ऑफिस दुकान को खरीदने या उसके बनने से पहले ही उसके प्लान के मुताबिक वीआर तकनीक से घर के रूप, आकार, दिखावट के बारे में अच्छी तरह से पता लगाया जा सकेगा।

इसके अतिरिक्त कई अनगिनत क्षेत्र हैं, जहां वीआर तकनीक का उपयोग दुनिया बदल सकता है जैसे एयरोस्पेस, कला, विमानन, फैशन, पत्रकारिता, खेलजगत, कानूनी संस्था, मैनुफैक्चरिंग, मार्केटिंग आदि।



श्री एवं पुरुष एक दूसरे के अनुपूरक



सविता जैन

राह में कांटे बेशक हैं मेरे
दूर करने का सामर्थ्य भी है मुझमें
हूं सक्षम मैं कुछ भी कर गुजरने को
नहीं हूं कमतर किसी से मैं
अकेले ही हावी हूं तंग दिल समाज पर मैं ।

पर तुम्हारी बराबरी की भागीदारी ने मेरा
और सशक्तीकरण किया है
मेरे अंतःकरण को सदृश कर और प्रबल किया है
खूबसूरती बढ़ाई है रिश्ते की हमारे
जब जब रूह में तुमने मेरी झांका है
साथ कदम मिलाकर चलते हो मेरे
नारी की गरिमा बढ़ाते हैं ।

क्योंकि तुम बराबरी का प्रतिमान हो
और मैं तुम्हारी हमकदम, बराबर की हकदार
आशियां को सींचा संग मिलकर
एक दूजे का हाथ थामकर दिवाली मनाई है
मेरे अस्तित्व को गौरवान्वित किया है
मेरे एहसासों की कद्र करके तुमने ।

यह दूरी मिटाई है तुमने
जन्म भर साथ निभाने के वादे करके
समझते ही नहीं अर्धांगिनी अपनी
मानते हो मन से, कर्म से और वचन से अपनी
कहते ही नहीं समरूपा मुझे
दिखाते हो तुल्य बनकर मेरा ।

जानती हूं साथ खड़े होंगे मेरे
जब जब इज्जत छलनी होगी मेरी,
जब जब शूल गिरेंगे मुझ पर
और खंडित होगी हस्ती मेरी

हाथ पकड़ तुम मेरा शत्रु से भिड़ जाओगे
मुझे और मजबूत करने, तुम भी रण क्षेत्र में आओगे ।

सृष्टि के आदि से अब तक
स्वीकारि है तुमने मेरी श्रेष्ठता
कभी वचनों से फिरे नहीं तुम
घर आंगन को रोशन कर नित दिन
अपने हाथ से चाय बना पिलाते हो
सीना चौड़ा करते हो हर पल मेरा
जब साथ में मेरे राग मल्हार गाते हो
तुम हो तो मैं हूं जब तुम ये दृढ़ता से कह जाते हो ।

सच ही तो कहा तुमने, और यही है माना मैंने
कि हम तुम जीवनगाड़ी के हैं समान चक्र
पृथ्वी का संतुलन हम से ही तो है
और शायद यही परिभाषा है बराबरी की
मिलकर एक सुंदर जहान बनाने की
जहां नारी को भी साथ कदम मिलाने का अधिकार मिले
खुद के होने का उसे एहसास मिले ।

युग बदल रहा है, आज दस्तक दे रहा है
आज मानव नारी के साथ खड़ा है
शान, बान, आन है उस सबला की
उसकी अनुभूतियों की, उसकी प्रतिष्ठा की और उसके
स्वाभिमान की ।

आओ मिलकर हम यह प्रण करें कि
न मैं तुमसे कुछ ज्यादा न तुम मुझसे कुछ कम रहो
मेरे परों और तुम्हारी उड़ानों पर पहरे न रहें
हो जगह ऐसी की कुछ भी न हो छिपाने को पर
साथ एक-दूजे के एकांतता भी जगह पाती रहे
और हमारे रिश्ते को यूं ही जीवन भर महकाती रहे ।





संदीप

सरकारी कार्यस्थल में मानसिक स्वास्थ्य

2017 में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने जोर देकर कहा था कि भारत एक संभावित-मानसिक स्वास्थ्य महामारी का सामना कर रहा है। कोविड-19 की शुरुआत के बाद से स्थिति और खराब हो गई है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार, 2021-2030 के बीच मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति के कारण आर्थिक नुकसान 1.03 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है।

कार्यस्थल और घर पर मानसिक स्वास्थ्य को एक रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि दोनों जगह इंसान एक ही है। खराब मानसिक स्वास्थ्य के कई कारण हैं। कुछ कारण हैं— खराब शारीरिक स्वास्थ्य, खराब वित्तीय स्थिति, नौकरी बर्नआउट, मादक द्रव्यों का सेवन, परिवार में झगड़े, कार्यस्थल या घर पर मौखिक या शारीरिक हमले इत्यादि। समाधान दो प्रकार के हो सकते हैं। एक है परोक्ष रूप से समस्या से निपटना जैसे कि स्वस्थ आहार, नियमित व्यायाम, उचित नींद और एक अच्छा सामाजिक नेटवर्क। परोक्ष दृष्टिकोण में एक ऐसा वातावरण बनाने में मदद मिलती है जो आपको अपने सर्वोत्तम कार्य करने की अनुमति देता है। प्रत्यक्ष दृष्टिकोण में सीधे मुद्दे का सामना करना शामिल है। आम तौर पर, दोनों दृष्टिकोण एक साथ उपयोग किए जाते हैं।

इस लेख में, हम वार्तालाप कौशल और संघर्ष समाधान कौशल पर ध्यान केंद्रित करेंगे। संघर्ष को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि यूनेस्को की प्रस्तावना कहती है, चूंकि युद्ध लोगों के दिमाग में शुरू होता है, लोगों के दिमाग में ही शांति की नींव का निर्माण किया जाना चाहिए।

“अहिंसक वार्तालाप” के चार घटक हैं। ये हैं – अवलोकन, भावनाएँ, आवश्यकताएँ और अनुरोध। सबसे पहले, हम कहते हैं कि हमने क्या देखा है। अवलोकन बिना किसी निर्णय या मूल्यांकन के किया जाना चाहिए। इसके बाद, हम बताते हैं कि जब हम इस क्रिया को देखते हैं तो कैसा महसूस करते हैं। तीसरा, हम कहते हैं कि क्या हमारी जरूरतें, मूल्य, इच्छाएं आदि हमारी पहचान की गईं की गईं भावनाओं से जुड़ी हैं। अंत में, हम अपने जीवन को समृद्ध बनाने के लिए वांछित कार्रवाई का अनुरोध करते हैं। हमें इन चार घटकों के माध्यम से सहानुभूति से सुनना चाहिए। अच्छा वार्तालाप कौशल संघर्ष समाधान कौशल का हिस्सा है।

संघर्ष किसी अन्य व्यक्ति की पसंद और स्वभाव से परिचित होने से इन्कार करने या मतभेदों को समझने के बाद स्वीकार करने की अनिच्छा का परिणाम है। रविंद्रनाथ टैगोर ने कहा कि समस्या यह नहीं है कि सभी मतभेदों को कैसे मिटाया जाए, बल्कि यह है कि सभी मतभेदों के साथ रहते एकता कैसे कायम की जाए। संघर्ष हैं और रहेंगे। शांति शांतिपूर्ण तरीकों से संघर्ष को संभालने की क्षमता है। यह मन की स्थिति है, परोपकार, विश्वास और न्याय के लिए एक स्वाभाव है। सवाल यह है कि संघर्ष को संभालने की क्षमता कैसे विकसित की जाए?

सबसे पहले, हमें कुछ बुनियादी सच्चाइयों को समझने की जरूरत है। दुनिया कैसे काम करती है, इसका हर किसी का एक अनूठा अनुभव है। एक व्यक्ति अपने अनुभव, ज्ञान, जरूरतों और सपनों के आधार पर

सोचता या व्यवहार करता है। आपका अनुभव दुनिया के काम करने के तरीके का 10% से भी कम हो सकता है लेकिन आप कैसे काम करते हैं इसका 80% हिस्सा हो सकता है।

एक बुनियादी बात जो लोग जानते हैं लेकिन लागू नहीं करते हैं वह यह है कि जब तक आप दोनों पक्षों की दलीलें नहीं सुन लेते तब तक किसी निष्कर्ष पर न पहुंचें। कभी-कभी लोग जानकारी की कमी के बारे में अपनी चिंता को कम करने के लिए कहानी बनाते हैं। उनके पास जो जानकारी है और दुनिया के उनके अनुभव हैं उस में यही कहानी फिट बैठती है। अच्छा वार्तालाप या संघर्ष समाधान कौशल होने के लिए एक संदेह होना कि आपका दृष्टिकोण गलत हो सकता है, जरूरी है। संघर्षों को हल करने के लिए आवश्यक गुण हैं: शांत रहना, ईमानदार और स्पष्ट होना, और दूसरों के बारे में साकारात्मक होना।

संघर्षों को हल करने के लिए कुछ सलाह हैं :

- संवाद में, इरादा वकालत करने का नहीं बल्कि पूछताछ करने का है; बहस करने का नहीं बल्कि विकल्प तलाश करने का है; मनवाने का नहीं बल्कि सत्य खोजने का है।
- दूसरों के बारे में नहीं, अपने लिए बोलें।
- लोगों को समस्याओं से अलग करें।
- बात करने के लिए सही समय और स्थान चुनें।
- विरोधियों के लिए चेहरा बचाने के विकल्प रखें।

निष्कर्ष के लिए हम विवियन एमिस को उद्धृत कर सकते हैं, "सभी समस्याएं, हालांकि आपके बाहर दिखाई दे रही हैं, आपके भीतर हल होंगी।" अगर मुझे इस विषय को एक शब्द में समाप्त करना है तो मैं कहूंगा कि "जिज्ञासा" अकेले अच्छे वार्तालाप और संघर्ष समाधान कौशल विकसित करने के लिए पर्याप्त है जो अच्छी मानसिक स्वास्थ्य स्थिति को प्राप्त करने और बनाए रखने में मदद करेगा।



घर की सारी परेशानियों को,
खिलौनों की तरह बटोर लेता है,
पिता आंसू दिखा नहीं सकता,
इसलिए वो छुप के रो लेता है।





अश्वनी कुमार तिवारी

गंगा स्नान

माँ और बीवी को लेकर चला एक साथ
सीधा—साधा भोला—भाला प्रेम प्रकाश
माँ बोली, काशी जाकर हम गंगा नहायेंगे
अगले साल तेरे पिता को भी साथ लाएंगे
मगर, डर लगता है मुझको गंगा नहाने से
कहीं तू हो न जाये अनाथ मेरे डूब जाने से
पर, तनिक सोचो बेटा.....

गर, तेरी बीबी भी लगे डूबने मेरे साथ
पहले जायेगा किसे बचाने? उसके या हमारे पास!!!
माँ की ममता ने उसे टटोला
मगर बीवी का मुख देख वह कुछ न बोला
लगा सोचने, पर उसे कुछ सूझ न आई
अब तो मर गए, आगे कुआं पीछे खाई

तभी बीवी ने कहा.....
हो गए तुम क्यों इतने उदास?
ध्यान से सुनो!!! मैं कहती हूँ एक बात
मुझे छोड़ देना, मेरी तुम परवाह न करना
बीवियां और भी मिलेंगी, पहले तुम मां को बचाना
हमारा क्या, हम मौत से भी कुछ देर जूझ जायेंगे
मुझे तो बचाने हजारों नदी में कूद जायेंगे ।



भारत@100: नागरिक चार्टर/ राजपत्र/विशेषाधिकार



एम. शशिकुमार

इस वर्ष भारत औपनिवेशिक शासन के बाद से अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है। इन 75 वर्षों में हमने प्रौद्योगिकी, कृषि, अंतरिक्ष अन्वेषण एवं ऐसे ही अन्य कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एक लंबा सफर तय किया है। हम शीघ्र ही एक ट्रिलियन डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। आज हर किसी के लिए आत्मनिर्भर भारत वर्तमान मंत्र बना हुआ है। आज हम गर्व से अपने भव्य मोबाइल फोन अर्थबोध की घोषणा करते हैं तथा देश के लिए एक ठोस मोबाइल व्यवस्था शुरू हो गई है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय मूल के लोग दुनिया के प्रमुख तकनीकी दिग्गजों को दिशा दे रहे हैं। आईटी सेवाओं के निर्यात से आज हमारा निर्यात काफी फल-फूल रहा है और कई सारे किशोरों के सपने को परिभाषित कर रहा है। हम किसी भी विकसित देश की तरह हवाई अड्डों और हवाई यात्रा के अवसरों पर गर्व कर रहे हैं। ऐसी गौरवशाली परंपरा में हम कई अन्य अत्याधुनिक सुविधाओं को सगर्व जोड़ सकते हैं।

निश्चित रूप से, यह गौरवशाली यात्रा है। लेकिन, इन विकासों का एक विपरीत पक्ष भी है। हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा, गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करता है... छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल जाने को नहीं मिलता... हमारे बीच जीवन-शैली संबंधी रोगों का बढ़ता अनुपात...। बिगड़ते मौसम प्रतिमान आमतौर पर "जलवायु परिवर्तन" और "ओजोन परत के ह्रास" के तहत छलावरण करते हैं ... कई सामाजिक मुद्दे बार-बार सामने आते हैं। जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण पर पुनर्विचार

करने की बात करें, तो इसे हाल ही में आई महामारी द्वारा दृष्टिगत किया गया था।

यह महामारी अप्रत्याशित रूप से आई थी; शुरुआती दिनों में, कई सारे ऐसे थे, जो इसकी उत्पत्ति और इसके सीख देते प्रभावों के बारे में मननशील थे। हमने प्रकृति के साथ रहने की बात की, हर जीव के साथ संसाधनों को बांटने की बात की। आज महामारी की भयावहता तो कम हो रही है, लेकिन हम पहले ही इन विचारों को नजरअंदाज कर चुके हैं। मोटर वाहनों की संख्या में तेजी से वृद्धि, विशाल निर्माण कार्य जैसे कि फ्लैट, भवन, सड़क, पुल, और इसी तरह के अन्य निर्माण कार्य प्रगति पर हैं। हम अपने पर्यावरण के प्रति जो क्रूरता दिखाते हैं (प्लास्टिक के उपयोग को देखें, आदि), वह हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए दुनिया की बेहद डरावनी तस्वीर पेश कर रही है। यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ी के भारत@100 जैसी महत्वपूर्ण समयावधि पर गंभीरता से विचार करें।

मुझे एक मलयालम गीत याद है, जो इस सवाल से शुरू होता है कि क्या आने वाली पीढ़ी यहां (पृथ्वी पर) रह पाएगी? आज से 20-30 वर्ष बाद हमारी पीढ़ी हमारे बारे में क्या सोचेगी (कि हमने उनको क्या दिया)?

हम प्रकृति का दोहन करते हुए, उन पर कब्जा करते हुए, झीलों, नदियों, नालों आदि जैसे प्राकृतिक स्रोतों का अस्तित्व मिटा रहे हैं। मैंने देखा है कि हम जहां रहते हैं, वहां हमारे घर के पास गिरती वर्षा की हर बूंद, कंक्रीट संरचनाओं से होकर सीधे समुद्र की ओर जाना

चाहती है। हम जल को जमीन में सोखने और धरती को ठंडा करने के लिए बहुत ही कम जगह छोड़ते हैं। कंक्रीट से होकर बहता जल, अपने आस-पास यदि कोई पौधा है, तो उसे ठीक से जल-ग्रहण करने का मौका भी नहीं देता और तेजी से निकल जाता है। यही कारण है कि बारिश होते ही तापमान बढ़ जाता है। आज हम बाढ़ और ऐसी प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती संख्या और गंभीरता के भी साक्षी हैं। दूसरी ओर, पानी की कमी के चलते सूखे की गंभीरता भी बढ़ रही है। गर्मी आते ही कई जगहों पर पीने के पानी की भी किल्लत हो जाती है। जल एक ऐसा प्राकृतिक संसाधन है जो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जिससे हमें किसी भी प्रकार की कमी महसूस करने की आवश्यकता नहीं है। हम पहले से ही बोटलबंद जल के लिए भुगतान कर रहे हैं; क्या यह घरों के लिए भी आवश्यक बनने की ओर अग्रसर है?

पर्यावरण का क्या? कुछ चुनिंदा क्षेत्रों में बिखरे हुए प्रयासों के बावजूद, प्लास्टिक का खतरा अभी भी जारी है। प्लास्टिक और इस तरह के कचरे से भरे पेट वाली मरी हुई मछलियों और व्हेल की दिल दहला देने वाली तस्वीरें अभी भी हमारे हृदय को नहीं पिघला पाई है, हां इन्हें कुछ सहानुभूति-टिप्पणी मिली हैं या इन्हें सोशल मीडिया में साझा किया गया है। उत्पादन कम करना या खपत कम करना या पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करना उन विकल्पों में से एक है जिन पर अभी भी विभिन्न क्षेत्रों में लंबे समय से बहस चल रही है। विभिन्न कोनों में, लोग प्लास्टिक बैग के लिए बायोडिग्रेडेबल सामग्री जैसे विकल्पों की ओर जा रहे हैं। लेकिन हमें अभी लंबा सफर तय करना है।

यहां तक कि हम जिस हवा में सांस ले रहे हैं, वह भी अब चिंता का विषय है। मुझे याद है कि मुंबई के कई इलाकों में वायु की गुणवत्ता इतनी खराब हुआ करती थी कि हम उन इलाकों से बस या ऑटो की सवारी करके बीमार महसूस किया करते थे। सीएनजी आधारित वाहनों के आने और सड़कों के चौड़ा होने से यह खतरा

काफी कम हो गया है। लेकिन हमारे वाहनों की संख्या उन दिनों की संख्या से कई गुना अधिक बढ़ गई है, और अब हम फिर से उसी स्थिति में वापस आ गए हैं। कई टियर-II और टियर-III शहरों के हाल तो और भी खराब हैं। गलत ड्राइविंग इन स्थितियों को और भयावह बना रही है।

शिक्षा के बढ़ते अवसरों के बावजूद, हमारी जिम्मेदारियों से संबंधित शिक्षा अभी भी बहुत खराब स्थिति में है। कारों, बसों और ट्रेनों में यात्रा करने वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल की हुई पानी की बोतलें, रैपर, बचा हुआ खाना कहीं भी फेंकना एक आम बात हो गई है। अच्छा है कि जहाज की खिड़कियां खुली नहीं हैं, नहीं तो वहां भी लोग यही काम करते। पैदल चलने वाले या बस स्टॉप पर प्रतीक्षा करने वाले भी कोई अपवाद नहीं हैं। नगर पालिका के सफाईकर्मियों से शहर को साफ रखने की अपेक्षा करना क्यूए टीम से आपके कोड को बग-मुक्त करने की अपेक्षा करने जैसा है। दूसरी ओर, हम सभी का एक स्वस्थ रवैया, उनके प्रयासों से बढ़ कर अद्भुत काम कर सकता है। मैंने अक्सर देखा है कि अगले दिन जब वे सफाई के लिए वापस आते हैं, तो सड़क पर पर्याप्त कचरा होता है, मानो हम यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं कि उनके पास करने के लिए पर्याप्त काम हो!

इस पृष्ठभूमि में, मेरे सपनों के भारत@100 के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि हमें नीचे से ऊपर तक काम करने की जरूरत है। हमें से प्रत्येक को नागरिक बनने पर ध्यान केंद्रित करने, जिम्मेदार बनने, उत्तरदायी बनने की जरूरत है, ताकि हम जिस स्थान पर आए हैं उसे और बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हों। जीवन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सरकारी तंत्र की अपेक्षा करना – चाहे वह आपकी पंचायत / नगर पालिका या राज्य या केंद्र सरकार हो, मूर्खतापूर्ण है। जैसा कि किसी ने टिप्पणी की है, हमें इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि हम देश के लिए क्या कर सकते हैं, न कि देश हमारे

लिए क्या कर सकता है। इसका यह तात्पर्य न लगाया जाए कि इसमें सरकार की कोई भूमिका नहीं है। बिल्कुल इसके विपरीत, एक स्वस्थ राष्ट्र के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल शायद सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ हैं यानी भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थता। ये दोनों अभी भी सरकारी सुविधाओं से अधिक निजी व्यक्तियों द्वारा शासित हैं।

मेरा मानना है कि किसी की भी योग्यता के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किफायती तरीके से उपलब्ध होनी चाहिए। जहां योग्यता और प्रेरणा के संदर्भ में आवश्यकता यथार्थ हो, वहां धन, किसी का स्थान या जन्म, कभी भी बाधा नहीं होनी चाहिए। निजी स्कूल संचालकों के बीच क्रूर प्रतिस्पर्धा न केवल बच्चों के बीच बल्कि अभिभावकों के बीच भी एक बहुत ही अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल पैदा कर रही है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति सही दिशा में एक कदम है। बहुत सारे तकनीकी हस्तक्षेप लागू किए गए हैं और कई लागू किए जाने हैं। इन सभी को हमारे लक्ष्य को सुगम बनाना चाहिए। लेकिन कुछ कमियां हो सकती हैं। इस ध्येय को जमीनी स्तर पर साकार करना एक बड़ी चुनौती हो सकती है। मेरा मानना है कि ऐसे में फिर से नागरिकों को मुख्य भूमिका निभाने की जरूरत है। हमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक स्वस्थ सम्मान सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, यह न देखते हुए कि वह कैसे और कहां से प्राप्त की गई है, न कि स्कूल के नाम या शिक्षा के माध्यम से लोगों को ब्रांडेड करने की जरूरत पर ध्यान देना चाहिए। शिक्षा वह नहीं, जो परीक्षा में अंक प्राप्त करने को महत्ता दे, बल्कि शिक्षा वह हो, जो एक जिम्मेदार जानकार नागरिक बनाने पर बल देती हो।

यही हाल स्वास्थ्य सेवा का है। अस्पताल आज अत्यधिक व्यावसायिक, लाभोन्मुखी संस्थान हो गए हैं। उन्हें कमोबेश, एक विद्यालय की तरह समान आदर्श वाक्य के साथ सेवा स्थल बनने की जरूरत है:

गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा हर नागरिक के लिए एक किफायती तरीके से सुलभ हो। लोगों की दर्दनाक मौत की दिल दहला देने वाली कहानियां हैं क्योंकि आज एक इंजेक्शन की कीमत लाखों रुपये होती है, जिसे हर कोई नहीं खरीद सकता। क्या यह वास्तविक स्थिति है? अगर विद्यालय अस्पतालों की तरह लाभ के केंद्र बन गए, तो उस आने वाली अगली पीढ़ी का क्या होगा, जिनके कंधों पर भारत को इसके 100वें स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित करने की जिम्मेदारी होगी? यहाँ फिर से कहना यथोचित होगा कि समाधान विवेकवान नागरिकों में निहित होता है। भारत के अपने पारंपरिक स्वास्थ्य समाधान उच्च गुणवत्ता वाले हैं, लेकिन अफसोस कि हमने इन आयुष प्रणालियों के प्रति एक अस्वस्थ घृणा पैदा कर दी है। मैं व्यक्तिगत रूप से इस बात की पुष्टि कर सकता हूँ कि आयुर्वेद कई मामलों में एलोपैथिक समाधानों के लिए एक संगत (या इससे भी बेहतर) विकल्प हो सकता है। तकनीकी रूप से हमारे पास अस्पताल प्रबंधन प्रणालियां, ऑनलाइन रोगी रिकार्ड, टेलीमेडिसिन जैसी कई सारी सुविधाएं हैं। हमें जिन बदलावों की जरूरत है, उन्हें इन तकनीकों द्वारा सुगम बनाया जा सकता है, लेकिन इसके संचालन के लिए नागरिकों को आगे आने की जरूरत है।

भारत@100 की बात करें, तो तब यह एक डरावना चित्रण होगा, जब हम अभी जैसे काम कर रहे हैं, ऐसे ही काम करते रहे तो और जैसा कि गीत में वर्णित है, यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी डरावनी जगह होगी। महामारी के समय में किए गए प्रयासों के मद्देनजर अगर हम अपनी छवि को लेकर मंथन करें, तो इस छवि को फिर से एक नया रूप देने की जरूरत है। जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा है, "खुद में वह बदलाव बनिए, जो आप दुनियां में देखना चाहते हैं", हमें इस विचार के प्रति स्वयं कटिबद्ध होकर इसे अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है।





चंदन सेन

गुलाबी मनुहार

तुम आओ ना... जयपुर घूम जाओ ना ।
यह है छोटी काशी महान,
रंग-रंगीलों राजस्थान की शान ।
परकोटे का जहां है अदभुत जहान...
तीज, गणगौर की सवारियान
पर नज़रे गढ़ाओ ना ।
तुम आओ ना...

आते हैं नित नये महान कलाकार यहां,
सुंदर है जंतर मंतर का जहां
मकर संक्रान्ति छतों पर आकर मनाओ ना ।
तुम आओ ना...
जयपुर में घूम जाओ ना ।

हस्तशिल्प, मीनाकारी
कठपुतली, लहरिया साड़ी और खास जयपुरी रजाई
पावणा ने घणो मन भाई
चोखी ढाणी कुछ पल बिताओ ना
तुम आओ ना...
जयपुर में घूम जाओ ना ।

मिला है प्रकृति का वरदान,
एम आई रोड की सुन्दर सी मुस्कान ।
सवाई जयसिंह जी का है यह स्थान,

आकर जनवरी में लिट् फेस्ट मनाओ ना ।
तुम आओ ना...
जयपुर में घूम जाओ ना ।

अलबर्ट हॉल, बागीचों के संग
विरासत के है अदभुत रंग
गोविंद देव के दर्शन कर
गलता जी का तीर्थ पाओ ना
तुम आओ ना...

घेवर, कुल्हड़ लस्सी के संग
कर लो मिष्ठी मुख
बटोर कर गुलाबी शहर के अनगिनत सुख
देख सिटी पैलेस बेहतरीन
जहां रहती थी गायत्री देवी द क्वीन
कुछ नगीने और आभूषणों पर भी नजर घुमाओ ना
तुम आओ ना...
जयपुर में घूम जाओ ना ।

आमेर, जयगढ़ को निहार
लो हवामहल संग सेल्फी चार
इतिहास के चंद पन्ने पलटाओ ना ।
तुम आओ ना...
गुलाबी नगरी जयपुर में बस जाओ ना ।



मस्तिष्क की जिजीविषा



डॉ. प्रियंका जैन

जिजीविषा :

मस्तिष्क ब्रह्मांड की सबसे पूर्ण संरचना है। अगर चाहें तो, इसकी शक्तियाँ सूर्य की विकीर्ण किरणों के समान केन्द्रित किये जाने पर विश्व को प्रकाशमान करने में सक्षम हैं। यही जिजीविषा है – 'जीवन का लालित्य'। मस्तिष्क जीवों के केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र का नियंत्रण केन्द्र है, जिसके द्वारा कार्यों का नियंत्रण एवं नियमन होता है। इसका मुख्य कार्य शरीर के विभिन्न अंगों के नियंत्रण के साथ-साथ ज्ञान बुद्धि, तर्क शक्ति, स्मरण, विचार निर्णय, व्यक्तित्व आदि का नियमन करना है। धार्मिक और दार्शनिक दृष्टि से मन और शरीर अलग हैं, लेकिन शरीर रचना विज्ञान में प्रगति की दृष्टि से दोनों (मस्तिष्क और मानसिक स्वास्थ्य) घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। सम्भवतः यह भी एक कारण होगा कि देशभक्ति के गाने सुन कर बाजुएं फड़कने लगती है शिशु को गोद में लेने से वात्सलयमयी मुस्कान आ जाती है और वृद्धा मजबूर को देख अश्रुधारा बह निकलती है।

मानव मस्तिष्क :

तकनीकी और चिकित्सा विज्ञान से सम्बंधित होने के कारण यह विषय अपने आप में कुछ जटिल है। साथ ही यह लेख लिखते समय प्रयास किया गया है अधिकतर हिन्दी के मूल शब्दों का प्रयोग किया जाए (न कि उर्दू से उद्भूत बॉलीवुड वाली हिन्दी शब्दावली का)। संभवतः प्रारम्भ में यह कुछ कठिन प्रतीत हो सकता है। अतः इस महत्वपूर्ण विषय से जुड़े गंभीर मुद्दों पर चर्चा करने के पहले आइये कुछ रोचक

तथ्यों की झलक लेते हैं:

- 60% भाग वसा से बना मानव मस्तिष्क शरीर में 20 प्रतिशत ऑक्सीजन और रक्त का उपयोग करता है।
- लगभग असीमित भंडारण क्षमता के साथ एक वयस्क मानव मस्तिष्क का भार 1.36 किलोग्राम होता है।
- यह 25 साल की उम्र तक पूरी तरह से नहीं बनता है। उम्र बढ़ने के साथ यह छोटा होता जाता है।
- 20 के दशक के अंत तक कुछ स्मृति क्षमताओं के साथ-साथ संज्ञानात्मक कौशल का क्षरण होने लगता है।
- रीढ़ की हड्डी शरीर और मस्तिष्क के बीच संचार का मुख्य स्रोत है।



- यहां जानकारी 268 मील प्रति घंटे की प्रभावशाली यात्रा करती है।
- रेत के दाने के बराबर मस्तिष्क ऊतक के टुकड़े में 100,000 न्यूरोन्स और 1 बिलियन सिनेप्स होते हैं।
- मानव मस्तिष्क लगभग 23 वाट बिजली (एक लाइट बल्ब को बिजली देने के लिए पर्याप्त) उत्पन्न कर सकता है।
- मस्तिष्क दर्द महसूस नहीं कर सकता लेकिन यह उसे भेजे गए दर्द संकेतों की व्याख्या करता है।
- यह एक मिथक है कि मनुष्य अपने मस्तिष्क का केवल 10 प्रतिशत ही उपयोग करता है। माना जाता है कि सपने कल्पना, फाईकोलॉजिकल कारकों और तंत्रिका संबंधी कारकों का संयोजन होते हैं। वे सिद्ध करते हैं कि जब आप सो रहे होते हैं तब भी आपका दिमाग काम करता रहा होता है।
- मानव मस्तिष्क के अध्ययन में चौंकाने वाला तथ्य यह भी मिला है कि पश्चिमी और पूर्वी देशों के लोगों की तुलना में भारतीयों के दिमाग का आकार छोटा है। इस अध्ययन के अनुसार, पश्चिमी और पूर्वी देशों के लोगों की तुलना में औसत रूप से भारतीयों के दिमाग की ऊंचाई, चौड़ाई और भार में कमी पाई गई है।

और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सफल मस्तिष्क शल्य चिकित्सा के चिह्न पाषाण युग में भी पाए गए हैं, और तब से आज तक पूरे विश्व में इस रहस्यमय जटिल तंत्रिका विज्ञान पर शोध कार्य सतत हो ही रहा है।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य :

मस्तिष्क और मानसिक स्वास्थ्य बहुत निकटता

से जुड़े हुए हैं। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी ने बच्चों, युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को बहुत बुरी तरह प्रभावित किया है। यूनिसेफ की रिपोर्ट "स्टेट ऑफ द वर्ल्ड्स चिल्ड्रन-2021 ऑन माई माइंड : प्रमोटिंग, एंड केयरिंग फॉर चिल्ड्रन्स मेंटल हेल्थ" चौंकाने वाली है। इसके अनुसार मानसिक स्वास्थ्य कोरोना से भी बड़ी महामारी बन सकता है। विशेष तौर पर आम भारतीयों के मानसिक स्वास्थ्य बहुत बुरी अवस्था में पाए गए हैं, जहाँ 354 प्रतिभागियों में से तकरीबन 25% प्रतिभागी मानसिक स्वास्थ्य समस्या (डिप्रेशन, तनाव) से ग्रस्त पाए गए। भारत के 15-24 साल के बच्चों में सिर्फ 41% ने माना कि मानसिक स्वास्थ्य समस्या में उन्हें किसी की सहायता लेना पसंद है, जबकि दूसरे कुछ देशों के लिए यह आंकड़ा लगभग 83% है। मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित कठिनाईयों के कारण व्यक्ति दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में असामान्य प्रकार से व्यवहार कर सकता है। ऐसे व्यक्ति ध्यान में मुश्किल, सोने में कठिनाई, अभिभूत होने की भावना, अश्रुपूर्ण होना, विस्मृति, चिड़चिड़ापन, प्रेरणा का नुकसान, आत्मविश्वास का नुकसान, चिंता इत्यादि जैसी असामान्यता का अनुभव कर सकते हैं। इसके अधिक गंभीर मामलों में लोग स्वयं को नुकसान पहुंचा सकते हैं या आत्मघाती विचार कर सकते हैं। इन मामलों में जितनी जल्दी हो सके सहायता करना आवश्यक है।

तकनीकी और मस्तिष्क विज्ञान :

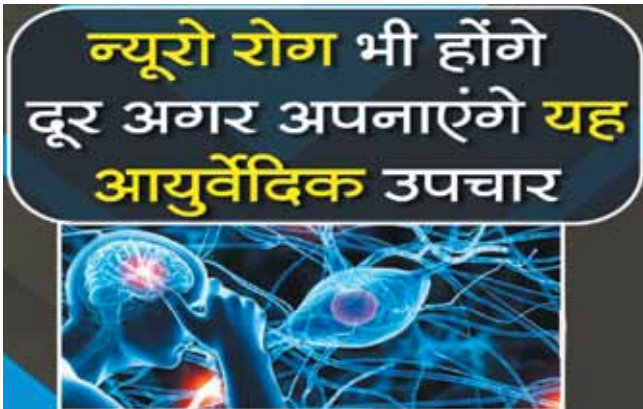
एक दृष्टि इस ओर भी डालते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विकारों में तकनीक द्वारा कैसे सहायता की जा सकती है? बहुत सारे सामान्य और व्यावहारिक तकनीकी उदाहरण हैं जो दिन-प्रतिदिन के संचालन में हम अनजाने ही उपयोग करते हैं। टू-डू लिस्ट (To do) जैसे ऐप्स का उपयोग उन विचारों और कार्यों को व्यवस्थित करने में मदद करता है, जिन्हें आपको पूरा करने की आवश्यकता होती है। इसे कागज के बजाय किसी ऐप में जोड़कर, आप मददगार रिमाइंडर सेट

कर सकते हैं। अधिकांश सामान्य प्लेटफार्मों (गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, एप्पल) में उनके कैलेंडर के संस्करण होते हैं जो समय पर काम की सुनिश्चितता में सहायक होते हैं। वॉयस कमांड (voice command) का उपयोग कर आप इन्हें ईमेल प्लेटफॉर्म से कनेक्ट कर सकते हैं। अपॉइंटमेंट, फ़्लाइट का समय और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी के लिए स्मार्ट डिवाइस आपको एक त्वरित वॉयस कमांड सेट करने और बाद में एक श्रव्य रिमाइंडर (speech reminder) प्राप्त करने की अनुमति देते हैं। अधिक विस्तृत कार्य के लिए माइंड मैपिंग सॉफ्टवेयर बड़े कार्यों को अधिक प्रबंधनीय बनाने में सहायक होता है।

मात्र प्रौद्योगिकी मानसिक स्वास्थ्य के सभी पहलुओं के लिए एक समाधान नहीं है। इन चुनौतियों को प्रबंधित करने में घनिष्ठ मित्र, परिजन, समाज और चिकित्सा अधिकारियों के संगठन भी आवश्यक है। साथ ही भावनात्मक/सामाजिक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के उपयोग से भावनाओं को परिस्थिति के अनुसार नियंत्रित कर पारस्परिक संबंधों का विवेकानुसार प्रबंधन करने की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता होती है।

न्यूरो-संज्ञानात्मक व्यवहार एआई कंप्यूटिंग :

इसकी बहु-आयामी प्रकृति (मल्टी डायमेंशनल प्रकृति) के कारण मस्तिष्क विज्ञान के लिए कंप्यूटिंग को न्यूरो-संज्ञानात्मक व्यवहार एआई (Neuro Cognitive



Behavioral AI) कंप्यूटिंग माना जा सकता है।

इसमें मस्तिष्क की रचना विज्ञान, कार्य, रोग, चिकित्सा, व्यवहार और सहायक तकनीक के रूप में उपयोगिता के बारे में कार्य किया जाता है।

हाल ही में, भारतीय वैज्ञानिकों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से एक ऐसा उपकरण (3) विकसित किया है, जो मानव मस्तिष्क की ज्ञान से संबंधित क्रियाओं की नकल करने में सक्षम है। यह एआई आधारित न्यूरोमॉर्फिक उपकरण मस्तिष्क से कुशल कंप्यूटिंग क्षमता प्राप्त कर मानव मस्तिष्क के ढांचे की नकल कर सकता है। इसके साथ ही भारत के कई नामी संस्थान जैसे कि आईआईटी, आईआईएससी, आईआईआईटीएस और राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र इस दिशा में बहुत उल्लेखनीय शोध कार्य कर रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सहयोग से इसकी अपनी संस्था सी-डैक, प्रसिद्ध संगठनों के डोमेन विशेषज्ञों के साथ ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआई) और संबंधित क्षेत्रों में अपने आयाम विकसित रही है। इनका उल्लेख नीचे किया गया है :

- तंत्रिका विकास विकार (neurodevelopment disorders) जैसे कि एएसडी, एडीएचडी, आईडीडी, सीपी सामाजिक, बौद्धिक/सीखने, संचार, मोटर, व्यवहार और दैनिक कामकाज को प्रभावित करते हैं। हम इनके प्रारंभिक मूल्यांकन और निदान के लिए न्यूरो-कंप्यूटिंग उपकरण अनुप्रयुक्त अनुसंधान (applied research) कर रहे हैं।

ईईजी (EEG), एफएमआरआई (fMRI), डीटीआई (DTI), एफएनआईआरएस (FNIRS) जैसे विभिन्न प्रकार के ब्रेन सिग्नल को मिर्गी, एमसीआई और पोस्ट-स्ट्रोक पुनर्वास (rehabilitation), के लिए उन्नत एआई एल्गोरिदम (Advanced AI Algorithms)

का उपयोग करने पर काम किया जा रहा है।

- साथ ही, मनोचिकित्सीय संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी (कॉग्नेटिव बिहेवियरल थेरापी) सीबीटी द्वारा भावनात्मक दृष्टिकोण, ध्यान, स्मृति, चिंता संवेदनशीलता और मानसिक स्वास्थ्य पुनर्वास प्रक्रिया के रूप में मानव व्यवहार पर उपयोग किये जा रहे हैं। कंप्यूटिंग द्वारा विभिन्न परिप्रेक्ष्य में व्यवहार विश्लेषण जैसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (children with special needs) के लिए संज्ञानात्मक शिक्षा, असामान्य व्यवहार, मनोवैज्ञानिक ध्यान विश्लेषण पर शोध किये जा रहे हैं।
- विशेष आवश्यकता वाले (Special-abled) व्यक्तियों के लिए एक ईईजी हेडसेट पहनकर अपनी आवश्यकता को व्यक्त करने के लिए ब्रेन कंप्यूटर इंटरफेस (Brain Computer Interface - बीसीआई) सक्षम सहायक संचार (Assistive Communication) प्रणाली के रूप में एक कम्प्यूटेशनल फ्रेमवर्क पर काम किया जा रहा है। भारतीय परिवेश और नागरिकों से संबंधित देवनागरी स्क्रिप्ट उन्मुख p300 स्पेलर प्रतिमान (p300 speller paradigm) और आवाज़ से आदेश (वॉयस कमांड) समर्थन के साथ विभिन्न प्रकार के इंटरफेस प्रदान करने का लक्ष्य है।
- भारतीय संस्कृति से अभिभूत "योग" और "ध्यान" के सिद्धांतों का मस्तिष्क भाव विचार व्यवहार के साथ-साथ शरीर रचना (anatomy) व ब्रेन सिग्नल पर प्रभाव जैसे विलक्षण शोध कार्य किये जा रहे हैं।

- ब्रेन सिग्नल के उच्च बैंडविड्थ वाले बड़े डेटा के प्रसंस्करण (बिग डाटा प्रोसेसिंग) के लिए उच्च निष्पादन कंप्यूटिंग (हाई पर्फॉमेंस कंप्यूटिंग-एचपीसी) की उपलब्धता की आवश्यकता होती है, जिसे परम सुपरकंप्यूटर द्वारा समर्थित किया जा रहा है।

अंत में:

एआई द्वारा हमारे जीवन में सुधार के सभी तरीकों पर विचार करना रोमांचक है, लेकिन सामाजिक और व्यक्तिगत निहितार्थों पर विचार करना डरावना है – और विशेष रूप से हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए निहितार्थ। जैसे-जैसे विश्व तकनीकी की ओर बढ़ता जा रहा है, हम सभी को नए कौशल विकसित करने की जरूरत है। लेकिन कौन से? भावनात्मक/सामाजिक बुद्धिमत्ता के आधार पर पारस्परिक संबंधों का सामंजस्यपूर्ण तरीके से प्रबंधन करने की क्षमता। एक जंक्शन पॉइंट बनाना होगा। जहां से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को इमोशनल इंटेलिजेंस की दिशा अपनानी होगी। भारतीय धर्म के सांस्कृतिक मूल्यों (योग और ध्यान) जैसे शक्तिशाली सिद्धांत के साथ "अवचेतन मन की शक्ति (Power of subconscious mind)" को अपनाते हुए आगे बढ़ना होगा क्योंकि एक स्वस्थ दिमाग स्वस्थ जन का, स्वस्थ जन स्वस्थ जनता का और स्वस्थ जनता स्वस्थ देश का प्रतिबिम्ब होती है। भविष्योन्मुखी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को पारम्परिक "वसुधैव कुटुंबकम्" (पृथ्वी पर रहने वाले सभी व्यक्ति चाहे वो किसी भी देश किसी भी धर्म अथवा जाति के हों पृथ्वी रूपी परिवार के सदस्य हैं) के प्रारूप में परिबद्ध कर अपनी भाषा को विराम देती हूँ। जय हिन्द!! जय भारत!!



जिस मनुष्य के पास अच्छा स्वास्थ्य नहीं है,
तो समझो उसके पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है।

धरती के साथ आसमान भी



शिल्पा ओसवाल

वो नाजूक भी है, और फौलाद भी,
वो आग भी है, और शीतल सरिता भी
मुश्किलों से जो ना डरे, चढ़ जाए चट्टान भी
मत समझो उसको अबला, वो है सक्षम और बलधारी भी
आज की नारी का अलग अंदाज़ है,
पाना चाहती है धरती के साथ आसमान भी ।

चार दीवारी के बंधन तोड़, बनाई अपनी पहचान भी
अंधेरी गलियों से निकल कर,
बनाया जीवन प्रकाशमान भी
अब ना रुके वो किसी के लिए,
पूरे करती अपने अरमान भी
समाज में अपनी जगह बनाई,
इस बात का है अभिमान भी
आज की नारी का अलग अंदाज़ है,
पाना चाहती है धरती के साथ आसमान भी ।

कार्यालय में सख्त अधिकारी है,
तो घर पर प्यारी सी मम्मी भी
नया जमाना उसे पसंद है ,
पर नहीं भूली अपने संस्कार भी
कभी हो जाती है भ्रमित,
पर खुद पर है अटूट विश्वास भी
आंखे कभी हो जाती है नम,
तो है होठों पर मुस्कान भी ।
आज की नारी का अलग अंदाज़ है,

पाना चाहती है धरती के साथ आसमान भी ।
पुरुष प्रधान जगत में उसने, अपना लोहा मनवाया भी
नया इतिहास देश का, अपने कर्मों से रचाया भी
ऊंचे ऊंचे पद पर बैठी, संभाल रही जिम्मेदारी भी
हर जंग जीते शान से, सम्मान की वो अधिकारी भी
आज की नारी का अलग अंदाज़ है,
पाना चाहती है धरती के साथ आसमान भी ।

आज बनी युग की निर्माता, हर बाधा उससे हारी भी ।
नहीं है वो किसी से कम, दोनों नर—नारी एक बराबर भी
वो है इस स्वर्णिम युग की, सदैव जलती ज्वाला भी
एक परिचय नहीं है उसका, हर रंग में वो रंग जाती भी
आज की नारी का अलग अंदाज़ है,
पाना चाहती है धरती के साथ आसमान भी ।

अंत नहीं शुरूआत है ये, सफर अभी है जारी भी
कुछ यहाँ तक पहुँच गई हैं, बहुतों को लाना है बाकी भी
जो अन्याय से हार रही हैं,
दिखानी है उन्हें आज़ादी की झांकी भी
अपने लक्ष्य को हासिल करने की,
उनमें चाह जगाना है बाकी भी
हर नारी अब ये जान ले,
पा लेगी वो धरती के साथ आसमान भी ।





पीताम्बर दत्त

पसीना बहाओ वजन घटाओ (हकीकत या कल्पना)

सपनों की जीवनशैली में बदलाव समय के साथ निरंतर चलता रहा है। समय के साथ मशीनों ने मनुष्यों का भौतिक भार बहुत कम कर दिया है। जिसके परिणामस्वरूप चीजों का तेजी से उत्पादन, त्वरित वितरण, विनिर्माण में पूर्णता, दुनिया भर में पहुंच, बेहतर चिकित्सा सुविधाएं आदि हुई हैं। हालांकि, इन परिवर्तनों के कारण मनुष्यों की शारीरिक गतिविधियों में भारी कमी आई है, जो मानव जीवन में नकारात्मक स्वास्थ्य मुद्दों को प्रभावित करती है और ऐसे मुद्दों की एक प्रमुख चिंता या मूल कारण मोटापा है। हालांकि, हम सभी अब इस तथ्य से अच्छी तरह वाकिफ हो गए हैं और हमने अपने शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है।

जब हम अपने स्वास्थ्य के बारे में बात करते हैं तो प्रत्येक व्यक्ति के दिमाग में पहली बात शारीरिक सुरक्षा की आती है जो कि हम अपने शारीरिक आकार को देखकर भांपते हैं। इसलिए व्यक्ति बिना किसी विशेषज्ञ से परामर्श किए बिना अपनी रूचि के अनुसार जिम, योग आदि करना या फिर अपने आहार को प्रतिबंधित करना शुरू कर देते हैं।

शारीरिक कसरत करते समय यह भी देखा गया है कि अधिकांश जनता जिन्होंने किसी विशेषज्ञ की सलाह लिए बिना ही कसरत करना शुरू कर दिया है, वे वजन कम करने के लिए अधिक से अधिक पसीना बहाने की कोशिश करते हैं। जिसके लिए वे अतिरिक्त गर्म कपड़े, गर्मियों में गलाबंद ट्रैकसूट, घुटन भरे स्थान आदि का उपयोग करते हैं। इस तरह का कृत्य किसी भी व्यक्ति के लिए एक बड़ी चिंता का विषय बन सकता है।

इस सम्बन्ध में सभी का यह जानना बहुत ही आवश्यक है कि वजन कम करने में पसीने की कोई भूमिका नहीं होती है, यह सिर्फ एक भ्रम मात्र है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को अपने दिमाग से बाहर फेंक देना चाहिए। असल में पसीना बहाना शरीर के तापमान को बनाए रखने के लिए शरीर-तंत्र की एक आवश्यक क्रिया है, जिससे वह शरीर का तापमान नियंत्रित करता है और वजन कम करने में इसकी कोई भूमिका नहीं है। वास्तव में अतिरिक्त पसीना बहाने का शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है जैसे कि शरीर में पानी की कमी का होना, ब्लड प्रेशर में गिरावट आना आदि। इसलिए, किसी भी शारीरिक गतिविधि के तुरंत बाद शरीर में पानी की पूर्ति को वापस बहाल करने की सलाह दी जाती है। यदि किसी व्यक्ति के शरीर में पानी की कमी समय पर पूरी नहीं की जाये तो उसके लिए व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती करवाने की जरूरत भी पड़ सकती है।

इसको समझने के लिए हम सभी को यह भी जानना जरूरी है की शारीरिक वजन का घटना या बढ़ना पसीने के बहाव से नहीं बल्कि मनुष्य की दिनचर्या निर्धारित करती है, जैसे कि 24 घंटों में टोटल कैलोरीज का सेवन और उन्ही 24 घंटों की दिनचर्या में खर्च की गयी टोटल कैलोरीज के अनुपात से होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपने आहार के द्वारा 24 घंटों में 2000 कैलोरीज का उपभोग करता है और दिनचर्या के अनुसार उन्ही 24 घंटों में 1500 कैलोरीज ही खर्च कर पाता है, तो इसका मतलब है कि उसका शरीर प्रति दिन लगभग 500 कैलोरीज संग्रहीत करता है, जो उसे मोटापे की ओर ले जा सकता है।

इसीलिए सभी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शरीर में हमेशा पानी की पूर्ति बनी रहे जिससे वह ज्यादा से ज्यादा शारीरिक श्रम बिना किसी हानि के कर पाए।

कोविड-19 के कारण सभी व्यक्तियों के शारीरिक ढांचे में काफी बदलाव देखे गए हैं जिसके कारण ज्यादातर व्यक्ति कुछ न कुछ शारीरिक कसरत करके उस बदलाव को ठीक करना चाहते हैं जो कि एक बढ़िया सोच मानी जा सकती है, परन्तु इसमें थोड़ा चिंता का विषय यह है कि कोविड-19 के बाद हार्ट अटैक्स, हार्ट फेलियर, लीवर से सम्बंधित बीमारियां और ऐसे ही कई अनेक तरह की बीमारियों का बढ़ना सामने आया है। यदि कोई भी ऐसा व्यक्ति जो कि किसी भी ऐसी बीमारी से ग्रस्त हैं और उसे इसके बारे में पता नहीं और अगर वो बिना किसी एक्सपर्ट एडवाइस के शारीरिक कसरत शुरू कर देते हैं तो वो उनके लिए जोखिम भरा हो सकता है। जैसे की पिछले कुछ समय में कई मशहूर हस्तियों का हार्ट अटैक/हार्ट फेलियर से निधन होना सामने आया है। इन सभी हादसों में गौर करने वाली बात यह है की ज्यादातर हादसे शारीरिक परिश्रम करते वक्त हुए हैं। इस कथन की पुष्टि किसी के द्वारा नहीं की गयी है बल्कि यह एक निजी सोच है।

शारीरिक कसरत करना बहुत ही आवश्यक है परन्तु इसको शुरू करने से पहले किसी एक्सपर्ट की सलाह लेना जरूरी है। कसरत करते वक्त शरीर को ज्यादा न थकाए और सिर्फ वो ही कसरत करें जिसके बारे में आपको भली भांति पता हो। शारीरिक परिश्रम करने के लिए नीचे कुछ सलाह दी गयी हैं जिससे आप अपनी सुरक्षा का ध्यान रख सकते हैं :-



- शारीरिक कसरत करते वक्त बीच-बीच में विश्राम लेना चाहिए जैसे की 45 मिनट लगातार पैदल (वाक) चलने के बजाये हर 15 मिनट के बाद थोड़ा विश्राम लेना ज्यादा सुरक्षित होगा।

- अपने शरीर की क्षमता से ज्यादा तेज वाक लम्बे समय तक नहीं करना चाहिए।

- शारीरिक कसरत शुरू करने से पहले कुछ दिन प्राणायाम जरूर करें जिससे आप अपने आंतरिक अंगो को ज्यादा सक्षम बना सकते हैं जो आपको शारीरिक कसरत करते वक्त आने वाले खतरों से बचा सकता है।

- शारीरिक कसरत करते वक्त धीरे धीरे पानी पीते रहिए जिससे शरीर में पानी की पूर्ति बनी रहेगी और आप को डिहाइड्रेशन से बचा कर रखेगा। शारीरिक कसरत करते वक्त किसी भी समय अगर आप को थकान या असहज (डिस्कम्फर्ट) महसूस हो तो उसको बिल्कुल नजर अंदाज़ न करें और तुरंत आराम करें उसके बाद भी अगर आप पहले जैसा सामान्य महसूस न करें तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

- शरीर को जल्दी से सुदृढ़ बनाने के लिए प्रोटीन का उपयोग बिना किसी चिकित्सक की सलाह के बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

- भोजन में तले हुए व्यंजन का उपयोग कम से कम करना चाहिए।

कोविड-19 के बाद का यह समय कई मुश्किलों से भरा है इस समय में हमें पूरी एहतियात बरतनी चाहिए और अपना और अपने आस पास सभी का ध्यान मिलजुल कर रखना चाहिए।





विपुल रस्तोगी

औषधीय पौधे

आपके बगीचे में छिपा औषधीय खजाना

प्रकृति की गोद में हजारों—लाखों प्रकार की वनस्पति पैदा होती है और जिन्हें आयुर्वेद/चिकित्सा विज्ञान ने मनुष्य के लिए लाभदायक और हानिकारक दोनों प्रकार की बताया है। उन्हीं लाभदायक वनस्पतियों में से चुन कर कुछ खास प्रकार की वनस्पतियों का उल्लेख हम यहां कर रहे हैं, जिन्हें आप अपने घर के बगीचे में भी सफलता पूर्वक उगा सकते हैं।

1. सेंट जॉन वॉर्ट— हायपेरिकम पर्फोरैटम (Hypericum Perforatum)

सेंट जॉन वॉर्ट मूल रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप में पाया जाने वाला एक बारहमासी पौधा है जो कच्चे रास्तों के बराबर में और जंगलों के धूप वाले किनारों पर पाया जाता है और इसका नाम यह रखे जाने के कारण इसके सुनहरे फूलों का 24 जून को सेंट जॉन दिवस के आसपास खिलना है।

हाइपेरिकम और स्यूडोहाइपेरिकम की उच्च सांद्रता से पौधे के तने के औषधीय तत्व एक लाल वर्णक के रूप में फूलों से बाहर निकलते हैं। हाइपेरिकम को सेंट जॉन वॉर्ट के ज्ञात एंटीडिप्रेसेंट प्रभाव के लिए जाना जाता है। इसके अलावा, पौधे में एंटीबायोटिक और एंटीवायरल क्षमताएं होती हैं और इसे लंबे समय से घावों को ठीक करने में मदद करने के लिए उपयोग किया जाता रहा है। वर्तमान में एड्स रोगियों के लिए एक संभावित उपचार के रूप में इस पौधे पर अध्ययन किया जा रहा है। यह हर्पीज़

वायरस और मोनोन्यूक्लियोसिस के उपचार में भी लाभ करता है।

बागवानी नुस्खे:

यह धूप वाली गर्म जगह पर बहुत ही अच्छी तरह होता है, परंतु मध्यम छाया में भी पनप जाता है। यह सड़ी पत्तियां मिली हुई सूखी मिट्टी (ज्यादा नमी के बिना) में बहुत अच्छी तरह पनपता है और 2–3 फीट की ऊंचाई तक पहुंचता है। यह इस पर भी निर्भर करता है कि पानी और पोषण कैसा दिया गया है।

इसकी फसल जून से अगस्त के बीच और पारंपरिक रूप से 24 जून (ग्रीष्म संक्रांत/ उत्तरायण) के आसपास तैयार हो जाती है। प्राचीन काल में, ग्रीष्म संक्रांत/उत्तरायण को एक विशेष जादुई दिन माना जाता था। सेंट जॉन वॉर्ट का उपयोग भय, भूत और बुरे सपने को दूर करने के लिए किया जाता था, इसलिए इसे "जादुई बूटी या चुड़ैल बूटी के रूप में भी जाना जाता था।

विशेषताएं:

इसके छोटे, चमकीले—पीले फूलों में केंद्र में लंबे रोंएदार पुंकेसर के साथ पांच पंखुड़ियां होती हैं। पतली, अंडाकार पत्तियां विपरीत जोड़े में बढ़ती हैं। यदि इसे प्रकाश में रखा जाये, तो पत्तियां छिद्रित प्रतीत होती हैं।

देखभाल

वसंत ऋतु में खाद के साथ सेंट जॉन के पौधे को लगायें और इसे आवश्यक रूप से कार्बनिक उर्वरक

का पोषण दें। यदि पौधा खराब मिट्टी में लगाया जा रहा हो तो गर्मियों में लगाना अच्छा रहेगा। यह पौधा अधिक गीली या पानी के जमाव वाली मिट्टी में नहीं पनपता है, लेकिन सूखेपन को अच्छी तरह से सहन करता है, जिससे अतिरिक्त सिंचाई की कोई जरूरत नहीं रह जाती है। पतझड़ के मौसम में, जमीन के स्तर से ऊपर पौधे के तने को काट देना चाहिये।

कटाई और प्रसंस्करण

यद्यपि आप जून से अगस्त तक फसल काट सकते हैं, ताजा पौधे में जून के अंत में उच्चतम सक्रिय घटक सामग्री होती है। चाय के लिए ऊपरी बिना लकड़ी वाले भागों को इकट्ठा करें और उन्हें एक अंधेरे स्थान पर फूलों की तरफ उल्टा लटककर के लटका दें। आयुर्वेदिक तेल बनाने के लिए केवल फूलों का उपयोग करें।

प्रयोग

ताजा फूलों का उपयोग तेल बनाने के लिए किया जा सकता है जो त्वचा की समस्याओं, चोटों और गठिया जैसी बीमारियों के लिए विशेष रूप से उपचारात्मक साबित हुआ है।

अतिरिक्त टिप

सेंट जॉन पौधे की पहचान करने का एक अन्य तरीका पत्तियों या फूलों को मसलना है, जो हाइपेरिसिन के स्राव के कारण लाल हो जाएंगे। ऐसा कहा जाता था कि यह लाल रंग सेंट जॉन द बैपटिस्ट के रक्त का प्रतिनिधित्व करता था।

सेंट जॉन की रात को लगाया गया एक प्याज बढ़ेगा और एक किसान की खुशियों में वृद्धि करेगा।

खेती के लिए गाइड

हायपेरिकम की सजावटी किस्मों में आमतौर पर कोई उपचार गुण नहीं होते हैं। केवल हायपेरिकम पर्फॉरेटम

(जो शायद ही कभी व्यावसायिक रूप से पाया जाता है) में ही यह क्षमता है। इस कारण से, विशेष नर्सरी में सेंट जॉन के पौधे की तलाश करें, या एक जंगली गुच्छा ढूंढें और सिर्फ बीज इकट्ठा करें (बीजों की एक चुटकी पर्याप्त होगी)।

बुआई और रोपाई

1. मार्च और मई के बीच, सेंट जॉन के पौधे के बीज को एक छोटे से बॉक्स या मिट्टी से भरे एक सीडिंग ट्रे में बारीकी से बोयें।
2. मिट्टी की एक पतली परत से बीज को ढक दें। उन्हें पानी से अच्छी तरह से नम रखें। बीज लगभग 14–20 दिनों में अंकुरित हो जाएंगे।
3. जब पौध की ऊंचाई लगभग 1–2 इंच की हो जाये तो उन्हें 3 समूहों में बांट कर छोटे गमलों में प्रत्यारोपित कर दें। गर्मियों के दौरान इन गमलों वाले पौधों को धूप वाले स्थान पर रखें और यह सुनिश्चित करें कि उन्हें पर्याप्त पानी प्राप्त हो।
4. पतझड़ की शुरुआत में पौधों को बाहर अच्छी तरह से सूखी मिट्टी में एक फुट की दूरी पर लगाये। पहली ठंड के बाद एक हल्के गीली घास के साथ पौधों के आधार को ढक दें। ये पौधे अगली गर्मियों में खिलेंगे।



संचरण

सेंट जॉन के पौधे को फैलाने का सबसे आसान तरीका वसंत या पतझड़ में पौधों को विभाजित करना है। अपने पौधों को खोदें और जड़ों के गुच्छों को कई भागों में विभाजित करें। इनको एक अच्छी तरह से तैयार की गई मिट्टी में फिर से लगाया जाता है। पतझड़ में मौजूदा पौधों से कुछ बीज एकत्र करें और उन्हें मार्च (शुरुआत) में बोने के लिए सर्दियों के दौरान एक सूखी, अंधेरी जगह पर स्टोर करें।

2. लैमन बाम (मेलिसा ऑफिसिनलिस *Melissa Officinalis*)

यह सुगंधित, नींबू जैसी सुगंध वाली जड़ी बूटी, जिसे मेलिसा या सिर्फ बाम के रूप में भी जाना जाता है और यह भूमध्यसागरीय क्षेत्र और उससे निकट पूर्व में मूल रूप से पाई जाने वाली वनस्पति है। सर्दियों से, यह अपने औषधीय और पाक उपयोगों के लिए मूल्यवान है। दसवीं शताब्दी में इसे यूरोपीय भिक्षुओं द्वारा मठ के बगीचों में उगाया गया था जिनसे लाभदायक रस (उपचारात्मक टॉनिक) बनाया गया था। आज, इस पौधे की खेती दुनिया भर में औषधीय वनस्पति के बगीचों में की जाती है। लैमन बाम का पूरे तंत्रिका तंत्र पर एक लाभदायक प्रभाव पड़ता है, जिससे यह अनिद्रा, तंत्रिका तनाव और तनाव से संबंधित पाचन परेशान जैसी स्थितियों के इलाज में काफी उपयोगी हो जाता है। पौधे की पत्तियां और टहनियां (ताजा और सूखे), इलाज में उपयोग किए जाने वाले हिस्से हैं। यह पौधा बगीचे या गमले में आसानी से हो जाता है।

बागवानी मुक्ति

- खुली धूप वाली जगहों के साथ-साथ पहाड़ियों की ढलानों पर खूब पनपता है।
- बढ़िया खाद वाली और अच्छी जल निकासी वाली नम मिट्टी अच्छी रहती है।

- लगभग 1-3 फुट की लंबाई तक बढ़ता है और तेजी से फैलता है।

पत्तियों को पौधे के खिलने से पहले ही मई और जून के दौरान काटना सबसे अच्छा रहता है। अमरिकी उपनिवेशों में यूरोप से लैमन बाम की पौध लाकर अपने बगीचों में लगाई गई। यह पौधा विलियम्सबर्ग उपनिवेश के व्यंजनों में शामिल है। उसके अतिरिक्त उन्नीसवीं शताब्दी की चिकित्सा पुस्तकों में एक प्रामाणिक दवा के रूप में भी सूचीबद्ध है।

अतिरिक्त टिप

बाम को सुखाने के लिए—

दोपहर को (उनसे ओस के सूखने के बाद में) पत्तियों को चुनें। उन्हें एक ही परत में बड़ी छलनी पर व्यवस्थित करें, फिर उन्हें दिन में एक बार हिलाते हुए एक गर्म कमरे में एक सप्ताह के लिए सुखाएं।

विशेषताएं:

इस बारहमासी पौधे के फूल आमतौर पर हल्के पीले रंग के होते हैं। हालांकि वे रंग में चमकीले सफेद से हल्के पीले रंग तक हो सकते हैं। इसके अलग-अलग फूलों का तीन या पांच के समूहों में गुच्छा बनाया जाता है। आरीनुमा किनारे वाले रोंएदार पत्ते, शीर्ष पर गहरे हरे और नीचे हल्के हरे रंग के होते हैं। वे डंठल पर लंबाई में बढ़ते हैं और जिनके नीचे की ओर तेल ग्रंथियां होती हैं।

सावधानी

लैमन बाम एक मजबूत पौधा है, और इसे ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं पड़ती है। इसे बढ़ने के लिए एक खुली धूप वाली जगह और अच्छी तरह से सूखी मिट्टी ही काफी होती है। सर्दियों के दौरान पौधे को ठंड के मौसम में नुकसान से बचाने के लिए ढक कर रखें।

कटाई और प्रसंस्करण

औषधीय प्रयोजनों के लिए, फूलों के खिलने से कुछ समय पहले लैमन बाम पौधे की पत्तियों को काट लें, क्योंकि यही वह समय होता है जब चिकित्सीय रूप से आवश्यक तेल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। पौधे पर जून के प्रारंभ से फूल आने शुरू हो जाते जो कि सितंबर या अक्टूबर तक खिले रहते हैं। इसके खिलने के बाद, पत्तियों की एक नई खेप को बढ़ाने के लिए शेष फूलों को काट लें। फिर पत्तियों को ध्यान से घर के अंदर (नीचे दिये अनुसार) सुखाएं ताकि उनकी नींबू की सुगंध को संरक्षित किया जा सके।

उपयोग

लैमन बाम के कई तरह के उपयोग हैं। खाना पकाने में, ताजा पत्ते और डंठल का डेसर्ट, सलाद, मांसाहारी व्यंजन, सॉस और मैरिनेड्स के लिए यह एक अतिरिक्त सामग्री है। पौधे की कोमल सुगंध खाद्य पदार्थों को एक ताजा साइट्स स्वाद देती है। ताजा लैमन बाम की डंठल और पत्तियों को प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधनों में भी जोड़ा जा सकता है। सुखाये हुए लैमन बाम के भी कई उपयोग हैं। इसका उपयोग एक औषधीय चाय तैयार करने के लिए किया जाता है, जिसकी लंबे समय से इसके लाभदायक और एंटीस्पास्मोडिक गुणों के साथ-साथ इसकी नसों को आराम देने की क्षमता के लिए भी प्रशंसा की गई है। एक लैमन बाम स्नान भी समान लाभ प्रदान करेगा। यह वनस्पति एक टिंचर या रस के रूप में भी उपलब्ध है।

खेती के लिए सहायता

फरवरी की शुरुआत में घर में ही बीज बोएं। तापमान को 68 डिग्री फारेनहाइट से नीचे न गिरने दें। अंकुरण में लगभग 5 सप्ताह लगते हैं।

पौधारोपण और बढ़ोतरी

1. वसंत की शुरुआत में बाहर खुले में 16 इंच की दूरी पर प्रत्यारोपित करें।
2. अच्छे परिणाम पाने के लिये पौधों को एक धूप वाली सुरक्षित जगह पर कार्बनिक पदार्थों में समृद्ध, नम मिट्टी में लगाएं। यदि आपके पास उपलब्ध मिट्टी की गुणवत्ता बहुत अच्छी नहीं भी है तो भी यह सुरक्षित है। लैमन बाम एक मजबूत पौधा है जो बहुत अच्छी मिट्टी न होने और यहां तक कि हल्की छाया वाली जगह में भी अच्छी तरह से बढ़ने में सक्षम है।
3. पौधों को नियमित रूप से पानी दें।

प्रचारण

दुनिया के कुछ हिस्सों में, लैमन बाम जंगलों में प्राकृतिक रूप से पैदा होता है और फैलता है चाहे इसे बगीचों में, गमलों में, खिड़की के बक्से में या बर्तनों में उगाया जाये। वसंत ऋतु में यह रूटस्टॉक विभाजन (जड़ों) द्वारा फैलता है।

जड़ों से विभाजन

1. उन पौधों की जड़ों को विभाजित करें, जो 3-4 साल पुराने हैं। जड़ों के चारों ओर मिट्टी को ढीला करके और लैमन बाम पौधे को धीरे से लगाएं।
2. ध्यान से जड़ों को हाथ से अलग करें। यदि आवश्यक हो, तो उन्हें विभाजित करने के लिए चाकू या खुरपी का उपयोग करें। हर नए हिस्से में तने और जड़, दोनों का एक हिस्सा रखने की आवश्यकता है। बड़े पौधों को कई वर्गों में विभाजित करके फिर से लगाना पड़ सकता है।





प्रशांत रामटेक

भारत की बुलंदी

भारत के नौजवानों की, ये आन बान हो
दुनिया के नक्शे पर मेरा, भारत महान हो ॥१॥

ये देश बापू, बुद्ध और नानक की है जमीं
भारत की बुलंदी में, जरा भी न हो कमी
छूता हुआ अंबर को, तिरंगा निशान हो ॥

॥१॥ दुनिया के नक्शे पर मेरा

जिनका पसीना देश को, बलशाली बनाये
खेतों में छाये रहते हैं, हरियाली के साये
खुशहाल अपने देश का, हर एक किसान हो ॥

॥२॥ दुनिया के नक्शे पर मेरा

आतंकियों ने फैलायी, अलगाव की जड़ें
भारत की अपनी एकता, खतरे मे न पड़े
एकता अखंडता हमारी, जानो शान हो ॥

॥३॥ दुनिया के नक्शे पर मेरा

हिन्दू हो या मुसलमान, बौद्ध हो या ईसाई
बनके रहेंगे पी. आर. यहां, एक दूजे के भाई
जय हिन्द नारा कहती हम, सबकी जुबान हो ॥ ॥४॥ दुनिया के नक्शे पर मेरा



पदोन्नति मिजोरम में



नरेश

मौसम सुहाना, बारिश भरमार, गर्मी का न लेना देना, जल्दी सवेरा, जल्दी शाम, उसी में सब निपटा लेते अपना काम।
हरियाली, खुशहाली हिलोरे देती चहूं ओर, कोमल-कोमल लताओं में मुस्कुराहट दिखाती उनकी कोर।
पंखा एसी का काम नहीं है यहां, ठंडी-ठंडी मदमस्त हवा कर देती भाव विभोर।
क्या होता है प्रदूषण जनता यहां की न जाने कोई, टम-टम, पी-पी, पों-पों का होना न यहां शोर।
छीना-झपटी, रेप-डकैती, यहां नहीं होती, जीवन जीओ मिलकर जीओ इस बात का है यहां बड़ा जोर।
अप्रैल से अक्टूबर बदरा बरसते झूमकर, बाढ़ का कोई काम नहीं कच्ची कलियां बोलती थोड़ा और-थोड़ा और।

अपने उत्तर भारत की तपती गर्मी छोड़ मई-2019 में यहां आया था, जनवरी 2020 में शादी, कोविड ने दुनिया हिला दी।
पत्नी पूछे घर कब आओगे, भैया, मैया सब करे चिंता, मिजोरम ने दिल मोह लिया,
मैंने भी लॉकडाउन का बहाना टोह लिया।
जब खबर सुनी मां और भाई को कोरोना वायरस ने घेर लिया, उस दिन लॉक डाउन पर मैं जम कर रो दिया।
दो-तीन महीने दुनिया थम गई थी, मिजोरम में पाबंदिया बढ गई थी।
नई नौकरी, नई शादी, नया स्थान, ऊपर से करोना ने नया अनुभव करा दिया।

आया दिसंबर मिजोरम बोला, हरियाणा वाले घर का चक्कर लगाया, जैसे ही मैंने घर की तरफ कदम बढ़ाया,
कोरोना ने ऐसी मारी टक्कर, मेरा सिर चकराया डबल डॉज के बाद यह क्यों मेरे पर आया।
छुट्टी पूरी कर के वापसी का टिकट कटाया,
दिल दिमाग घर के बारे में सोच रहा था, इतने में हवाई जहाज वापिस मिजोरम ले आया।
अबकी बार नज़ारा अलग था, एयरपोर्ट से सीधा क्वारंटाईन का रास्ता दिखाया।
नरेश ड्यूटी से वापिस आया, स्थानांतरण का पत्र आएगा,
इसी उम्मीद से घर वालों के साथ-साथ खुद को हौसला दिलाया।
2 घंटे में अपनी खुशी और दुःख लिखकर 2 मिनट में सुनाया, पढ़के दिल बेवजह मुस्काया।।





पं. प्रभाकर पांडेय

मनुष्य को मशीन बनाता विकास!!

मई का महीना। जला देने वाली गर्मी का तांडव। दोपहर में लू इतनी तेज चल रही थी कि गाँव के सभी लोग अपने-अपने घरों में दुबके थे। गाँव के प्रधान रमेशर काका पेटगढ़ी (पेटदर्द) से परेशान थे। रह-रहकर उनका पेट बहुत ही तेज दर्द करने लगता था और वे छटपटाने लगते थे। लगभग एक हफ्ते से वे दवा ले रहे थे पर कुछ खास आराम नहीं मिल पा रहा था। वे कमरे में लेटे-लेटे टीवी पर समाचार सुन रहे थे। बिजली नहीं थी और इन्वर्टर भी डिस्चार्ज हो गया था इसलिए उन्होंने अपने छोटे बेटे पप्पू को बोलकर जनरेटर चालू करवाया था।

रमेशर काका की उम्र कोई 60-62 साल थी और वे दो बच्चों के पिता थे। उनका बड़ा बेटा गप्पू इंजीनियर था और दिल्ली में एक कंपनी में कार्यरत था। वह अपने परिवार के साथ दिल्ली में ही रहता था। दिल्ली में उसका खुद का एक आलीशान बंगला था। रमेशर काका के छोटे बेटे पप्पू की गाँव के पास ही एक छोटे से कस्बे में दवाई की दुकान थी। वह दुकान भी चलाता था और आवश्यकतानुसार घर की देख-भाल भी करता था। उसने दुकान के काम में मदद के लिए एक और व्यक्ति को रखा था।

रमेशर काका अभी टीवी देखने में ही मशगूल थे कि उनका मोबाइल बज उठा। उनके बड़े लड़के का फोन था। उसने हाल-चाल लेने के लिए फोन किया था। उसने रमेशर काका से कहा कि आप दिल्ली आ जाइए, यहाँ किसी अच्छे अस्पताल में आपको दिखा दूँगा। अभी फोन पर रमेशर काका और गप्पू की बात चल ही रही

थी कि पप्पू वहाँ आ गया और रमेशर काका से मोबाइल लेकर खुद ही अपने बड़े भाई से बात करने लगा। पप्पू ने गप्पू से कहा कि भइया आप यहाँ की चिंता न करें। मैंने बाबूजी के शयन-कक्ष में एसी भी लगवा दिया है। और हाँ एक अच्छे डॉक्टर से दिखाकर कुछ दवाइयाँ भी ले आया हूँ। अपने दोनों बेटों को बात करते देख रमेशर काका अतीत में खो गए। उन्हें अपने युवावस्था की याद आने लगी। उन्हें याद आया कि एक बार उनकी बहन बीमार पड़ गई थी और उनके पिताजी कोलकाता में मजदूरी करते थे। वे लाख चाहकर भी समय पर अपने पिताजी को खबर न दे पाए और हाथ में पैसा न होने और अच्छे इलाज के अभाव में उनकी बहन भगवान को प्यारी हो गई। आज का युग कितना बदल गया है। अरे कल की ही तो बात है। मंगरू अत्यावश्यक कार्य के लिए 20000 रुपए माँगने आया था पर रविवार होने से बैंक भी बंद थे और मेरे पास भी इतने रुपए नहीं थे तो तुरंत पप्पू मोटरसाइकिल उठाया और एटीएम से रुपए लाकर मंगरू को दे दिया। पहले खेतों में बहुत मेहनत करने पर भी बहुत कम पैदावार होती थी पर आज वही जमीन सोना उगल रही है। उन्नत बीज हैं व विभिन्न प्रकार के उर्वरक के साथ ही कृषि के सभी साधन उपलब्ध हैं। ग्राम सेवक ने भी मिट्टी की जाँच करके खेती करने की वैज्ञानिक विधि बता दी है। सारी-सुख-सुविधाएँ गाँवों में भी उपलब्ध हैं। आज साइकिल की कौन बात करे, लोगों के पास मोटरसाइकिल, कार आदि है।

अभी रमेशर काका यही सब सोच रहे थे तभी पप्पू ने आवाज दी, “बाबूजी, भइया आपको दिल्ली बुला

रहे हैं।” रमेसर काका बोल पड़े, “अरे मैं यहीं ठीक हो जाऊँगा। उतना दूर जाने की क्या जरूरत है। मैं घर छोड़कर इतना दूर कभी नहीं गया।” रमेसर काका की बात सुनकर पप्पू हँसा और बोला, “बाबूजी, आप चिंता न करें। मैंने अभी-अभी अपने लैपटॉप से आपके लिए और अपने लिए हवाई जहाज की टिकट बुक कर दी है। कल दोपहर में लखनऊ से दिल्ली के लिए हमारी उड़ान है। एक से दो घंटे में हम भइया के पास होंगे और फिर 2-3 दिन में ही वापस भी आ जाएँगे।”



रमेसर काका फिर से हैरान-परेशान। उन्हें वे दिन याद आ गए जब न अच्छी सड़कें थीं और न परिवहन के अच्छे साधन ही। उन्हें अपनी रिश्तेदारी में भी पैदल, बैलगाड़ी या साइकिल से जाना पड़ता था।

दूसरे दिन रमेसर काका पप्पू के साथ दिल्ली पहुँच गए। उसी दिन गप्पू ने उन्हें एक बड़े अस्पताल में दिखाया। रमेसर काका को एक बड़ी मशीन के भीतर से गुजरना पड़ा और बाद में डॉक्टर ने कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। आप बिलकुल ठीक हैं पर पेट में पथरी बन गई है। रमेसर काका और कुछ समझ पाते, इससे

पहले ही उनकी रक्त-जाँच आदि की गई और उसी दिन उनके पेट की शल्यक्रिया करके पथरी भी निकाल दी गई। शल्यक्रिया के दूसरे ही दिन रमेसर काका अपने बड़े लड़के के घर पर आ गए थे।

रमेसर काका अपने बड़े बेटे के घर में लेटे थे और उनका पोता पास में ही वीडियो गेम खेल रहा था तभी दरवाजे की घंटी बज उठी। रमेसर काका का पोता बोल उठा, “पापा आ गए।” रमेसर काका कुछ समझ पाते तभी उनके पोते ने कमरे में लगी एक टीवी की तरफ इशारा किया। अरे यह क्या दरवाजे पर खड़ा उनका बेटा उस टीवी में साफ नजर आ रहा था। उनके पोते ने वहीं बैठे-बैठे एक बटन दबाया और मेन दरवाजा खुल गया। गप्पू अंदर आ गया।

रमेसर काका के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। वे सोच रहे थे कि आधुनिक युग आविष्कारों का युग है। विज्ञान ने बहुत ही तरक्की कर ली है। सुख-सुविधा के बहुत सारे साधन मौजूद हैं। पर एक बात रमेसर काका को कचोट कर रख दी। उन्होंने सोचा कि जब से आया हूँ न बहू से ठीक से बात हुई न बड़े बेटे से ही। दोनों अपने नौकरी-धंधे में लगे हैं। सुख-दुख बाँटने के लिए भी उनके पास समय नहीं है। बहुत मुश्किल से कभी-कभी नाश्ते और डिनर पर ही पूरा परिवार एक साथ हो पाता है। कभी रात को बहू घर नहीं आती तो कभी बेटा। उन्होंने सोचा कि पहले का युग बहुत पिछड़ा था, लोगों के पास सुख-सुविधाएँ न थीं पर मानसिक संतोष था। आज सब कुछ है पर मानसिक संतोष नहीं, मानसिक सुख नहीं। अगर व्यक्ति इन सारी सुख-सुविधाओं का उपयोग करते हुए अपनी नैतिक जिम्मेदारी भी समझे तो पृथ्वी स्वर्ग बन जाए।





अश्वनी कुमार तिवारी

मेरे शब्द मुझसे कहते हैं....

मुझे सजाओ, संवारों, कोई तो आकार दो....
कब कहा मैंने मुझे कोई हथियार दो?
पर, ठहर सकूँ, थोड़ा लड़ सकूँ
इतना तो भार दो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

खटकते हैं हम अंतर में भटकते हुये,
चिर खामोशी में चलते सुलगते हुए!
अब कितना मैं जतन करूँ, कि
तुम्हारे जुबां से बिछड़ कर मरूँ!!
मेरी इतनी विनती मान लो,
इस सूनेपन को अब श्रृंगार दो,
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

तुम किंचित मान रख लो मेरी बात का
मौन छोड़ो, प्रयोग करो अपने दिमाग का
गुजर गया जो कुछ, वो सब इतिहास था
अब नाता न तोड़ों सुर से साज़ का, कंठ से आवाज का
मौत से पहले मुझसे थोड़ी जान दो
आरंभ के उपरांत ही पूर्ण विराम दो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

हंस कर जो तुम सब सह जाते हो
अनायास, मुझे भी हल्का कर जाते हो
अपने दर्द को पालो, पर कुछ देर ही संभालो
मैं मरा नहीं, जिंदा हूँ, अतिशीघ्र कब्र से निकालो
हठी मौन को मत अपना सारा व्यवहार दो,
वजूद मेरा भी जिंदा रहे, इतना तो संसार दो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

भार हृदय में इतना न तुम सह पाओगे
बोझिल मन शिथिल न हो, अन्यथा पछताओगे
मौन तो ठहरा सागर से भी गहरा,
किसी दिन डूब कर तुम मर जाओगे
अवसर है महान, स्वयं को खंगाल लो,
प्रति-उत्तर का आनंद तुम अपार लो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

मुझे मन्थरा के बोल समझो या, कैकेयी के अरमान!
पर, याद तो होगा ही कैसे लिये मैंने दशरथ के प्राण?
तनिक अवसर का इशारा दो मुझे
देखा फिर, कितने घातक हैं शब्दों के बाण
चलो उठो तुम, अब तलवार सी धार दो.....
फिर मर्जी चाहे जिसको तुम मार दो....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

वैसे तो बिन तीर कमान के ही मैं शिकार करता हूँ
पर, छुप के नहीं, सदैव सामने से प्रहार करता हूँ
जरा सा चुभ जाऊँ मैं जो, शूल सा घाव करता हूँ
अब क्या बताऊँ कि कैसे-कैसे मैं वार करता हूँ!
फिक्र छोड़ो, इसे माथे की शिकन उतार दो.....
अब आनन से अपने थोड़ा मुझको संचार दो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

सदा प्रत्यक्ष को, मैं एक निश्चित आधार देता हूँ
निष्कर्ष चेतना को अविलंब दरकिनार करता हूँ
शठे शठ्यं समाचरेत् जैसा शिष्टाचार करता हूँ
शीश न झुकेगा निवेदन में, मैं ऐसा चमत्कार करता हूँ

अत्यंत अभिभूत हूँ, मुझमें अल्प अहंकार दो,
अपनी स्मृति में फिर जीवन—पर्यन्त यादगार लो
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

उड़ता है जब इतना उपहास
टटोलता है मुझको मेरा विश्वास
बुझते—मिटते तो सभी हैं एक न एक दिन,
फिर क्यों हो रहा इतना हास—परिहास
आओ, समय संग स्वयं को स्वीकार लो,
पर, कभी किसी से मत कुछ प्रतिकार लो.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

क्या मैं आवेश में मौन को शब्दों से मार दूँ???
सोया जो मन में, उसे कोलाहल का बाजार दूँ??
बहुत आतुरता है इन शांति शब्दों की, किन्तु
क्यों एकांत के नियंत्रण का सारा अधिकार दूँ!!!
मेरी अनुभूति के सूत्रधार बनो,
मत और इंतजार करो
समय के अनुसार बदलो,
इतने तो होशियार बनो
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

दिनभर के सारे तानों को जब संजोता हूँ,
फिर, जी—भर के फुर्सत (रात) में रोता हूँ,
रूठे मेरे शब्द घूंट—घूंट कर जहर न बनें
अंततः बड़े उदास मन से इन्हें पिरोता हूँ
बिखरने से पहले मुझको संभाल लो...
हालात के हाथ से जीत की मशाल लो...
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

सोचा न था मेरे भाव भी कभी शब्दों के मोहताज होंगे!!!
छुआ रहा था अरसे जिसको, उनके दर्शन आज होंगे
कुटिल चाल में इस ऐसा उलझ रहा हूँ, लगता है
मेरे शब्द, मेरे उद्घोष के उपरांत ही शांत होंगे
खोलो कपाट चुप्पी का, शब्दों का द्वार चुनो
चुप हो जाओ तुम, मेरी चीत्कार सुनो....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

धीरे—धीरे से फिर मैं शुरूआत करता हूँ
सीमा न भटके, शब्दों में ऐसा परवाज भरता हूँ
उड़ान शब्दों की पतंग सी ही तो होती है,
बेचैन धागे को बड़ा संभल कर आजार करता हूँ
अपने निर्मल हृदय से मेरा हर क्षण संज्ञान लो,
डगमगा गर मैं जाऊं, अपनी गलती मान लो....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

जब मैं भावनाओं को शब्द देने लगा
मेरा शब्द मुस्कुरा कर कहने लगा...
आखिर छुपा न सके तुम भी हृदयतल में
बड़े आये थे डुबोने, मुझे मन के दलदल में
मुझे तो मिल गया किनारा, तुम गहरी मंझधार लो,
सागर से अनन्त भाव में,
सदैव मौन की ही पतवार लो...
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

हाँ, आवश्यक है संवाद करना
परन्तु, सबक सदा याद रखना...
मुझे तोलो, फिर बोलो, कुछ मन में भी विचार लो
बदले में मुझसे, तुम भले—बुरे की पहचान लो
चलो भूत से संस्कार लो और वर्तमान में पधार लो,
अब कभी, जितना मांगू, मुझे तुम उतना ही
विस्तार दो
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

मैं जीवन के लिए, मात्र वार्तालाप का इंतजार करता हूँ
फिर कभी मरता नहीं, मैं तो मर्जी से उपसंहार करता हूँ
वादक को मेरा अविरल अभिनंदन बारम्बार, किन्तु
मन ही मन हर मौन का आदर—सत्कार करता हूँ
अनायस, वाणी पर न कभी कटुता की कटार लो,
हरदम शहद सी मधुरता से ही सबका समाचार लो
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....

लाओं बांधो सेहरा जीत का मेरे सर,
और तुम नसीब की अपनी हार लो
चुप जो रहते तुम्हें कहाँ जान पाता कोई,
अब सबकी दुआओं में तुम ढेर सारा तिरस्कार लो
खैर, चलते—चलते, अब तुम मेरा नमस्कार लो...
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....
मेरे शब्द.....मुझसे कहते हैं.....





चिरंजीवी पाण्डेय

राष्ट्रीय एकता में साहित्य का योगदान

राष्ट्रीय एकता किसी भी राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र के लिए जिसने अनवरत प्रयत्न के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की है, यह मुद्दा और भी अधिक प्रासंगिक है।

राष्ट्रीय एकता का वास्तविक आधार भावात्मक एकता में निहित है। भावात्मक एकता के लिए सांस्कृतिक एकता का होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक एकता का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम है "साहित्य"। भारतवर्ष अनेक भाषाओं का विशाल देश है। पूर्वांचल में असमियां, बंगला, उड़िया, दक्षिण में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम, मध्य पश्चिम में गुजराती और मराठी, उत्तर पश्चिम में हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, सिंधी और कश्मीरी। इनमें से प्रत्येक भाषा का अपना-अपना समृद्ध साहित्य है। जिसकी अपनी स्वतंत्र सत्ता और अस्मिता है। फिर भी जिस प्रकार विभिन्न राज्य मिलकर समेकित भारत राष्ट्र का निर्माण करते हैं और भारत की सामासिक संस्कृति को सँजोए हुए हैं, उसी प्रकार विभिन्न भाषाओं की साहित्य संपदा, समेकित भारतीय साहित्य की संकल्पना को रेखांकित करते हैं। संकीर्ण राजनीतिक मनोवृत्ति के कारण भाषायी विवाद सामने आते रहे हैं, किन्तु साहित्य तो भाषा से ऊपर है। अतः साहित्य आत्मा का दर्पण है, मन का भाव है, हृदय की भूमि है, मानव संवेदना की भूमि है और यह वास्तव में हम सब की अंतरात्मा की अभिव्यक्ति है। साहित्य विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, अपितु हमारे नैतिक मूल्यों, संस्कारों और संस्कृति का रक्षक भी है।

राष्ट्रीय एकता में साहित्य के योगदान का यदि अवलोकन किया जाए तो वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे देश के साहित्यकारों का चिंतन-मंथन विश्व में अद्वितीय रहा है। हमारा देश संसार की महान सभ्यताओं और सांस्कृतिक चेतनाओं का मार्गदर्शक रहा है। सत्य, अहिंसा और प्रेम का संदेश विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने वाली यह पावन वसुंधरा, विविधता को एकता में संजोए व महान संतों, गुरुओं की पवित्र वाणी को अपने अंक में समेटे हुए सदैव वंदनीय है।

किसी भी राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिए उस देश में उत्तम साहित्य का विकास होना आवश्यक है। अतः साहित्य ऐसी कड़ी है, जो न केवल भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाता है अपितु सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक सहिष्णुता भी पैदा करता है।

हमारे देश में राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद भी साहित्यकारों की कभी कमी नहीं रही। प्राचीन भारत में कालीदास, आर्यभट्ट, दण्डी, जयदेव, पतंजलि, चरक एवं धनवंतरि जैसे अनेकानेक साहित्यकारों की कृतियां हमें मिली। उनके ज्ञान एवं चिंतन एवं साहित्य से हमारे जन-मानस को साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतना मिली, नए-नए अनुसंधानों की राह मिली, हमारी सांस्कृतिक धरोहर हमारे सम्मुख पुस्तकों में निखरने लगी। आगे चलकर वीर रस के कवियों ने रासो ग्रन्थों की रचना की। देश को आततायियों से बचाने के लिए सशक्त मनोबल प्राप्त हुआ। भक्तिकाल में समस्त भारत संतो की अमृतवाणी से सरोवार हो सका। गुरुओं की

अमृतवाणी ने आपसी भेद-भाव, जाति-पाति व साम्प्रदायिकता से देश को बचाया। एक ओर हमें संतों का आत्मबल मिला तो दूसरी ओर भीष्म, अर्जुन, कर्ण जैसे सूरमाओं का साहस मिला, जिन्होंने समय-समय पर प्राणिमात्र को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों व संस्कारों से अवगत कराया। हमारे देश को बाहरी आक्रमणों से बचाकर सोने की चिड़िया बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में भी हमारे साहित्यकारों ने देश-प्रेम के अनेक गीत लिखे जो समय-समय पर हमें राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व याद कराते रहे हैं। जहाँ मैथिली शरण गुप्त जी ने:— **“नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो कुछ काम करो”** का नारा दिया जो उसी दौरान जयशंकर प्रसाद जी ने देश प्रेम का अमर संदेश कुछ इस तरह लिखा:—

**हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।।**

और भी कई अनगिनत देश-प्रेमियों ने देश की एकता के नाम अपने शब्द देश को दिए जिनमें राम प्रसाद

बिस्मिल के शब्द:— **“सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है”** और कवि प्रदीप के स्वर:— **“ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी”** अत्यधिक लोक प्रिय हुए।

आज भी हम उन महान संतों, शूरवीरों के ऋणी हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी व अपने प्राणों के बलिदान से हमें स्वतंत्र कराया। देश का भविष्य कल उन लोगों के हाथों में होगा जो आज शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। देश की एकता और अखण्डता के लिए आज की युवा पीढ़ी को अनेक गुणों से विभूषित होना होगा। देश के लिए समृद्धशाली साहित्य की रचना करनी होगी। आज का युवावर्ग राष्ट्र की मुख्यधारा है, देश की रीढ़ है, आशा है और देश का संवाहक भी है।

भारत की यह साहित्यक चेतना ही राष्ट्रीय एकता की आधार भूमि है। **वस्तुतः राष्ट्रीय एकता घटना न होकर विचार है। विचार से भी आगे भावना की अभिव्यक्ति का सबसे अधिक प्रभावशाली साधन साहित्य ही है।**





विमल कुमार शर्मा

खिलौने

रेडियो पे बिनाका गीत माला में बिनाका सरताज गीत बज रहा था आया रे खिलौने वाला खेल खिलौने ले के आया रे (<https://www.youtube.com/watch?v=kTsWSQbHtvM>), राजू, पप्पू और पिंकी स्कूल का काम कर रहे थे, राजू ये एलपी रेकॉर्ड लेंगे इस बार जब चंडीगढ़ जाएंगे शर्मा जी ने कहा, हाँ पापा ये गाना बहुत अच्छा है इस बार जब छुट्टियों में चंडीगढ़ जाएंगे तो मैं भी एक मिक्की माऊस वाली टी शर्ट लूँगा आशी के जैसी आपने वादा किया था अब मना मत करना, हाँ हाँ जरूर सब के लिए लेंगे, रमा शर्मा ने कहा वो अंगीठी पर बैंगन भून रही थी। पप्पू और पिंकी भी कहाँ चुप रहने वाले थे, मैं फुटबाल लूँगा पप्पू ने कहा और मैं तीचन छेट पिंकी ने तुतलाते हुए किचन सेट लेने की मंशा जाहिर की।

गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू होने ही वाली थी, राजू, पप्पू, पिंकी और उनके मित्र, छुट्टियों को लेकर सपने बुन रहे थे। हर बरस की तरह इस बार भी पहले कुछ दिन दादी के पास और फिर नाना नानी के पास जाने वाले थे। उन दिनों पढ़ने-लिखने और रोजमर्रा के रूटीन से अलग ऐसा होता था जिसका राजू को इंतजार रहता था, जैसे कि छुट्टियों में दादी और नाना नानी के पास जाना, स्कूल में होने वाले किसी वार्षिक महोत्सव की तैयारी में दिन रात डूब जाना, हर बरस दिवाली का भी बहुत इंतजार करना। गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो गयीं, राजू, पप्पू और पिंकी अपनी माँ के साथ नाना के घर चंडीगढ़ आ गए, गाँव से शहर का जीवन बहुत नया सा लगता। राजू अपने भाई बहनों में बड़ा था इसीलिए उसे फिल्मों का व फैशन का एहसास उनसे अधिक था। चंडीगढ़ में इनके काफी हम उम्र दोस्त थे जो राजू के

नाना के घर में किराएदार थे या पड़ोस के घरों में रहने वाले किराएदारों के बच्चे कुछ लड़के कुछ लड़कियां, लेकिन उन सबके परिधान इनसे अच्छे होते, लेकिन वो सब भी लगभग इनकी ही पारिवारिक पृष्ठ भूमि के थे और सभी सरकारी स्कूलों में पढ़ते थे, ये सब भी हमेशा इन तीनों के आने का इंतजार करते जैसे ये तीन अपनी छुट्टियों का, घर के पास ही एक रेहड़ी मार्केट थी जहां सब्जियाँ, चाट- पकौड़ी, रेडीमेड कपड़े और खिलौनों की बहुत सी दुकानें थीं, हमारे लिए उन दिनों वह शॉपिंग माल था। आर्थिक परिस्थिति ऐसी थी कि आने जाने के किराए के सिवा पिताजी थोड़े से पैसे और दे देते इनकी माँ रमा शर्मा को, बाकी हर बार इनके नाना की कृपा बरस जाती थी। इनके नाना अपने समाज में अच्छी हैसियत रखते थे, वो काफी नामी वैद्य थे और उनका ऊंचे लोगों से रसूक था, चंडीगढ़ में उनकी अपनी कोठी थी।

घर से कोई भी बाजार जाता, राजू या पप्पू उसके साथ जरूर जाते, और बाजार में खिलौनों की दुकान या किसी खाने पीने की दुकान पर ऐसे खो जाते कि उनका बस चलता तो सब कुछ खरीद लेते, एक दो बार तो ऐसा हुआ कि राजू किसी दुकान पर खिलौने देखकर ऐसा खो गया कि उसके नाना कहीं आगे निकल गए और जब तक एक दूसरे को इस बात का आभास हुआ तब तक वो भीड़ में खो गया था, वो रोने लगा और नाना जी, नाना जी कह के इधर उधर भागने लगा, क्योंकि वापसी का रास्ता पता नहीं था फिर काफी देर बाद उसके नाना जी ने उसे खोज लिया। एक दिन तीनों भाई बहन अपनी माँ के साथ बाजार गए, माँ ने जाने से पहले ही सब को कह दिया कि तुम सबको टिककी, चने डाल के समोसा या गोल गप्पे

खिलाऊंगी लेकिन और कोई चीज अभी नहीं खरीदेंगे, राजू ने चहकते हुए कहा लेकिन देख तो लेंगे ना, हाँ देख लेंगे घूम लेंगे बस इतना ही। सब खुशी-खुशी माँ के साथ बाज़ार गए यहाँ वहाँ सब तरफ घूमते रहे राजू और पप्पू ने एक टिक्की और एक समोसा खाया और पिंकी ने चाट पापड़ी। फिर वो तीनों अपनी माँ के साथ मार्केट में घूमने लगे, चारों तरफ खूब खिलौने की दूकाने थीं, वो सब बड़े चाव से रंगबिरंगे खिलौनों की दुनिया में खो गए, यकायक एक काले से रंग का कुछ राजू की आँखों के आगे आया और वो सम्मोहित हो गया क्या ये वही है जो मैं सोच रहा हूँ? उसने दुकानदार से पूछा ये क्या है, उसने कहा प्रॉजेक्टर, राजू ने पूछा चलता भी है क्या? दुकानदार ने हँसके कहा हाँ जी क्यों नहीं, फिर उसने उसे राजू की तरफ बढ़ा दिया, राजू ने देखा उस में आगे की तरफ लेंस, पीछे की तरफ एक रील घुमाने की पुली और हैंडल उसके पीछे एक बल्ब होल्डर और बिजली की तार और प्लग, साथ में दो-तीन छोटे छोटे रोल पिकचर चलाने के, राजू इस खिलौने को देख के पागल हो गया ये तो उसके लिए अपने प्रिय स्वप्न को छूने के जैसा था, राजू फिल्मों का दीवाना था, चूँकि वो गाँव में रहते थे तो कोई ऐसी सुविधा नहीं थी, बस अखबार, पत्रिकाओं में पढ़कर और रेडियो सुन कर ही संतोष करना पड़ता था, टेलीविज़न भी तब तक मध्यमवर्गीय घरों में नहीं आया था। राजू ने उसे हर तरफ से देखने के बाद उससे पूछा कितने का है उसने कहा पच्चीस रुपये का, कितने में दोगे उसने कहा इतने ही में हमारी दुकान पर फिक्स कीमत है, राजू का मन बुझ गया क्योंकि उसे अपनी माँ के पास कितने पैसे हैं ये अंदाज़ था, लेकिन उसके लिए दुनिया में अब उसे ही पाना लक्ष्य था, राजू ने सोचा अब अपने दूसरे भाई-बहन को और अपनी माँ को किसी तरह राजी करना था, सब घर आ गए, राजू ने पप्पू से इस विषय में बात की वो भोला सा था राजी हो गया, मेरी बहन छोटी सी थी उसे गुड़िया और किचन सेट की इच्छा तो बहुत थी पर कुछ कहा नहीं उसने, राजू की माँ ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया उल्टे कह दिया की इतने काम की चीज नहीं है। दो तीन दिन गुज़र गए राजू का खाना पीना भी कम हो गया,

कोई भी बात होती राजू घुमा फिरा कर उसे प्रॉजेक्टर पर ले आता, इतना दिमाग नहीं था कि सिर्फ प्रॉजेक्टर के साथ वो तीन छोटे छोटे फिल्म के रोल कितने दिन मज़ा देंगे। इसी बीच नाना जी के घर पूर्णिमा की पूजा हुई और सब बच्चों को पाँच-पाँच रुपये दक्षिणा में मिले, राजू की खुशी का ठिकाना नहीं था क्योंकि अब वो अपने लक्ष्य के और नजदीक था। अब उनकी छुट्टियाँ खत्म होने के भी दिन नजदीक आ रहे थे, राजू अकेला मार्केट गया और उस खिलौने वाले की दुकान पर जा कर खड़ा हो गया, और दुकानदार से मिन्नत करने लगा अंकल जी कुछ तो



कम कर दो मुझे ये प्रॉजेक्टर लेना है, दुकानदार ने कहा जब लेना होगा तो कुछ कर देंगे, राजू ने घर आकर अपनी माँ के पास आकर बोला अम्मी जी वो दुकानदार भी मान गया कम करने को प्रॉजेक्टर की कीमत में और पप्पू भी अपने पाँच-पाँच रुपए डाल देंगे, बहुत अच्छी चीज है, शाम को राजू अपने भाई बहन और माँ को लेकर बाज़ार गया और दुकानदार ने वो प्रॉजेक्टर बीस रुपये में दे दिया, राजू बहुत खुश था बाकी तीनों काफी उदास लेकिन सब प्रॉजेक्टर ले कर घर आ गए, राजू उसे खुशी खुशी चलाने लगा लेकिन किसी ने कोई ज्यादा खुशी जाहिर नहीं की। खाना खा कर जब सब सोने लगे तो पप्पू और पिंकी ने माँ से पूछा हमारी पसंद के खिलौने क्या अगले साल लेंगे, माँ ने कहा हाँ देखेंगे जब फिर आएंगे, दोनों माँ से बात करते करते सो गए और माँ भी सो गयी। राजू को नींद नहीं आ रही थी उसे अपने छोटे भाई-बहन के मासूमियत और उदासी चुभ रही थी उसे नींद नहीं आ रही थी वो सोच रहा था अगर उनको भी खिलौने मिलते तो कितना खुश होते वो भी, मैंने बहुत गलत किया ये प्रॉजेक्टर ले कर। उसे बड़ी देर तक नींद नहीं आयी वो सोच रहा था क्या किया जाए उसने निर्णय लिया की वो इस प्रॉजेक्टर को वापिस कर देगा, पर डर रहा था की दुकानदार ने मना किया तो लेकिन सुबह तो उनको घर वापिस जाना था, इसी उधेड़बुन में कब राजू की आँख लग गई पता ही नहीं लगा, सुबह भी उसकी नींद जल्दी खुल गयी। माँ ने वापसी के लिए सामान पैक करना शुरू कर दिया, राजू ने प्रॉजेक्टर उठा के एक किनारे में रख दिया, समय बीतता



ही नहीं था मानो घड़ी रुक सी गई थी, उसके भाई बहन आकर दूर से उसके खिलौने को देखते उन्हें समझ नहीं आ रहा था इस काले डिब्बे में ऐसा क्या है जो उनकी खुशियों को एक साल के लिए उनसे दूर कर गया, राजू चुपचाप एक बार अकेला बाज़ार में खिलौनों की दुकान तक हो आया लेकिन उसका दिल टूट गया क्योंकि अभी वो दुकान बंद थी, वैसे बाकी दुकाने भी इक्का दुकान ही खुली थी, दिन का खाना भी उस से खाया नहीं गया लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया, दिन का एक बज गया था, वो लगभग तीन बजे वापिस जाने वाले थे। उसने सबसे नजर बचाकर प्रॉजेक्टर उठाया और मार्केट को निकाल गया, जल्दी-जल्दी मार्केट पहुंचा तो देखा दुकानदार ने दुकान खोल ली थी उसे डिब्बे के साथ देख रुखे अंदाज़ में पूछा क्या हुआ, राजू ने कहा अंकल जी ये प्रॉजेक्टर कल आप से ले गए थे, इसे वापिस करना है दुकानदार ने कहा की कमाल के हो तुम कहीं तोड़ तो नहीं दिया, राजू ने कहा अंकल जी आप देख लो, उसने उसे लेकर अच्छे से देखा और कहा कि ठीक है लेकिन कोई सामान लेना पड़ेगा पैसे नहीं मिलेंगे वापिस, राजू ने खुशी-खुशी कहा ठीक है अंकल जी, उसने दुकानदार से पप्पू का पसंदीदा प्लास्टिक का बैट-बाल, एक फुटबाल, पिंकी के लिए गुड़िया ले ली लेकिन अभी भी पाँच रुपये बच गए उसके लिए उसने दुकानदार से कह के उसके भाई की साथ वाली दुकान से माँ के लिए एक चाय बनाने का छोटा सा फ्राइंगपेन ले लिया और सब ले कर तेज कदमों से घर की तरफ चल पड़ा, घर पहुंचा तो सब उसे बदहवासी से ढूँढ रहे थे, उसको माँ ने डांटा कहाँ गया था बिन बताए, राजू ने सबसे पहले पिंकी को गुड़िया दी, पप्पू को बैट-बाल और फुटबाल और माँ को फ्राइंगपेन माँ ने कहा ये कहाँ से लाया पागल, राजू ने कुछ नहीं कहा उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे और उसका मन बहुत हल्का था। उसके बाद शाम को वो सब अपने घर को आ गए।



एसटीपीआई बना भारतीय स्टार्ट-अप का गंतव्य



संगीता हेमराजानी

हाल के वर्षों में, दुनिया के कई हिस्सों में स्टार्टअप्स पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। भारत में स्टार्टअप की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है और सभी आयामों में अधिक सहायता उपलब्ध हो रही है। यह लेख भारतीय स्टार्टअप इको-तंत्र की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है और इसके तीन लक्ष्य हैं—

1. भारतीय स्टार्टअप संस्थापकों को अनुसंधान क्षेत्र की समझ प्रदान करना;
2. इन स्टार्टअप्स के सामने आने वाली चुनौतियों की पहचान करना; और
3. स्टार्टअप समर्थन के बुनियादी तत्व और सरकारी सहायता

1. भारतीय स्टार्टअप संस्थापकों का अनुसंधान क्षेत्र

भारत की विशाल सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता स्टार्टअप्स के लिए अभिशाप और वरदान दोनों साबित हुई है। एक ओर, ग्राहकों की स्टार्टअप की समझ अक्सर कुछ क्षेत्रों तक सीमित होती है, जहां वे स्थानीय लोगों को जानते हैं। इससे स्टार्टअप के लिए अपने उत्पादों को देश भर के ग्राहकों तक पहुंचाना मुश्किल हो जाता है। दूसरी ओर, यदि समाधान पूरे भारत में विविध ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने में सफल होते हैं, तो वे अफ्रीका और लैटिन अमेरिका और यहां तक कि विकसित दुनिया जैसे अन्य भौगोलिक क्षेत्रों में बाजार में भी अच्छी पकड़ बना सकते हैं। इसके अलावा, कई भारतीय स्टार्टअप न केवल भारतीय समस्याओं को देखते हैं, बल्कि विदेशों के बाजारों के लिए अनुकूलित समाधान पेश करते हैं।

उदाहरण के लिए, भारतीय स्टार्टअप अक्सर अमेरिका में पायलट परियोजना चलाते हैं और ग्राहकों को सेवा प्रदान करते हैं, जहां उपयोगकर्ता की भुगतान करने की क्षमता बहुत अधिक होती है।

2. स्टार्टअप्स के सामने आने वाली चुनौतियां

2.1 डिजिटल कनेक्टिविटी

कुछ साल पहले तक, कंपनियों को ग्राहकों के साथ बातचीत करने के लिए भौतिक बुनियादी ढांचा स्थापित करना पड़ता था, जिसमें बहुत लागत थी। परन्तु छोटी कम्पनियों के लिए यह बहुत खर्चीला विकल्प था। उद्योग की बढ़ती मांगों को ध्यान में रखते हुए, एस.टी.पी.आई. ने बेहतर गुणवत्ता और प्रतिबद्धता के साथ सॉफ्टलिक सेवाएं प्रदान की हैं। वर्ष 2020-21 में, एसटीपीआई देश भर में लगभग 19,000 एमबीपीएस इंटरनेट बैंडविड्थ ले जा रहा था। जैसे-जैसे भारत ने अपनी डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार किया है, बाजार तक पहुंचने की बाधाएं कम होती जा रही हैं।

2.2 ऑफिस स्पेस और इंफ्रास्ट्रक्चर

समर्थन का एक आयाम कार्य स्थल की उपलब्धता का प्रावधान है। इसमें कार्यालय, बैठक कक्ष के साथ-साथ मनोरंजन क्षेत्र जैसे कैफेटेरिया इत्यादि शामिल हैं। अक्सर, ऐसे कार्यालय में एक समारोह कक्ष भी होता है, जो बड़े दर्शकों के साथ आयोजनों की मेजबानी के लिए उपयुक्त होता है।

एसटीपीआई अपने विभिन्न केंद्रों पर स्टार्टअप

इकाइयों को ऊष्मायन सुविधाएं प्रदान कर रहा है। इससे स्टार्टअप इकाइयों और उद्यमियों को काफी मदद मिली है।

2.3 उद्यमिता के प्रति बदलती धारणा

मीडिया द्वारा भारत के पहले यूनिकार्न की सफलता के उल्लेखनीय विकास की कहानियों ने बहुत ध्यान आकर्षित किया है। इसके बाद, भारत के कुछ संस्थापक "स्टार्टअप हीरो" बन गए हैं, जो उद्यमिता की वर्तमान छवि को "कूल" और "ग्लैमरस" के रूप में योगदान दे रहे हैं। कुछ प्रचार के बावजूद, उद्यमी कैरियर की सामाजिक स्वीकार्यता वास्तव में बढ़ रही है।

2.4 उत्पादों को बाजार में ले जाना

अपने उत्पाद को बाजार में बेचना स्टार्टअप के लिए सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि भारतीय बाजारों में प्रवेश करना मुश्किल है। एक कारण, प्रतिस्पर्धी परिदृश्य है: अक्सर, कई कंपनियाँ पहले से मौजूद होती हैं जो बाजार में उनके जैसा ही काम कर रही होती हैं। दूसरा कारण, स्टार्टअप बड़ी कंपनियों की तुलना में घाटे में रहते हैं क्योंकि इन्हें कम शुल्क में अपना उत्पाद बेचना पड़ता है। तीसरा कारण, ग्राहकों के साथ बातचीत और उन्हें बनाए रखने में समय और मेहनत लगती है। भारतीय ग्राहकों को समझाना मुश्किल है, खासकर तब जब स्टार्टअप नए उत्पाद विकसित करता है।

2.5 योग्य कर्मचारियों की भर्ती

कई नौकरी चाहने वालों के लिए एक कर्मचारी के रूप में एक स्टार्टअप में शामिल होना एक आकर्षक कैरियर विकल्प नहीं है, क्योंकि अंतर्निहित जोखिम है कि स्टार्टअप विफल हो सकता है। इसके बजाय वे लोग बहुसंख्यक बड़े निगमों के लिए काम करना पसंद करते हैं, जो अधिक स्थिर नौकरियों का वादा करते हैं। दूसरा कारण यह है कि कई नौकरी आवेदक पर्याप्त रूप से कुशल नहीं होते हैं। कॉलेजों में छात्रों को पढ़ाए जाने वाले ज्ञान और स्टार्टअप में नौकरियों के लिए आवश्यक ज्ञान के बीच अंतर देखते हैं, खासकर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र

में जहाँ प्लॉटफॉर्म तेजी से बदलते रहते हैं।

स्टार्टअप की इन चुनौतियों में सहायता करने के लिए, एसटीपीई ने अगली पीढ़ी ऊष्मायन योजना (एनजीआईएस) के तहत स्टार्टअप को बुनियादी प्रशिक्षण देने की सफल कोशिश की है। सभी स्टार्टअप के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहे हैं। इसके अलावा सभी स्टार्टअप जिन्होंने इन ओसीपी (खुली चुनौती कार्यक्रम) में आवेदन किया है, लेकिन सफल नहीं हो पाए हैं, इन्हें फिर से 6 सप्ताह के शॉर्ट बूटकैम्प के साथ प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वे आगामी ओसीपी कार्यक्रम के लिए अच्छी तरह से तैयार हो सकें।

3. स्टार्टअप समर्थन के तत्व

3.1 सरकारी सहायता में वृद्धि

आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22 के अनुसार भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। सर्वेक्षण में कहा गया है कि सरकार ने वर्ष 2016-17 में 733 के मुकाबले वर्ष 2021-22 में 14,000 से अधिक नए स्टार्टअप को मान्यता दी।

इसी लक्ष्य के साथ भारत को आईटी के उभरते क्षेत्रों में नेतृत्व के लिए भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने दिनांक 13 फरवरी 2018 को डोमेन केंद्रित "उद्यमिता के केंद्र" (उद्यमशीलता केन्द्र) स्थापित करने के संबंध में एक घोषणा की। इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए, एसटीपीआई ने देश के विभिन्न हिस्सों में उपयुक्त भागीदारों के सहयोग से कई डोमेन-केंद्रित सीओई स्थापित किये हैं।

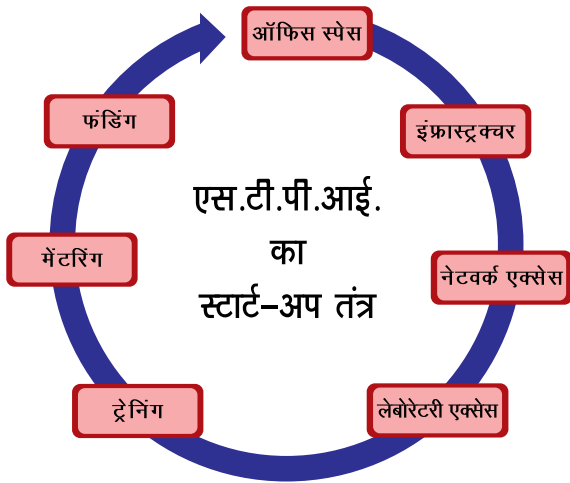
3.2 रोजगार उपलब्ध करना

भारत में एसटीपीआई के स्टार्टअप इकोसिस्टम नौकरी उत्पादन तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में नए उभरे उद्यमी एक निर्धारित उद्देश्य के साथ स्टार्टअप स्थापित करने और लाखों बेरोजगारों को अपार अवसर प्रदान करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार हैं।

महामारी द्वारा फैलाई गई आर्थिक संकट से निपटने के लिए बेरोजगारी सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। स्टार्टअप एक ऐसा हथियार है जिससे हम वैश्विक स्तर पर छिड़ी इस आर्थिक जंग को आसानी से जीत सकते हैं।

3.3 फंडिंग द्वारा स्टार्टअप की सहायता करना

चूंकि स्टार्टअप इकोसिस्टम में उद्यमी अपने स्टार्टअप में निवेश के लिए निवेशकों को आमंत्रित करते हैं, इसलिए लोग इन स्टार्टअप से भी लाभ उठा रहे हैं। भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम का मुख्य उद्देश्य आय के बराबर पुनर्वितरण को प्रोत्साहित करना है। एसटीपीआई की अगली पीढ़ी ऊष्मायन योजना (एनजीआईएस) एक व्यापक इन्क्यूबेशन स्कीम है जिसका विज़न भारत को सॉफ्टवेयर उत्पाद राष्ट्र के रूप में उभारना है। एनजीआईएस ने भारत को नवोन्मेषी, कुशल और सुरक्षित सॉफ्टवेयर उत्पादों के विकास, उत्पादन और आपूर्ति में एक वैश्विक प्लेयर बनाने के लिए प्रेरित किया है। यह



योजना दिनांक 28 अगस्त 2020 को इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा शुरू की गई थी। इस योजना के तहत 150+ से अधिक स्टार्टअप लाभान्वित हो रहे हैं। भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। लघु उद्योगों के निरंतर विकास से अंततः विभिन्न विकासशील क्षेत्रों, जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य आदि का विकास हो रहा है।

जब स्टार्टअप को हैंड-होल्डिंग की आवश्यकता होती है, तो मुख्य समर्थन आयामों में ऑफिस स्पेस और इंफ्रास्ट्रक्चर, बिजनेस सलाह और नेटवर्क एक्सेस के साथ-साथ फंडिंग का प्रावधान शामिल है। स्टार्टअप की इन चुनौतियों में सहायता करने के लिए एसटीपीआई उद्यमिता केंद्र के तहत स्टार्टअप को बुनियादी सपोर्ट जैसे की लेबोरेटरी, ट्रेनिंग, मेंटरिंग, इन्क्यूबेशन, हैंड-होल्डिंग व मार्केट कनेक्ट आदि प्रदान करता है।

इतना ही नहीं, सीओई के सहयोगी मॉडल को एक प्रतिष्ठित उद्योग/शिक्षाविद/उद्यमी के साथ आगे बढ़ाया गया है जो "मुख्य सलाहकार" के रूप में शामिल है। अंततः यह सीओई मॉडल "नौकरी चाहने वालों" में बदल रहा है।

4. निष्कर्ष

भारतीय बाजार स्टार्टअप के लिए कई अवसर प्रदान करता है और बदले में स्टार्टअप विकास को बढ़ावा देने और रोजगार पैदा करने की बड़ी उम्मीदें रखते हैं। पिछले तीन दशकों में, भारत में अधिक स्टार्टअप उभरे हैं और संबंधित ईकोतंत्र गतिशील रूप से विकसित हुए हैं। नतीजतन, समर्थन कई आयामों में बढ़ा है।

एसटीपीआई उद्यमशीलता केन्द्र और अगली पीढ़ी ऊष्मायन योजना (एनजीआईएस) के द्वारा स्टार्टअप को अनेक समर्थन प्रदान कर रही है जैसे कि कार्यालय स्थान और बुनियादी ढांचा, सलाह और नेटवर्किंग के संबंध में व्यावसायिक समर्थन, साथ ही वित्तीय पूंजी की उपलब्धता। स्पष्ट है कि स्टार्टअप इकोतंत्र परिपक्व होता रहेगा। फिर भी भारतीय स्टार्टअप को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। इस तरह की बाधाओं पर काबू पाने के लिए सभी हितधारकों, सरकारी अधिकारियों के साथ-साथ स्वयं स्टार्टअप के प्रयासों की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, लोगों को जोखिम लेने और उसका प्रभावशाली समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने में एसटीपीआई सदैव समर्थन करता रहेगा।



अनुवाद- सांद्रेम्बी और चैश्रा (मणिपुरी लोक कथा)

एन अमित कुमार सिंघा

एक बार की बात है, सांद्रेम्बी और चैश्रा नामक दो सौतेली बहनें रहती थीं। उनके पिता की मृत्यु के बाद उन्हें उनकी माताओं द्वारा पाला गया था। चैश्रा और उसकी माँ हमेशा सांद्रेम्बी और उसकी माँ को नुकसान पहुँचाने के बारे में सोचती रहती थी। एक दिन दोनों मां, मछली पकड़ने गईं। सांद्रेम्बी की मां ने बहुत सारी मछलियां पकड़ी लेकिन चैश्रा की मां के हाथ में सिर्फ सांप ही आये। उसने सांपों को अपने टंगन (मछलियों को रखने के लिए टोकरी) में डाल दिया। मछली पकड़ते-पकड़ते थक कर दोनों माताओं ने फलों से भरे अंजीर के पेड़ के नीचे आराम किया। चैश्रा की मां ने उसे नुकसान पहुँचाने की योजना बनाई और वह अंजीर के पेड़ पर चढ़ गई और सांद्रेम्बी की मां से पके फल को पकड़ने के लिए अपना मुंह खोलने के लिए कहा। सांद्रेम्बी की मां को वह स्वादिष्ट लगा और उसने अधिक मांगे। चैश्रा की मां ने अपने टंगन से उस पर सांप उडेल दिये और उसे मार कर शव को नदी में धकेल कर घर वापस आ गई। सांद्रेम्बी ने अपनी सौतेली माँ से अपनी माँ के बारे में पूछताछ की तो चैश्रा की माँ ने जवाब दिया कि उसकी माँ अभी भी मछली पकड़ रही है। रात होने पर सांद्रेम्बी सो गई और उसकी माँ उसके सपने में आ गई उसकी मां ने बताया कि कैसे उसकी सौतेली मां ने उसकी हत्या कर दी। आगे उसने उससे कहा कि वह कछुआ बन गई है और जैसा कि उसकी मां ने बताया, सांद्रेम्बी सुबह मछली पकड़ने गई और कछुए के साथ घर वापस आई और उसने उसे एक घड़े के अंदर छिपा दिया। चैश्रा और उसकी मां ने इसे देखा और कछुए को खाने की योजना बनाई। उन्होंने

सांद्रेम्बी से इसे पकाने और परोसने के लिए कहा। सांद्रेम्बी ने खाना पकाने से इनकार कर दिया और फिर उसके सौतेले परिवार ने कछुए को काट डाला। यह देख कर वह डर गई और उसने चुपचाप कछुए को पकाया। उन्होंने कछुए को खा लिया और उसकी हड्डियों को पिछवाड़े में फेंक दिया। सांद्रेम्बी ने फिर से अपनी मां को सपने में देखा और इस बार उसने उन फेंकी हुई हड्डियों को इकट्ठा कर के 7 दिनों के लिए जमीन में दफनाने के लिए कहा गया। वह तुरंत उठी और उसने ऐसा ही किया, लेकिन वह बहुत लंबे समय तक इंतजार नहीं कर सकी और 6 वें दिन खुदाई कर डाली और वहां उसने अपनी मां को अबाबील पक्षी के रूप में देखा, जो फौरन उड़ गया। समय बीतता गया, दोनों बहनें अब बड़ी हो गई थी। एक दिन वे पानी लेने के लिए निकले। सांद्रेम्बी ने पुराने कपड़े पहने थे जबकि चैश्रा ने नए कपड़े पहने थे। वहां से गुजर रहे राजा ने उन्हें देखा और उसे सांद्रेम्बी से प्यार हो गया। उसने सांद्रेम्बी से पानी मांगा, लेकिन उसने मना कर दिया। उसने उसे उसकी सौतेली बहन से पानी पीने के लिए कहा क्योंकि उसे डर था कि उसके पानी पिला देने से उसके सौतेले परिवार का अपमान न हो जाये। राजा बिना पानी पीये चला गया। चैश्रा ने अपनी मां को सारा किस्सा सुनाया और फिर जैसा कि उसकी मां ने उसे सुझाव दिया, उसने पानी लाने के लिए अपने कपड़ों को सांद्रेम्बी के कपड़े से बदल दिया। राजा ने फिर आकर सांद्रेम्बी से ही पानी मांगा। चैश्रा को गुस्सा आ गया। सांद्रेम्बी को राजा ने पकड़ लिया और उससे शादी कर ली और एक साल बाद उन्हें एक बेटा हुआ।

चैश्रा और उसकी मां ने सांद्रेम्बी को मारने की योजना बनाई। वे राजा और सांद्रेम्बी को भोजन के लिए आमंत्रित करने के लिए महल गए। राजा ने निमंत्रण अस्वीकार कर दिया तो सांद्रेम्बी अकेली आई। भोजन के बाद सांद्रेम्बी महल में वापस जाना चाहती थी। चैश्रा ने उसके कपड़े बिस्तर के नीचे छिपा दिए। सांद्रेम्बी अपने कपड़ों को वापिस लाने के लिए नीचे उतरी तभी चैश्रा और उसकी मां ने सांद्रेम्बी पर गर्म उबलता हुआ पानी डालकर उसकी हत्या कर दी। सांद्रेम्बी की आत्मा कबूतर के रूप में उड़ गई। चैश्रा ने सांद्रेम्बी के रूप बदलकर महल में चली गई। राजा चैश्रा के उस वेष में उस को पहचान नहीं सका लेकिन उसे कुछ अजीब सा लगा। दूसरी तरफ एक कबूतर एक पेड़ पर बैठा था जिसके नीचे महल का एक माली काम कर रहा था। कबूतर ने उसकी दुःखद कहानी माली को एक गीत के रूप में सुनाई, जिसे सुनकर माली ने तुरंत राजा को सूचना दी। राजा ने कबूतर को एक छोटे से पिंजरे में रख दिया। रात को राजा के सपने में सांद्रेम्बी ने उसे कबूतर को 7 दिनों तक रखने के लिए कहा कि इससे वह अपने मानव रूप में वापस आ जाएगी।

राजा तुरंत उठा और उस पिंजरे को छिपा दिया। एक दिन उसकी अनुपस्थिति में, चैश्रा ने कबूतर को मार कर पका दिया। राजा यह देख कर गुस्से में आ गया और उसने वह खाना महल के पास फेंक दिया। कुछ दिनों

बाद उस जगह पर आम का पेड़ उग आया, जिसमें केवल एक फल लगा। राजा ने फल पर कड़ी नजर रखी। एक दिन माली ने उसे तोड़ दिया। वह आम खाना चाहता था लेकिन दुर्भाग्य से माली हमेशा उसे खाने में विफल रहा। या तो वह अपना चाकू कहीं खो देता था या आम खाने से पहले उसे नहीं ढूंढ पाता। जैसे-तैसे करके ये 7 दिन भी बीत गए और 8वें दिन आम साबी में बदल गया। उसने कृतज्ञ होकर माली के लिए स्वादिष्ट भोजन पकाया और खुद को छिपा लिया। खाने को देखकर माली हैरान रह गया। कुछ दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। माली ने रहस्य का पता लगाने का फैसला किया और वहीं घर के पास ही छिप गया।

उसने देखा कि एक खूबसूरत महिला उसके लिए खाना बना रही है। उसने उसे पकड़ लिया और उसके आश्चर्य के लिए वह कोई और नहीं बल्कि सांद्रेम्बी थी। माली ने राजा को सब कुछ सुनाया। राजा सांद्रेम्बी को महल में ले गया। राजा ने सांद्रेम्बी और चैश्रा को तलवारबाजी का आदेश दिया। पहले चैश्रा ने सांद्रेम्बी पर तलवार से जोरदार प्रहार किया लेकिन उसे कुछ नहीं हुआ। फिर सांद्रेम्बी की बारी आई। उसने चैश्रा पर प्रहार किया और चैश्रा की मौके पर ही मौत हो गई। सभी ने खुशी मनाई। सांद्रेम्बी रानी बन गई और इस प्रकार, राजा और रानी उसके बाद खुशी से रहने लगे।



“हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है” – कमलापति त्रिपाठी



“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, व उन्नत नहीं हो सकता” – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है” – महात्मा गांधी



भला आदमी

राजेंद्र सिंह मंडारी

भौतिकवाद के इस युग की विसंगतियां और वर्तमान सामाजिक असंतुलन पर अगर हम नजर डालें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि एक स्वस्थ समाज की स्थापना हेतु, हमें बच्चों को विभिन्न विषयों के साथ-साथ, सुसंस्कारिता पर भी शिक्षा देने की आवश्यकता है। बच्चों में सुसंस्कारिता जागृत करने हेतु क्या-क्या किया जाना चाहिए, यह प्रश्न उठने पर अधिकांश लोग सरकार की शिक्षा नीति और शिक्षणतंत्र को कोसकर अपनी बात पर विराम लगा देते हैं। इससे बात नहीं बनने वाली। हम में से किसी न किसी को तो कभी न कभी व्यावहारिक पहल करनी ही पड़ेगी।

राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति का चक्र चलाने एवं सामाजिक संतुलन को पुनः स्थापित करने हेतु राष्ट्र में आज प्रखर, तेजस्वी महामानवों की बड़ी ही आवश्यकता है। हमारी यह मांग तभी पूरी हो सकेगी जब हम आज के बालकों को वैचारिक और भावनात्मक पोषण प्रदान कर सकें। जिस प्रकार छोटे से बीज के भीतर एक विशाल वृक्ष समाया रहता है, उसी प्रकार एक बालक के भीतर भी विकसित मानव समाविष्ट रहता है। आवश्यकता इस बात की है कि बालक की अन्तर्निहित वृत्तियों और शक्तियों को सहज रूप से विकसित होने का अवसर दिया जाए। कौन जानता है कि बालक कौन सी वृत्ति के विकास से क्या से क्या बन जाए।

गौरतलब है की आधुनिक शिक्षणतंत्र में भी एक बड़े बदलाव की ही नहीं बल्कि संपूर्ण शिक्षातंत्र तो विद्यातंत्र में बदलने की आवश्यकता है। शिक्षा और विद्या में एक मौलिक अंतर है। शिक्षा उसे कहते हैं, जो जीवन के बाह्य प्रयोजनों को पूर्ण करने में सुयोग्य मार्गदर्शन

करती है। साहित्य, शिल्प, कला, विज्ञान, स्वास्थ्य, समाज शिक्षा की परिधि में आते हैं। विद्या का क्षेत्र, शिक्षा के क्षेत्र से बहुत आगे का है और इसकी परिधि में आत्मबोध, आत्मनिर्माण, कर्तव्यनिष्ठा, सदाचरण, समाजनिष्ठा इत्यादि आते हैं, जो व्यक्ति के चिंतन, दृष्टिकोण एवं सम्मान में आदर्शवादिता और उत्कृष्टता का समावेश करते हैं। इससे व्यक्ति में दया, करुणा, ममता, उदारता, परमार्थ-परायणता, सेवा-सहकारिता, शिष्टता, शालीनता, चरित्र-निष्ठा, शौर्य-साहस, न्याय-प्रियता, सुव्यवस्था, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी इत्यादि जैसे गुणों का विकास होता है।

शिक्षा और विद्या दोनों के समन्वय से ही व्यक्ति जीवन जीने की कला सीखता है। अतः यह परम आवश्यक है कि बालकों में जन्म के तुरंत बाद से ही विद्या और शिक्षा दोनों का संवर्धन किया जाए, ताकि वे बड़े होकर एक सफल व्यक्ति के साथ-साथ एक महामानव भी बन सकें।

उपरोक्त के अलावा, शिक्षा और विद्या में एक और महत्वपूर्ण अंतर है। शिक्षा हमें बाह्य चीजों को समझने में सहायक होती है जबकि विद्या हमें दुनिया से कहीं ज़्यादा



स्वयं को समझने में सहायक होती है। अनेक ऐसे विज्ञान हैं जिनकी बहुत कुछ जानकारी मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। जानकारी की अनेक वस्तुओं में से अपने आपकी जानकारी अति आवश्यक है। खुद अपने बारे में ज्ञान प्राप्त किए बिना जीवन क्रम बड़ा ही कष्टदायक, डावांडोल, अनिश्चित और कंटकाकीर्ण हो जाता है। अपने वास्तविक स्वरूप की जानकारी न होने की वजह से मनुष्य न सोचने लायक बातें सोचता है और न करने योग्य कार्य करता है। वह यह भूल जाता है कि सच्चे सुख और सच्ची शांति का राजमार्ग एक ही है और वह है आत्मज्ञान। यही कारण है कि आज के युग में मनुष्य के पास सारे भौतिक सुखों की उपलब्धता के बावजूद मानव जीवन एक कलंक बना हुआ है।

अपने संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त कर लेने के पश्चात कुछ भी जानना बाकी नहीं रह जाता है। मानव तो क्या, हर जीव दरअसल में ईश्वर ही है। केवल विकारों की रस्सी में बंधकर वह बुरा दिखाई देता है, परन्तु उसके भीतर एक अमूल्य निधि भरी होती है। मानव शक्ति का एक केन्द्र और शक्ति भी ऐसी कि हम उसकी कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। सारी कठिनाइयाँ, सारे दुःखों का कारण यह है कि हम अपने आपको जानने की चेष्टा ही नहीं करते। जब हम आत्मस्वरूप को समझ जाएंगे तब किसी प्रकार का कोई भी कष्ट नहीं रहेगा और हम आत्मस्वरूप का महिमामंडन करते हुए यही कहेंगे कि **“मैं उत्पन्न हुआ ही नहीं हूँ तो फिर मेरी मृत्यु कैसी, मैं प्राण ही नहीं हूँ तो फिर ये भूख प्यास कैसी, मैं चित्त ही नहीं हूँ तो फिर मुझे ये शोक—मोह कैसा, जब मैं कर्ता ही नहीं हूँ तो मेरा ये अंध मोक्ष कैसा”** ।।

मानव जब समझ जाता है कि वह क्या है, तब उसे वास्तविक ज्ञान हो जाता है और वह सभी पदार्थों का रूप सही से देखकर उसका सही उपयोग करने योग्य हो जाता है। चाहे किसी दृष्टि से देखा जाए, आत्मज्ञान ही सर्वसुलभ और सर्वोच्च ज्ञान सिद्ध होता है। किसी व्यक्ति से अगर पूछ जाए कि वह कौन है, अपने आपको एक आत्मा बताने के बजाय वह अपने वर्ण, कुल, व्यवसाय, पद या सम्प्रदाय का परिचय देने लगता है—ब्राह्मण हूँ,

अग्रवाल हूँ, बजाज हूँ, तहसीलदार हूँ, वैष्णव हूँ, इत्यादि इत्यादि। और अधिक पूछे जाने पर अपने निवास स्थान, वंश, इत्यादि का विस्तृत ब्यौरा देने लगता है। शरीर भाव में मनुष्य इतना तल्लीन हो चुका है कि वह अपने आपको एक शरीर ही मानने लगा है। वह पूर्णरूपेण यह भूल चुका है कि वह एक शक्ति है, एक आत्मा है। ये सब भूलने के कारण उसके भले आदमी बनने की सारी संभावनाएं समाप्त हो चुकी हैं।

बनो खिलाड़ी, अंपायर या फिर कप्तान बनो तुम कितने ही बड़े किसी मुल्क के हुक्मरान बनो तुम है जरूरी बात बहुत एक हंसी जिन्दगी के लिए सबसे पहले तो बस एक भला इंसान बनो तुम है गर ताकत तो करो उजाला लाचार जिंदगी में दो चार सही अँधेरे कमरों का रोशनदान बनो तुम कर न सको भला किसी का तो सोचो मत बुरा भी बेवजह नहीं किसी के काम में व्यवधान बनो तुम सोचोगे लगाने की आग तो जलेगा घर आपका भी भड़क उठे कोई चिंगारी ऐसा न तूफान बनो तुम यूएस, फ्रांस, कनाडा रूस होंगे ये मुल्क अमीर पर पुजारी इंसानियत का हिन्दुस्तान बनो तुम पढ़ो लिखो खूब सीखो हुनर सच धर्म खुदारी का हाथ पाँव जिस्म नहीं ज़हन से पहलवान बनो तुम खाना अपने नसीब का पर दो दुःख सुख में साथ दोस्त हो या दुश्मन दुःख में न अनजान बनो तुम करो तुम कोशिश सुलझाने की गुथियाँ सब की किसी जिन्दगी का न बेवजह इम्तिहान बनो तुम जिंदगी दो दिन की टूटेगा पत्ता शाख से एक दिन अंधे की आँख गूंगे के होंठ बहरे के कान बनो तुम होगा खुश खुदा तेरा करो जो नेक काम कुछ किसी मुरझाए हुए चेहरे की मुस्कान बनो तुम

आनी जानी है धन दौलत शोहरत आएगी— जाएगी
रहो जिंदा किताबों में ऐसा एक गुलदान बनो तुम
एक भला इंसान बनो तुम, एक भला इंसान बनो तुम

आत्मा शरीर से पृथक है और इन दोनों के स्वार्थ भी पृथक हैं। इस भूल में, मानव अपनी इच्छाएँ इतनी उग्र कर चुका है कि वह अपनी आत्मशक्ति को गंवाकर एक पापपुंज शैतान बन चुका है। अनीतिपूर्वक स्वार्थ साधने में आज के मानव को कोई हिचक नहीं होती। स्वाभाविक है कि ऐसे दृष्टिकोण के व्यक्ति न तो खुद सुखी रहेंगे और न ही अपने आस पास के लोगों को सुखी रहने देंगे। काम और लोभ जैसे कई ऐसे तत्व हैं, जिनका कितना भी भोग किया जाए कम ही लगता रहेगा। इस अतृप्ति की वजह से अशांति, चिंता और व्याकुलता भी दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती जाती है और मानव जीवन एक अभिशाप बन कर रह जाता है।

जब मनुष्य अपने आप को आत्मा महसूस करने लगेगा तो उसकी इच्छा, आकांक्षा और अभिरुचि इसी

दिशा में अग्रसर होती जाती है और उसे आध्यात्मिक सुख की अनुभूति होने लगती है। हम सभी का कभी न कभी यह अनुभव रहा है कि जब भी हम चोरी, हिंसा, व्याभिचार, छल, एवं अनीति भरे अन्य दुष्कर्म करते हैं, हमारे अंतःकरण में एक प्रकार का कोहराम मच जाता है। हमारे हाथ-पाँव फूल जाते हैं और कलेजा धड़कने लग जाता है। इसके विपरीत जब व्यक्ति परोपकार, परमार्थ, सेवा, सत्कार, दान, उदारता, त्याग, तप के कार्य करता है तो हृदय के किसी कोने में संतोष, हल्कापन, आनंद एवं उल्लास की अनुभूति होती है। इसका तात्पर्य यह है कि अनीतिपूर्ण कार्यों को हमारी आत्मा नापसंद करती है और नीतिपूर्ण कार्यों को पसंद करती है।

अब ये निजी रूप से हमारी और हमारे नीति निर्धारकों की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है कि शिक्षानीति को विद्यानीति में परिवर्तित करके सभी बच्चों को शिक्षित करें, ताकि उनके पास एक भला आदमी बनने के सिवाय और कोई विकल्प उपलब्ध न हो।



विराम चिह्न की आत्मकहानी, सुनें उसी की जुबानी



प्रभाकर पांडेय

मैं विराम चिह्न हूँ। कुछ विद्वान मुझे विराम चिह्न या विराम भी बोलते हैं लेकिन मुझे कोई आपत्ति नहीं है। हाँ, एक बात मैं बता दूँ; मेरी कोशिश रहती है कि लिखित वाक्यों आदि में मैं किसी न किसी रूप में उपस्थित रहूँ। मैं अपने मुँह मियाँ मिट्टू नहीं बन रहा, पर एक दिन मेरे गुरुजी भी बता रहे थे कि दुनिया में जो भी वस्तु, संकल्पनाएँ आदि हैं; सबका अपना-अपना महत्व होता है। मुझे जिज्ञासा हुई और मैंने गुरुजी से पूछा, "गुरुजी मेरी उपयोगिता क्या है?" गुरुजी मुस्कुराए और बोले, "विराम! बेटे विराम! तुम तो बहुत काम के हो। तुम्हारी अनुपस्थिति में अर्थ का अनर्थ हो जाए और वाक्यों में संदिग्धता आ जाए।" मुझे प्रसन्नता हुई और फिर मैंने गुरुजी से प्रार्थना की कि जरा मेरे परिचय के साथ-साथ मेरी उपयोगिता पर भी प्रकाश डालने की कृपा करें। गुरुजी ने जो कुछ बताया, वह सब मैं बयाँ कर रहा हूँ; कान तो दीजिए।

लिखित भाषा की स्पष्टता, अर्थपूर्णता, प्रभावपूर्णता आदि में मेरा योगदान अविस्मरणीय एवं अमूल्य है! आइए, एक उदाहरण की सहायता से समझाता हूँ:-

पढ़ो, मत लिखो। इस वाक्य से यह स्पष्ट है कि पढ़ने के लिए कहा जा रहा है।

उपरोक्त वाक्य में जरा मेरे (विराम चिह्न) स्थान में परिवर्तन करके देखते हैं:- पढ़ो मत, लिखो। इस वाक्य में लिखने के लिए कहा जा रहा है।

देखा आपने मेरा कमाल। यहाँ तो मेरे स्थान परिवर्तन करने से ही वाक्य विपरीत अर्थ देने लगा।

आइए, अब मैं अपने रूपों का परिचय कराता हूँ,

उदाहरण रूपी चाय की चुस्की के साथ।

1. पूर्ण विराम (।) :- नाम से ही मैं स्पष्ट हूँ। वाक्य पूर्ण होते ही मैं उपस्थित हो जाता हूँ! जैसे- मेरा नाम विराम है! मैं अविराम का छोटा भाई हूँ।
2. अर्द्ध विराम (;) :- पूर्ण नहीं हूँ मैं! हाँ महोदय, वाक्य के बीच में ही शोभायमान हो जाता हूँ! जैसे- जब भी श्याम आता है; तुम भी आ जाते हो।
3. अल्प विराम (,) :- जब भी वाक्य आदि में एक तरह की वस्तुओं/चीजों आदि को सूचित करने वाले शब्द आते हैं; मुझे अपनी उपस्थिति दर्ज करनी ही पड़ती है! जैसे- राम, श्याम और रहीम मित्र हैं।
4. उपविराम (:) :- मूल बात को लिखने से पहले मुझे स्थापित कर दें तो मैं गदगद हो जाऊँ। जैसे- राम तीन हैं: श्रीराम, परशुराम और बलराम।
5. प्रश्नवाचक चिह्न (?) :- उत्तर की अपेक्षा करें और मैं न रहूँ।
जैसे- आप कहाँ जा रहे हैं?
6. विस्मयसूचक चिह्न (!) :- वाक्य विस्मयभरा हो तो मेरी उपस्थिति प्रार्थनीय है। जैसे- अरे! तुम कब आए?
7. रेखिका चिह्न (-) :- शब्द के बाद मुझे लगाकर उसकी परिभाषा या उसकी उपयोगिता आदि को चरितार्थ कर दीजिए। जैसे- जैसे के बाद लगा हूँ।

8. संयोजक चिह्न (-) :- अपने भाई रेखिका चिह्न जैसा ही रूप है मेरा, पर है उनका आधा। मैं अभिन्न शब्दों के बीच में आकर उनके प्रेम, संबंध आदि को बढ़ा देता हूँ।

जैसे- माता-पिता, भाई-बहन।

9. विवरण चिह्न (:-) :- विवरण लिखने से पहले मुझे लगाइए जैसे मेरे रूपों का विवरण लिखते समय लगाया है आपने।

10. कोष्ठक चिह्न (()) :- मैं अपने मुँह में उसी शब्द या शब्दों को स्थान देता हूँ, जिसका संबंध मेरे पहले आए शब्द या शब्दों से हो।

जैसे- वह मुम्बई (महाराष्ट्र) में रहता है।

11. उद्धरण चिह्न (' / " ") :- मैं मूल शब्द या शब्दों/पद को घेरकर उसकी उपयोगिता को सबकी नजरों में लाता हूँ।

जैसे- 1. 'माँ मन्थरा' प्रभाकर द्वारा लिखा गया है। 2. राम ने कहा, "सीता अच्छी है।"

12. पुनरुक्तिसूचक चिह्न (") :- मेरा प्रयोग करने से आप एक ही शब्द को एक के नीचे एक, कई बार लिखने से बच जाएँगे।

जैसे- 1. श्री लालू यादव। 2. " लल्लू सिंह।

13. लाघव चिह्न (o) :- शब्द को संक्षेप में लिखना चाहते हैं तो मेरा उपयोग करें।

जैसे- 1. भा० प्रौ० सं० (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान), 2. पं० मदन मोहन मालवीय (पं० = पंडित)

आप सबको धन्यवाद ज्ञापित करते हुए, मैं विराम चिह्न अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

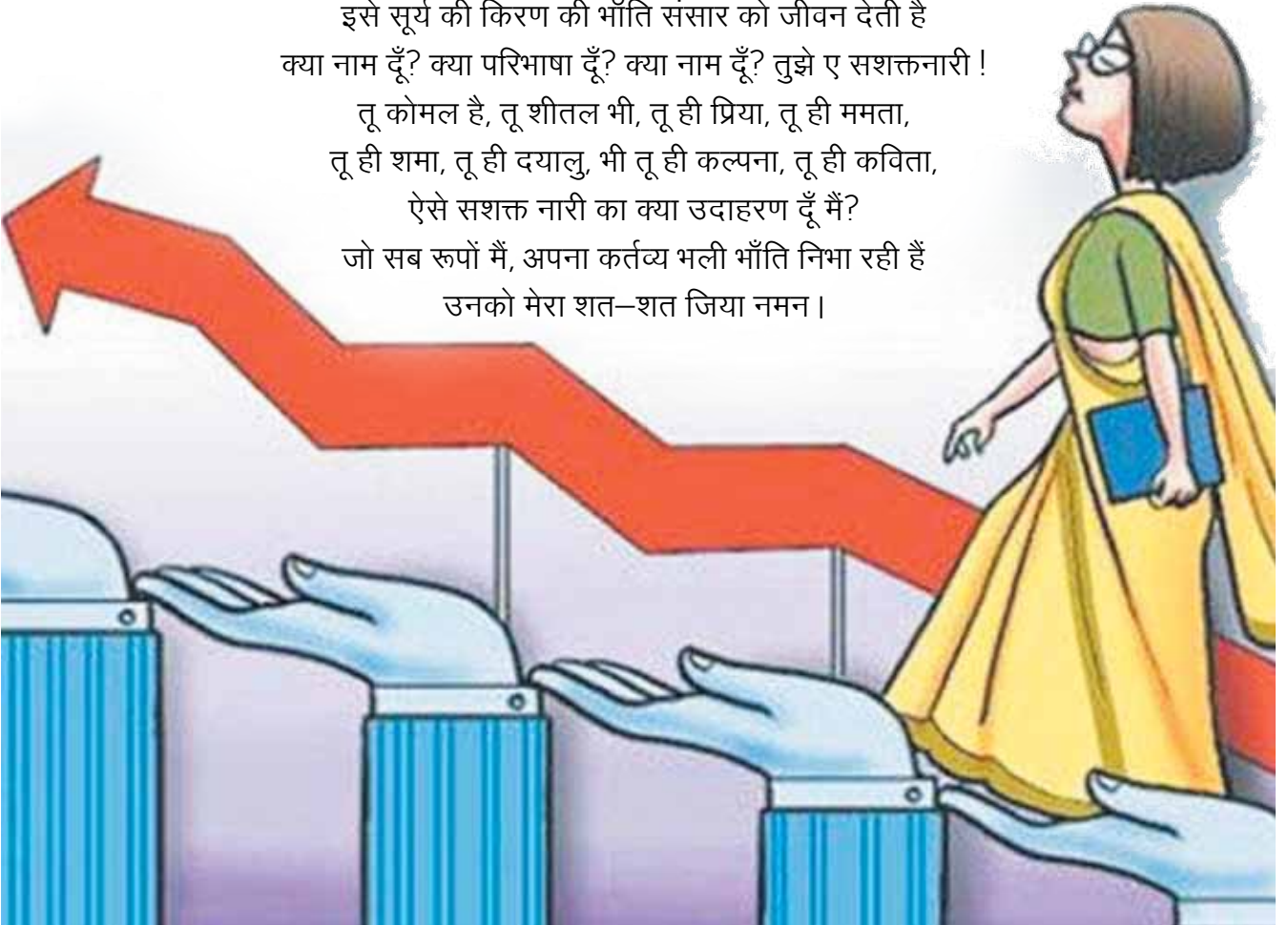


सशक्त महिला



सोनल कमल

सशक्त महिला का क्या उदाहरण दूँ मैं?
वास्तविक माता, शिक्षिका, रानी, ब्राह्मणी, गाय माता, नर्स और धरती माता ।
ये सात माताएँ, वे दोनों हमें अवगत कराएँ
जो हर एक नारी ने यह भूमिका निभाएँ
ऐसे माता के रूप का क्या उदाहरण दूँ मैं?
जो एक प्रेम का सागर है, त्याग की मूरत है, क्षमा का भंडार है
क्या नाम दूँ मैं इसका क्या परिभाषा दूँ? क्या नाम दूँ? तुझे ए सशक्त नारी!
तेरे रूप अनेक, तू किसी एक नाम में कहाँ समाती?
इसे सूर्य की किरण की भाँति संसार को जीवन देती है
क्या नाम दूँ? क्या परिभाषा दूँ? क्या नाम दूँ? तुझे ए सशक्तनारी !
तू कोमल है, तू शीतल भी, तू ही प्रिया, तू ही ममता,
तू ही शमा, तू ही दयालु, भी तू ही कल्पना, तू ही कविता,
ऐसे सशक्त नारी का क्या उदाहरण दूँ मैं?
जो सब रूपों में, अपना कर्तव्य भली भाँति निभा रही हैं
उनको मेरा शत-शत जिया नमन ।





अरविन्द शर्मा

और हम सोच रहे होते हैं.....

और हम सोच रहे होते हैं कि अब तो सब हो गया!!
देख लिया जितना देखना था!
अब तो क्या ही हमारे साथ नया होगा!
फिर! जिंदगी एक नया टीचर भेजती है!
अरे! वो चैप्टर तो सिलेबस में था ही नहीं!
हमने तो सोचा ही नहीं था कि ये मोर्चा अभी भी बाकी होगा!
कबूतर की फितरत है इंसान की भी!
सोचता है आंख बन्द कर लूंगा तो बिल्ली मुझे देख नहीं पाएगी!
पर साहब ये बिल्ली सबको देखती है!
बस अपना नम्बर आना शेष होता है!
'सपने' ख्वाहिशें, लक्ष्य हासिल करना 'जीत कर आना' ये सबक तो हमने ही ईजाद किए थे!
अब हम पर ही भारी पड़ रहे हैं सो भुगतो!
'गर्व', डर, थोड़ा सा अहं इनसे जो कसैला सा 'च्यवन प्राश' और इसका रोज़ एक चम्मच खाना, इसमें कोई नुकसान नहीं बस थोड़े प्लान में बाधा सी लगती है!
जैसे जैसे सोच बदल रही है, सोचे हुए की रेत भी मुट्ठियों से फिसल रही है!
मौसम बदल रहा है!
लाज़मी है वो बदलाव, उसका ट्रांजीशन पीरियड थोड़ा 'जुकाम' थोड़ा 'टेम्परेचर' तो बढ़ाएगा ही!

फिर जब हम इस बदलाव को सह जाएंगे तो शायद इसका आनंद भी लेंगे!
आजकल दूर के दोनों ही – वे जो 'सुधर गए' और वे जो 'सिधार' गए – अक्सर याद आते हैं!
कैसे किया होगा उन्होंने ये?
जैसे 'रैफरेंस बुक्स' से समस्याओं के समाधान ढूढ़ते हैं हम भी 'उनकी कही' और 'उनसे सही' से याद करके आगे की कहानी लिखने की कोशिश करते हैं!
अक्सर अटकते हैं, भटकते हैं!
लेकिन 'खूंटे' की रस्सी ऐसे कसकर, कईबार लथेर कर रखी है हाथ में कि 'गुमते' नहीं!
सवाल अक्सर हमारा 'सामना' करते हैं उनसे कहां भागिएगा?
वो डराते हैं कभी उम्मीद भरी भोली आंखों में आकर!
कभी व्यंग्य भरी टेढ़ी मुस्कानों में!
और कभी आइने में अपने ही अक्स से!
जवाबों की तलाश जारी है!
पलकें झपकाना बंद कर दिया ताकि हार न जाएं!
ताकि कायर न लगें,
ताकि कोई इंपोर्टेंट सवाल रह न जाए!
कभी-कभी तो भी लगता है कि औरों से ज्यादा सवाल है हमारे प्रश्न पत्र में! और कम्बख्त सारे सवाल 'कंपलसरी' हैं!

लगता ही नहीं यकीनन— जिंदगियां सोच के बॉक्सेज में बंट गई हैं! दोनों ही बॉक्स की सोच दूसरे के प्रति रेगिस्तानी है!

यानि आसपास कुछ हरा भरा न हो तो अच्छा!

मगर चाहिए भी वो हरियाली!

मां वसुंधरा ने किया है ऐसा

इंसान की शैतानी बुद्धि ने भी आर्टीफीशियल किया है!

लेकिन मानवीय संबंधों की धरती पर रेगिस्तान और हरियाली की कामना 'ओएसिस' की तरह है!

बहुत खूबसूरत पर सीमित!

लगता है आज के जीवन का सबसे बड़ा मंत्र है 'सीमित'!

सीमित व्यवहार, सीमित संबंध, सीमित संपर्क, सीमित अपेक्षा और सीमित समय!

और उस सीमित के मंत्र का जाप करते हुए असीमित की कामना!

सही भी है हम गूगल एज में हैं!

जिधर का सोच लें उधर को असीमित देख लेते हैं बस प्रॉब्लम ये है कि वो असीमित नया, रोमांचक लेकिन शायद जोखिम और अनिश्चितता भरा है!

सब 'कुटुंब' से 'कबीलों' में तब्दील हो रहा है!

इसीलिए शायद कुटुंब भी कबीलों में बदल रहे हैं! 'युवा कबीले', सीनियर सिटिजन कबीले आदि आदि...

अब सब 'हब' है और हम हब्स में खुश हैं!

हमारी 'नई पौध' भी अब पुनः रोपण के लिए तैयार है और उनसे पहले रोपी गई खुश भी है और फल भी रहे हैं! सब जगह सदाबहार के फूल नज़र आते हैं!

नित समीकरण बदल रहे हैं!

सवाल दरअसल ये है कि वेव का हिस्सा बन सकते हैं? या किनारे पर बैठ कर प्रतीक्षा करना चाहते हैं!

हाथ पांव और सांस सभी फूलने लगे हैं!

बहुत दूर की देखने की न अब आवश्यकता है न क्षमता!

सो क्यों न किनारे पर बैठ कर मज़ा लें!

किसान की तरह लहलाती फसल को निहारें!

'पास' तो इस इन्तेहान में भी होना ही है!

पूरा बैच और सीनियर्स भी मेहनत कर रहे हैं!

हम अकेले फेल होकर और अकेले रह जाएंगे 'अकेले' अकेलेपन से बचने के लिए ही तो जद्दोजहद जारी था, बदलाव नकारते रहे, टालते रहे!

और अब एक्सट्रा क्लासेज कर रहे हैं! हा! हा! हा!

मुझे भरोसा है! वैसे 'भरोसा' कितना भारी शब्द है न और कितना हल्का भी!

जो समझे उसको पूरी उम्र भी कम और जा न समझे उसके लिए भंगार!

खैर मुझे पूरा 'भरोसा' है कि जो भी इस नीरस बेतरतीब, थोड़ी अजीब कागज़ पर उतरे विचारों, भावों जैसी चीज़ को पढ़ रहा होगा, अगर वो एक विशेष आयु के पार होगा तो वो यकीनन मुस्करा रहा होगा!

और जिसकी अगली पुश्त में 'शक्ति' तत्व अधिक है वो शर्तिया ये मानते हुए मुस्करा रहा होगा कि वाकई में उसे प्रश्न पत्र में कुछ एक्सट्रा कंपलसरी सवाल करने पड़े हैं!

और जो इस 'पता नहीं क्या' है को आधा पढ़कर छोड़ते मेरा नाम पढ़कर फिर से पूरा पढ़ने का कष्ट कर रहे हों यकीनन उस 'वेव' में से एक है, जिसका हमने पहले ज़िक्र किया था और जिनपर ये सारी किस्सागोई हो रही है!





“शिवा साधना” नाटक में चित्रित छत्रपति शिवाजी की जीवनी

डॉ. कविराजू

भारत के इतिहास में मध्ययुगीन विदेशी मुसलमान शासकों के अत्याचारों के विरुद्ध भारतीय स्वाभिमान की रक्षा करने हेतु स्वतंत्र हिंदू साम्राज्य की स्थापना कर उनकी नींद उड़ाने वाले एवं सभी धर्मावलंबियों के प्रति समादर एवं सहिष्णुता की भावना रखने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज की जीवनी पर आधारित अनेक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं, जिनमें हिन्दी भाषा में भी काफी संख्या में रचनाएँ मिलती हैं। उनमें श्री हरिकृष्ण प्रेमी के हिन्दी नाटक ‘शिवा साधना’ में ऐतिहासिकता का अधिक मात्रा में पालन किया जाने के कारण उसका महत्वपूर्ण स्थान

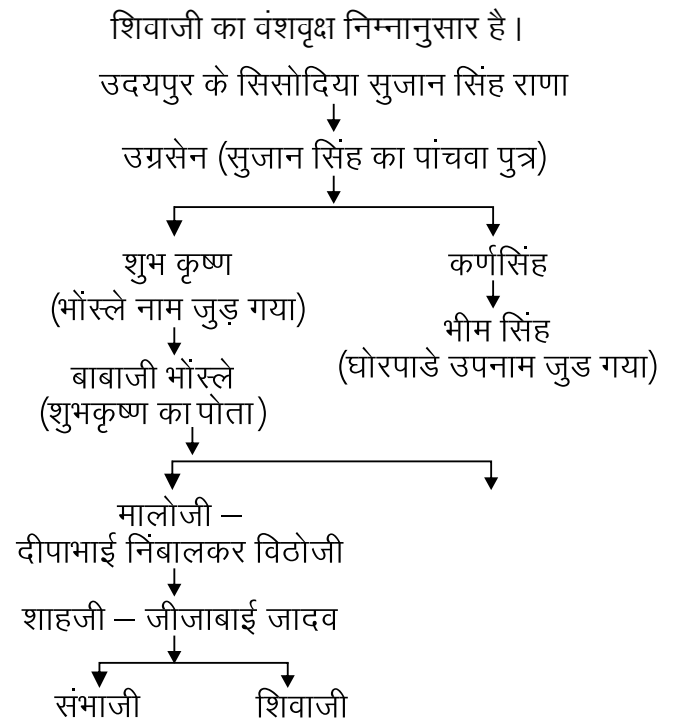


है, जो हिन्दी भवन जालंधर एवं इलाहाबाद द्वारा 1937 ई. में प्रकाशित हुआ।

हर वर्ष महाराष्ट्र राज्य शासन द्वारा छत्रपति शिवाजी की जयंती 19 फरवरी को मनाई जाती है। शिवाजी के जन्म को लेकर इतिहासकारों में मतभेद हैं।

शिवाजी का परिवार बहुत बड़ा था। उन्होंने

विविध संदर्भों में कुल आठ विवाह किए। उनकी आठ संतान थीं। उनमें दो पुत्र एवं छः पुत्रियाँ थीं।



इस नाटक के प्रथम अंक और द्वितीयांक में छः, तृतीयांक में आठ, चतुर्थांक एवं पंचमांक में छः दृश्य हैं।

नाटक के प्रथमांक का प्रारंभ “तुलजापुर के भवानी माता के मंदिर में युवक शिवाजी अपने मित्रों (तानाजी मालसुरे, येसाजी कंक एवं बाजी पासलकर) के साथ माता की आरती उतारते हुए” हुआ है। वहाँ शिवाजी रोटी एवं वस्त्रहीन दीन दुःखियों की दरिद्रता दूर करने में, सम समाज के निर्माण में, धार्मिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए तथा स्वराज की स्थापना एवं विदेशी शासन की समाप्ति करने में अपने मित्रों से सहायता की प्रार्थना करते हैं। वे सब शिवाजी को अपनी सहमति देते हैं।

शिवाजी के पिता शाहजी भोंस्ले बीजापुर राज्य में उच्च अधिकारी (जागीरदार) हैं। **शिवाजी** द्वारा निरंतर बीजापुर के गढ़ों पर किये जाने वाले आक्रमणों से उनके पिता को बीजापुर के बंदीगृह में रखा जाता है, जिससे शिवाजी के संरक्षक एवं गुरु **दादाजी कोंडदेव** नाराज होकर **जीजाबाई** एवं शिवाजी के सम्मुख विषपान कर आत्महत्या कर लेते हैं। मरने से पहले **शिवाजी** को स्वराज्य साधना पूर्ण होने का आशीर्वाद देते हैं। रायगढ़ में पदच्युत बीजापुर के सात सौ सैनिकों को शिवाजी अपनी सेना में स्थान देकर अपनी धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देते हैं। **शिवाजी** मन्दिर एवं मस्जिद के प्रति समान आदर रखते हैं। कल्याण राज्य से हुए युद्ध में विजयी होकर आये मराठा के एक सेनापति **आबाजी सोनदेव**, वहाँ के शासक **मौलाना अहमद** एवं उनकी बहू को बंदी बनाकर शिवाजी के सामने प्रस्तुत करता है। उस स्त्री को स्वीकार करने की प्रार्थना करता है। मध्युगीन इतिहास साक्षी है कि जितने भी मुसलमान शासक और सैनिक हिंदू राज्यों पर आक्रमण करके विजयी हुये थे, वे सब उनकी रानियों को और अन्य हिंदू महिलाओं का अपहरण करके अपने जनाने में रखे थे। वे भी इस प्रकार की नीति का पालन करने का अनुरोध करते हैं तब **शिवाजी** उस स्त्री को 'माता' कहकर संबोधित करते हैं। "डरो मत माँ! डरो मत! शिवाजी विलासी कुत्ता नहीं है। तुम्हें देखकर मेरे हृदय में केवल यह भाव उठा है कि तुम मेरी माँ होती, तो क्या विधाता ने मुझे सौंदर्य की दौलत देने में इतनी कंजूसी की होती।" **सोनदेव** को दंड देना चाहते हैं। परंतु उनकी माता **जीजा बाई** उन्हें रोककर स्वयं उनके शील की परीक्षा लेने की बात कहती हैं। अपने पिता **शाहजी भोस्ले** को बंदी बनाने के पीछे अपनी हत्या के षडयंत्र मराठा गुप्तचर द्वारा जानकर **शिवाजी** अपनी पत्नी **सईबाई** की सलाह से मुगलों से संधि करके अपने पिता को मुक्त करवाते हैं। मुगलों से संधि करने के उपरांत **शिवाजी** जुनारगढ़ एवं अहमद नगर को लूटते हैं। **शिवाजी** को कुचलने की इच्छा रखने वाले **औरंगजेब** अपने भाईयों से मुगल राज सिंहासन को हस्तगत करने के लिए आगरा जाता है।

शिवाजी श्रीरंगवाड़ी के आश्रम में आध्यात्मिक गुरु **रामदास** से संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हैं। परंतु गुरु **रामदास** उन्हें कर्तव्य बोध कराकर स्वराज्य साधना का उपदेश देते हैं।

शिवाजी के स्वराज्य निर्माण में स्त्री की भी बड़ी भूमिका है। बीजापुर का सेनापति **अफजल खाँ** शिवाजी की हत्या करने की प्रतिज्ञा करता है। इसकी जानकारी होने पर **जीजाबाई** **शिवाजी** से **अफजल खाँ** को मार कर अपने बड़े भाई संभाजी की हत्या का बदला लेने का आदेश देती है। इतने में **शिवाजी** की पत्नी **सईबाई** बीमार होकर अंतिम सांस लेती है।

नाटक के द्वितीयांक में बीजापुर की बड़ी साहिबा, **अफजल खाँ** से **शिवाजी** को छल से मारने की सलाह देती है। तब वह अपनी पत्नियों को तालाब में डुबाकर हत्या करता है, क्योंकि वह निश्चय कर लेता है कि यदि वह मर जाएगा तो उसकी पत्नियाँ अकेली न रहें। इसके बाद वह अपने दूत **कृष्णाजी भास्कर** से **शिवाजी** से मिलने की तैयारियाँ करवाता है।

शिवाजी बीजापुर एवं मुगल शासकों एवं अंग्रेज एवं पुर्तगाली व्यापारियों से संधि करते हैं। **शाहजी भोंस्ले** अपनी दूसरी पत्नी एवं पुत्र **व्यंकोजी** के साथ आकर **शिवाजी** के प्रयत्नों की प्रशंसा करते हैं। परंतु उनके जीवित रहने तक बीजापुर पर आक्रमण न करने का वचन लेते हैं।

जहानारा अपने ही भाईयों की हत्याएँ करके सिंहासन पर अधिकार जमाने वाले **औरंगजेब** की निंदा करती है। **औरंगजेब** के आदेश से शिवाजी को बंदी बनाने आये उनके सेनापति शाइस्ता खाँ, शिवाजी के गढ़ों पर आक्रमण करते हुए, चाकन गढ़ के आक्रमण के लिए आकर 54 दिनों से अपना घेरा डालता है। दूसरी ओर मराठा सरदार **फिरंगाजी नरसाल** इसकी रक्षा में लगा रहता है।

नाटक के तृतीय अंक में पूना शहर के लालमहल में आराम से संगीत सुनने वाले **शाइस्ता खाँ** के पास

शिवाजी अपनी योजनानुसार अपने सैनिकों के साथ विवाह के बारातियों के वेश में जाकर दीवार खोदकर, **शाइस्ता खाँ** पर वार करते हैं। भागते हुए **शाइस्ता खाँ** का अंगूठा कट जाता है। इस आक्रमण में उसका पुत्र मर जाता है। इसके बाद **शिवाजी** मुगलों के अधीन रहे सूरत शहर को लूटते हैं। इससे क्रोधित **औरंगजेब, राजा जयसिंह** को **शिवाजी** पर कार्रवाई करने का आदेश देता है। रायगढ़ में **शिवाजी** अपने गुरु **रामदास** की पादुकाओं के नाम पर शासन करना चाहते हैं। वे राज्य को जनता की धरोहर बताकर शासन करने का उपदेश देते हैं। पुरंधर के पास वाले वज्रगढ़ के आक्रमण में विफल होकर **दिलेर खाँ** पुरंधर को जीतने तक पगड़ी न पहनने की प्रतिज्ञा करता है। **राजा जयसिंह** और **अफ़जल खाँ** के पुत्र **फजल मुहम्मद, शिवाजी** पर अपने प्रभाव को जमाने के लिए जंजीरा के सिद्दी, जावली के मोरे, पश्चिम किनारों के विदेशी, जवाहर एवं रामनगर के राजा तथा कर्नाटक के जमींदार और **शिवाजी** के सरदारों को भी लालच देकर अपने काबू में रखने का प्रयत्न करते हैं। राजा **जयसिंह, शिवाजी** को अपने पुत्र '**रामसिंह**' के समान बताते हुए उन्हें मुगलों के अधीन 12 मराठा गढ़ों को वापस करने का वचन देते हुए **औरंगजेब** से संधि करने, 13 वार्षिक किस्तों में 02 करोड़ रुपये मुगल कोश को देने एवं **औरंगजेब** से एक बार मिलने के लिए अपना प्रभाव डालता है। राजा जयसिंह की सैनिक शक्ति एवं उनके प्रभाव के आगे अपने सर झुकाने वाले **शिवाजी** उनसे अपनी स्वराज्य साधना का स्वप्न और महाराष्ट्र प्रांत तक ही सीमित रहने का दुःख प्रकट करते हैं। संधि न करने पर **जयसिंह** अपनी सेना के साथ **शिवाजी** के स्वप्न को भंग करने तक का विचार करता है।



आगरा के मुगल दरबार में अपने पुत्र **संभाजी** एवं कुछ मराठा सरदारों के साथ के मुगल दरबार में आये

शिवाजी, औरंगजेब को सलाम करके 1500 मोहरें एवं 6000 रुपये का नजर प्रदान करते हैं। "आओ **शिवाजी!** कहकर **औरंगजेब**, राजा **जयसिंह** के पुत्र **रामसिंह** से इशारा करता है। जिससे वह उन्हें राजा **जयसिंह** के अधीन पदाधिकारियों के पास ले जाता है। इससे अपमानित **शिवाजी**, राजा **जयसिंह** की निंदा करते हुए **रामसिंह** का छुरा लेकर आत्महत्या करना चाहते हैं। जिसे देखकर **औरंगजेब** की शहजादी जेबुन्निसा मूर्छित होती है। यहाँ **औरंगजेब** के आगे झुकनेवाला **शिवाजी** का सर **औरंगजेब** के प्रति श्रद्धा की अपेक्षा राजपूत के प्रति रहे विश्वास से झुका था। इसके बाद **शिवाजी** को बंदीगृह में रखा जाता है।

नाटक के चतुर्थांक में **औरंगजेब, शिवाजी** को मृत्युदंड देता है। बाद में उनकी बहन के कहने से उन्हें आजीवन बंदीगृह में रखने का दंड देता है। एक दिन **शिवाजी** अपनी योजनानुसार हर बुधवार की तरह मन्दिरों एवं मस्जिदों को दान एवं भिक्षुओं को मिठाई बाँटने के लिए भेजे जा रहे टोकरों में अपने पुत्र संभाजी के साथ बैठकर बंदीगृह से निकल पड़ते हैं। जिससे क्रोधित **औरंगजेब, रामसिंह** पर संदेह करते हुए अपनी सेना भेजकर **शिवाजी** को बंदी बनाकर ले आने का आदेश देता है। **जेबुन्निसा** अपने एकांगी प्रेम के कारण दुःखी होती है।

वापस लौटने के बाद **शिवाजी**, मुगलों के अधीन सिंहगढ़ को **तानाजी मालसूरे** के नेतृत्व में स्वाधीन करते हैं। इस कार्य में वीरगति को प्राप्त किये तानाजी की प्रशंसा में **शिवाजी** कहते हैं कि "गढ़ तो हमारे हाथ लगा है, किंतु हमारा सिंह सदा के लिए सो गया।"

नाटक के पंचम अंक में **शिवाजी**, जंजीरा पर आक्रमण करना चाहते हैं। परंतु जंजीरा के पक्ष में मुगल सेना आने पर **शिवाजी** मुगल शासन के अधीन रहे सूरत शहर को दोबारा लूटकर एवं सलहेरी गढ़ को भी अपने

अधीन करके अपना जवाब देते हैं। अंत में **औरंजेब, शिवाजी** की स्वतंत्रता को स्वीकार करता है।

ब्रह्मणोत्तम **गंगाभट** द्वारा हुए अपने राज्याभिषेक में **शिवाजी** राज्य को जनता जनार्धन की धरोहर के रूप में स्वीकार कर स्वधर्म, स्वदेश के स्वाभिमान की रक्षा करने एवं प्रजा की इच्छानुसार तत्क्षण राज्य वापस करने की



प्रतिज्ञा करते हैं। स्वराज्य साधना में बलिदान देने वाले योद्धाओं एवं साथियों की प्रशंसा करते हैं। आगे भी सांसारिक ऐश्वर्यों की अपेक्षा जन्मभूमि के प्रति कर्तव्य पालन की प्रतिज्ञा करते हैं। **बाजीप्रभु, तानाजी मालसुरे, बाजी पासलकर** एवं **प्रतापराव** के वंशजों को जागीर देते हैं। परंतु **येसाजी कंक** जागीर की अपेक्षा मातृभूमि की सेवा करना ही अपना कर्तव्य बताते हैं। **जीजाबाई** का आशीर्वाद लेते हैं। **जीजाबाई** उसी समय **प्रतापराव** की पुत्री का **राजाराम** के साथ विवाह निश्चय करवाती है।

रायगढ़ में अपनी अंतिमावस्था में **जीजाबाई** महाराष्ट्र की स्वतंत्रता देखने की इच्छा के लिए ही अपने पति के साथ सती न होने का कारण बताती है। बाद में अपनी माता **जीजाबाई** के देहान्त से **शिवाजी** अत्यंत दुःखी होते हैं। इस घटना के बाद तुलजापुर के भवानी मन्दिर में गुरु **रामदास** के सम्मुख राज्य का प्रबंधन एवं अधिकारों को बांटकर अष्टप्रधान मंडल (पेशवा, अमात्य, मंत्री, सचिव, सुमंत, सेनापति, पंडितराव एवं न्यायाधीश) की स्थापना करके **शिवाजी** स्वराज्य साधना से मुक्त होने का संकल्प बताते हैं। तब उनके मित्र **येसाजी कंक** दिवंगत माता **जीजाबाई** को दीन-दुःखियों में देखने की सलाह देते हैं। गुरु **रामदास** भी नेता के अभाव में प्रजा अबोध शिशु की तरह असहाय रहने की स्थिति बताकर स्वराज्य साधना को हिमालय तक पहुंचाकर देश को गुलामी की बेड़ियों से स्वतंत्र करने का आदेश देते हैं। जिससे **शिवाजी** मोह से मुक्त होकर स्वराज्य साधना के लिए तैयार होते हैं। शिवाजी भी माता भवानी की आरती करते हैं। नाटक यहाँ पर समाप्त होता है। इस प्रकार से **छत्रपति शिवाजी** की जीवनी को समझ सकते हैं।





शुभम आडवले

यह नारी सबसे भारी है

यह नारी सबसे भारी है
तेरी दुनिया ये आभारी है ।।

राधे बिना ना श्याम है
सीता बिना ना राम है
पवित्रता वो शुद्धता
वो त्याग को सलाम है
जहां देखूँ वहां है तू
समझ पूरा जहां है तू
दिनकर को भी सुलाती
वो सुहानी शाम तू ।।

स्वामिनी तू कामिनी
मंदाकिनी तू दामिनी
तू देवी हे मनमोहिनी
कल्याणकारी कल्याणी
सुलक्षणी तू शालिनी
सुहासिनी तू नालीनी
रागिनी तू नंदिनी
तू जिजाऊ तू पद्मिनी ।।

संवादों की निर्मिति की
भाषा भी तो नारी है
हर संकट को तोड़ सके
वह अभिलाषा भी नारी है
भीमा भामा गोदावरी
ये सप्तसिंधु भी नारी है
हम सबको जिसने गोद लिया
वह वसुंधरा भी नारी है ।।
यह नारी सबसे भारी है

तेरी दुनिया ये आभारी है ।।
इस देश की लड़कियों ने
अंतरिक्ष को छू लिया
कला-क्रीडा शिक्षा में भी
मर्दों को पीछे छोड़ दिया
अपनों के लिये खुद के
सपनों को त्याग देती है
आज किसी की तो पत्नी
इस देश की राष्ट्रपति है ।।

तुम ना भूलो सावित्री ने
सत्यवान का लाया प्राण
ना भूलो चित्तौड़ की रानी
पद्मिनी का वह स्वाभिमान
कल्पना ने कल्पना की
सीमा भी तो तानी थी
खूब लड़ी मर्दानी
वह झांसी वाली रानी थी ।।

जब जब बाधा आयी उसपे
तब तब हाहाकार हुआ
दुष्टता को नष्ट करने
यहां पर नर संहार हुआ
यही प्रतिज्ञा लेके आत्म
विश्वास की हुंकार भरो
दुष्ट प्रवृत्ति का तू
निर्भयता से घात करो ।।

यह नारी सबसे भारी है
तेरी दुनिया ये आभारी है ।।



चिकित्सा विज्ञान में शाखाओं की बढ़ती संख्या



अजय कुलकर्णी

सुबह से मेरे सिर में दर्द था और चक्कर भी आ रहे थे, सोचा चलो किसी चिकित्सक को दिखा देता हूँ। इस बड़े शहर में नया आया था। मोबाइल पर मेरे स्थान के निकट स्थित चिकित्सकों की सूची देखने लगा। बहुत बड़े-बड़े चिकित्सक थे, सामान्यतः हृदय, नेत्र, मधुमेह, यकृत, पेट, न्यूरो, हड्डी आदि के विशेषज्ञों के नाम सामने आये जो एम.डी., एम.एस. अथवा एम.बी.बी.एस. के पश्चात डिप्लोमा के साथ विशेषज्ञता प्राप्त किये हुए थे। परंतु, मुझे तो सर में दर्द था और चक्कर आ रहे थे, समझ में नहीं आ रहा था कि इनमें से मैं किससे संपर्क करूँ तो मेरा इलाज हो जायेगा। साथ ही यह डर भी था कि जिस विशेषज्ञ के पास जाऊँगा वह अपने दृष्टिकोण से देखेंगे और एक लंबा उपचार पथ आरंभ हो जाने की भी आशंका। यदि सर दर्द खोजता था तो सीधे इलाज आ जाता था। एक सामान्य चिकित्सक का भी नाम आया, जो मेरे स्थान से काफी दूरी पर थे। वहाँ जाता तो काम पर जाने में काफी देरी हो जाती। अंततः मेडिकल स्टोर पर जाकर सरदर्द की दवा ली और नाश्ता करने के पश्चात इसका सेवन किया। इस प्रकार अपने आपसे दवा लेना मुझे अच्छा नहीं लगा।

आज के दौर में चिकित्सा क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया है, इसमें इतनी शाखाएं खुल गई हैं कि व्यक्ति का ईलाज बहुत सुगम और सुचारु हो गया है। परंतु एक सामान्य व्यक्ति के लिए कई बार भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि किसी के पैर में काफी समय से दर्द है तो यह भ्रम हो सकता है कि उसे हड्डी रोग विशेषज्ञ के पास जाना चाहिए अथवा न्यूरो विशेषज्ञ के पास जाना चाहिए। क्योंकि दोनों ही स्थितियों में उसका इलाज तो आरंभ हो जाएगा। इसी प्रकार शर्करा

बढ़ने पर मधुमेह विशेषज्ञ के पास जाया जाय अथवा हार्मोन्स विशेषज्ञ के पास दोनों ही स्थितियों में रोगी को स्वीकार किया जाएगा लेकिन उपचार पथ अलग-अलग रहने की संभावना रहेगी और जब तक उसे दूसरी जगह जाने के लिए कहा जायगा, आर्थिक अथवा शारीरिक रूप से विलंब भी हो सकता है। इस प्रकार से कितनी शाखाएं हैं जहां भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है।

प्रायः यह भी देखा जा सकता है कि नवीन शाखाएं जो हाल ही में खुली हैं, उनके उपचार की निर्भरता काफी कुछ संगणक आधारित एवं रोबोटिक मशीनों पर है। परंतु इसमें आर्थिक बोझ को किस तरह कम किया जा सके इस पर विचार किया जाना अपेक्षित है। हालांकि इस प्रकार की स्थितियों को भारत सरकार की आयुष्यमान योजना ने काफी हद तक संभाला है।

इस बात पर विचार होना चाहिए कि क्या कुछ शाखाओं का सम्मिलन करके कुछ इस प्रकार हो सकता है कि कुछ स्थितियों में व्यक्ति की एक ही विशेषज्ञ के पास सारी जांचें एवं उसका उपचार संभव हो सके।

पुनः बायोमेडिकल सूचना विज्ञान नवीन चिकित्सा क्षेत्र में भविष्य का एक बहुत ही बड़ा और उपयोगी साबित होने वाला विज्ञान है। यह पारंपरिक वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ बिग डाटा, प्रतिक्रिया पैटर्न आदि पर आधारित चिकित्सा जांच एवं औषधि निर्माण की नवीन प्रक्रियाओं के अनुसंधान की ओर अग्रसर है। परंतु, इन प्रणालियों की जानकारी सामान्य आदमी तक कब तक और कैसे पहुंचेगी। इसके लिए सामानांतर रूप से विचार करना अत्यंत आवश्यक है। अन्यथा यह क्षेत्र भी कुछ स्थानों पर और कुछ लोगों तक सिमट के रह सकता है।



अंजलि जैन

मेटावर्स : इंटरनेट का भविष्य

सभी जानते हैं कि हम सब यूनिवर्स (ब्रह्मांड) में अपना जीवन जीते हैं जिसमें हर एक चीज़ को छू कर महसूस किया जा सकता है। लेकिन अगर ऐसा कहा जाए कि एक ऐसी नयी दुनिया हो सकती है, जिसमें अपने घर बैठे-बैठे हम दुनिया भर की सैर कर सकें, अपने दोस्तों के साथ ना होते हुए भी उनको गले लगा सकें तो इस पर कुछ महीनों पहले तक विश्वास करना मुश्किल था पर अब ऐसा नहीं है! क्योंकि अब तकनीकी गलियारों में मेटावर्स (Metaverse) को लेकर काफी चर्चा हो रही है। साथ ही, पिछले साल अक्टूबर में मेटा (फेसबुक) के सीईओ मार्क जुकरबर्ग ने कंपनी का नाम मेटा (Meta) रखा और कहा कि हम चाहते हैं कि दुनिया हमें मेटावर्स के नाम से जाने।

मेटावर्स भले ही आज अचानक से चर्चा में आया है लेकिन यह काफी पुराना शब्द है। 1992 में नील स्टीफेंसन ने अपने डायस्टोपियन उपन्यास "स्नो क्रैश" में इसका जिक्र किया था। स्टीफेंसन के उपन्यास में मेटावर्स का मतलब एक ऐसी दुनिया से था जिसमें लोग वीडियो में डिजिटल दुनिया वाले गैजेट जैसे हेडफोन और वर्चुल रियलिटी की मदद से आपस में जुड़ते हैं।

ब्रह्मांड में लोग शारीरिक रूप से उपस्थित हैं, लेकिन मेटावर्स (आभासी दुनिया) इससे बिल्कुल अलग है। मेटावर्स को एक ऐसी दुनिया के रूप में बनाया जा रहा है जिसमें आप ना होते हुए भी मौजूद रहते हैं और अपनी असल ज़िंदगी में किए जाने वाले कामों को कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, मेटावर्स में किसी गांव में बैठा छात्र दिल्ली के किसी स्कूल या कॉलेज में ठीक

उसी तरह क्लास ले सकता है जिस तरह से क्लासरूम में बैठकर लेता है। मेटावर्स में उन लोगों से भी बात करना संभव है, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। इसमें पहले उस शख्स की तस्वीर से उसका होलोग्राम तैयार किया जाएगा और फिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (artificial intelligence) की मदद से आप बात कर सकेंगे।

मेटावर्स का अनुभव आप वर्चुल रियलिटी हेडसेट और हाई-स्पीड इंटरनेट के बिना नहीं कर सकते। इसमें ऑगमेंटेड रियलिटी चश्मे, स्मार्टफोन और मोबाइल एप की जरूरत होती है। यदि कोई आपसे कहता है कि सिर्फ मोबाइल से आप मेटावर्स का अनुभव कर सकते हैं तो वह आपको गुमराह कर रहा है। आप मोबाइल से मेटावर्स के रिकॉर्डेड वीडियो तो देख सकते हैं, लेकिन मेटावर्स का अनुभव नहीं कर सकते। मेटावर्स में लोगों का होलोग्राम बनता है जो कि किसी का आभासी अवतार है।

मेटावर्स क्या है?

मेटावर्स एक ऐसी वैज्ञानिक खोज है जिसमें भौतिक दुनिया (Physical world) और आभासी दुनिया (virtual world) एक दूसरे से जुड़ जाएंगे और हम भौतिक दुनिया (Physical world) और आभासी दुनिया (virtual world) में जी सकते हैं। वैसे तो ये एक कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गयी दुनिया है लेकिन ये हुबहू असली दुनिया से भी ज्यादा सच्ची दिखाई पड़ती है।

मेटावर्स पूरी तरह से हाई-स्पीड इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ऑगमेंटेड रियलिटी, वर्चुअल

रियलिटी, मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर आधारित है। मेटावर्स भले ही एक आभासी दुनिया है लेकिन इसमें हार्डवेयर का इस्तेमाल बड़े स्तर पर होता है।

मार्क जुकरबर्ग ने मेटावर्स को एक वर्चुअल एनवायरमेंट (आभासी वातावरण) कहा है। वास्तविक दुनिया में आपको किसी जगह का भ्रमण करने के लिए उस जगह पर जाना पड़ता है, जिसमें आपको कई तरह की परेशानी होती है, लेकिन मेटावर्स में आप घर बैठे-बैठे अमेरिका या दुनिया के किसी भी कोने में जा सकते हैं। आप घर बैठे अंतरिक्ष में होने का भी अनुभव कर सकते हैं। मेटावर्स में हर एक चीज आभासी होती है। इसमें कुछ भी वास्तविक नहीं होता है।

मेटावर्स में हर किसी का 'अवतार' (Avatar) बनाया जाता है। अवतार का मतलब होता है असली लोगों का 3D प्रतिरूप (representation)। मेटावर्स में हम अपने हिसाब से अपने खुद के अवतार तैयार कर सकते हैं और किसी भी तरह के भौतिक विशेषताएं (physical characteristics) और व्यक्तित्व (personalities) को धारण कर सकते हैं, जिसके लिए 360 डिग्री स्कैनिंग की जाती है। इस प्लेटफॉर्म में सभी एक दूसरों के अवतार से ही बात करते हैं।

मेटावर्स पर कमाई कैसे करें?

जिस प्रकार वास्तविक दुनिया में मकान, प्लैट, गाड़ी आदि खरीदते हैं उसी प्रकार मेटावर्स में भी खरीद बिक्री संभव है। वहां भी रेस्टोरेंट्स, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, मार्केट, कार सर्विस, सैलून, फैशन से संबंधित सामग्री, स्कूल, कॉलेज आदि की उपलब्धता रहेगी और आप भी वहाँ अपनी रुचि के अनुसार सेवाएं दे सकते हैं तथा आवश्यकतानुसार सेवाएं ले सकते हैं।

किसी प्रकार की क्लास चाहे वह गार्डनिंग की हो, कार सर्विस की हो, व्यापार की हो या अन्य शिक्षा से

संबंधित हो इन सभी में आपको भुगतान करना होगा और सेवाएं देने वाला आपके माध्यम से कमाई कर सकेगा। उन सभी सेवाओं का एक निश्चित मूल्य होगा जिसका भुगतान क्रिप्टो करेंसी में किया जाएगा। भविष्य में वर्चुअल रूप से प्राप्त क्रिप्टो करेंसी को बैंक में भी वास्तविक रूप से प्राप्त किया जा सकेगा।

मेटावर्स के फायदे?

- मेटावर्स में अपने मित्रों परिवार सगे-संबंधी या समाज के साथ एक ही अवसर पर मिल सकते हैं, उनके साथ घर बैठे उस दुनिया का आनंद ले सकते हैं, जहां आप काफी दिनों से जाने का प्लान बना रहे हैं, किंतु पैसे या समय के कारण नहीं जा पा रहे हैं।
- बिना स्कूल गए आप घर में बैठे-बैठे स्कूल के मित्रों से, शिक्षक से बातचीत कर सकते हैं। पढ़ाई से संबंधित चर्चा कर सकते हैं, किसी मीटिंग को कर सकते हैं वह भी वर्चुअल और वास्तविकता के समावेश के साथ।
- इन तकनीक से पैसे समय तथा शारीरिक थकान आदि से बचा जा सकता है।
- अगर आप विदेश में बैठे हुए अपने मित्र या परिवार से मिलना चाहते हैं तो आप तत्काल नहीं मिल सकते, या तो आप फोन, वीडियो इंटरनेट आदि के माध्यम से मिल सकते हैं, किंतु वास्तविक अनुभव नहीं कर सकते।



- आप बिना समय गवाएं बिना पैसा खर्च किए एक ही क्षण में आप अपने मित्र परिवार या अन्य किसी से मिल सकते हैं और उससे हाथ मिला सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं, खेल सकते हैं वह भी कम समय में इससे जहां हमारे पर्यावरण, धन, संसाधन आदि की बचत होगी वहीं व्यक्ति की सामाजिक दूरी भी घटेगी।
- इस दुनिया में वास्तविक दुनिया के मुकाबले अपराध की दर कम होगी।
- यहां ब्लॉकचेन पर आधारित कार्य होता है तो यह सबसे सुरक्षित स्थान माना जा सकता है कि यहां धोखाधड़ी की संभावना ना के बराबर होगी।

प्रसिद्ध मेटावर्स कौन-कौन से हैं?

वैसे तो मेटावर्स के कई सारे प्लेटफॉर्म हैं जिसमें डिसेंटर्ड लैंड (Decentered Land) प्रसिद्ध है। इसके बाद सबसे बड़ा मेटावर्स फेसबुक का होराइज़न वर्ल्ड (Horizon World) फेमस है। फेसबुक इस दिशा में

बहुत दूर की सोच रखता है, इसी कारण उसने अपने सभी उत्पाद का नाम meta रख लिया है चाहे वह फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप हो।

मेटावर्स से संबंधित भारत में कानून

जहां पूरा विश्व क्रिप्टोकॉरेसी में भविष्य की तलाश कर रहा है वहीं भारत जैसे उभरते हुए राष्ट्र के लिए क्रिप्टोकॉरेसी और उसमें प्रयोग होने वाली तकनीक चुनौती का विषय है। यहां की जनता में तकनीक से संबंधित साक्षरता बहुत कम है, जिसके कारण धोखाधड़ी और पैसों के नुकसान को कम करना गंभीर विषय है।

क्रिप्टोकॉरेसी ब्लॉकचेन पर आधारित कार्य करती है, ठीक उसी प्रकार मेटावर्स भी ब्लॉक चैन आधारित प्रणाली है, जिसको हैक करना या उसमें किसी प्रकार का नुकसान कर पाना संभव नहीं है। किंतु, इस प्रकार की तकनीक को वैध घोषित करना एक चुनौती का विषय है। फिलहाल भारत में भी इस तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।



राह दिखाएँ खुद को



शिवनाथ कुमार

तमस में घिरते
व्याकुल मन को
देख रहीं
अदृश्य निगाहें (मन की)
दीपक लेकर चलता कोई
पर नहीं खुलती हैं
बंद निगाहें

सृजन और विध्वंस
के मध्य
दो पाटों में पिसता मन
मन की व्याकुलता
बाँध न पाया
धरा की अपनी सीमाएँ

निज मन में ही
शक्ति अकूत
बाँध सके जो खुद को
घोर तमस में दीप जलाएँ
राह दिखाएँ खुद को



ना कोई राह आसान चाहिए,
ना ही हमें कोई पहचान चाहिए,
एक ही चीज मांगते हैं रोज भगवान से,
अपनों के चेहरे पे हर पल, प्यारी सी मुस्कान चाहिए...!!!





सत्यमेव जयते

इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली